ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

जून 2021, वर्ष 5, अंक 3

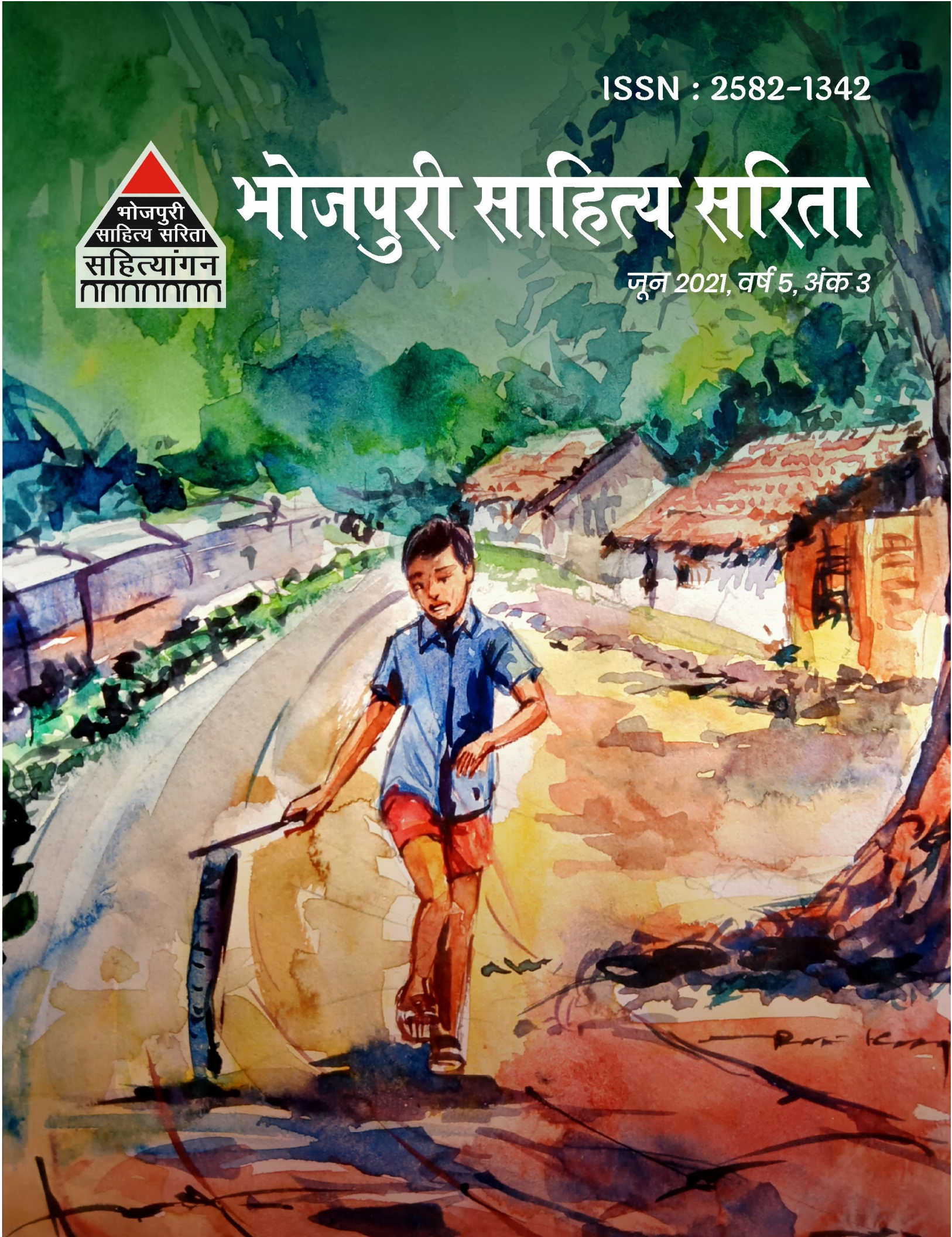

विशेष आभार

अशोक श्रीवास्तव

(संरक्षक – भोजपुरी साहित्य सरिता)

डायरेक्टर	—	अशोक श्रीवास्तव एसोसिएट्स प्रा०लि०
अध्यक्ष	—	पूर्वांचल भोजपुरी महासभा
वरिष्ठ उपाध्यक्ष	—	अखिल भारतीय कायस्थ महासभा
मुख्य सम्पादक	—	अशोक प्रहरी
प्रेरक	—	पूर्वांचल-बिहार राजनीतिक मंच
संस्थापक	—	आर०डी०मेमोरियल पब्लिक स्कूल
संरक्षक	—	सुभाष युवा मोर्चा
अध्यक्ष	—	विश्व भोजपुरी सम्मलेन (गा०इकाई)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	—	सुभाषवादी भारतीय समाजवादी पार्टी
संरक्षक	—	लेबर लॉ एडवाइजर एसोसिएसन उ० प्र०
संस्थापक	—	पूर्वांचल सेना
कारपोरेट कार्यालय	—	552-ए, मेन रोड घूकना, पार्वती धर्मशाला के पास, मेरठ रोड, गाजियाबाद मो०-9811102743

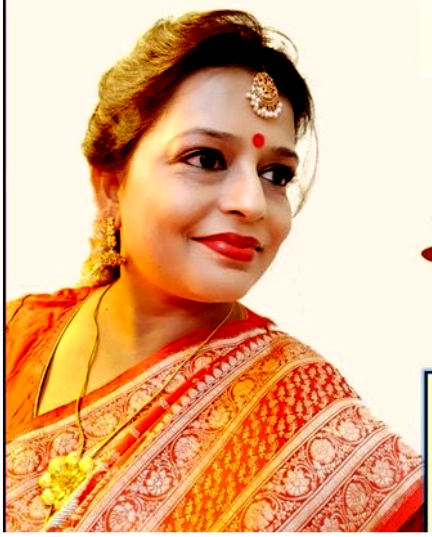

विशेष आभार

अनामिका वर्मा

(संरक्षक, भोजपुरी साहित्य सरिता)

लोक गायिका
संकलनकर्ता, कोहबर काव्य
संचालिका, सुर सखी

: आजीवन सदस्य :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद)

जलज कुमार अनुपम (बेतिया)

अंकुश्री (राँची)

सुजीत तिवारी (ग़ाज़ियाबाद)

कृष्ण कुमार (आरा)

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)

सरिता सिंह जौनपुर

कनक किशोर (राँची)

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा, अकोला

उपाध्यक्ष महाराष्ट्र प्रदेश, भाजपा (उत्तर भारतीय मोर्चा)

अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)

अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ सम्पादक

जे. पी. द्विवेदी (गाजियाबाद)

कार्यकारी सम्पादक

डॉ. सुमन सिंह (वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सुनील सिन्हा (गाजियाबाद),

डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद), कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी – एडिटिंग – कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छाया चित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: प्रतिनिधि :

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर), डॉ. हरेश्वर राय (सतना), अशोक कुमार तिवारी (बलिया), राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार), गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार) डी के सिंह (पटना)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002

PH: 9999614657 Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com

Web: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका मेंछपल कवनो सामग्री खातिर संपादक उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन आउर फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

केशव मोहन पाण्डेय / 5

धरोहर

राम जियावान दास 'बावला' / 6

• आलेख/ शोध-लेख/निबंध

बिरह से जिरह में– डॉ. बलभद्र / 7–8
नाम ते पावहिं लोग– मार्कण्डेय शारदेय / 18–19
भोजपुरी भाषा के मानकीकरण के व्यावहारिक आधार– डॉ. जयकान्त सिंह 'जय' / 20–22
भोजपुर में गाँधी के अइला के सै बरीस– शशि रंजन मिश्र / 23
ओटीटी पर काहें भोजपुरी के नामोनिशान नइखे– मनोज भावुक / 34–35

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

बरहुआँ के ब्रहमेश्वर नाथ मंदिर– हीरालाल द्विवेदी 'लाल' / 10–12
मजबूरी– विनीता मिश्रा / 13
नेव– तारकेश्वर राय 'तारक' / 13
का मरदे, का हाल बा– जियाउल हक / 14
रामधन– डॉ. रजनी रंजन / 30–31
पवित्तर लहर– केशव मोहन पाण्डेय / 32–33
मई में माई चल गइल– डॉ. सुनील कुमार पाठक / 42–43

• कविता/गीत/गजल

वासकसज्जा– सुभाष पाण्डेय / 8
किशोर के कवित्त– कनक किशोर / 9
गजल– नूरैन अंसारी / 9
गीत– डी. के. सिंह / 14
कोरोना– अशोक मिश्र / 15

• कविता/गीत/गजल

गँउवा के इयाद– प्रिया पाण्डेय 'रोशनी' / 15
हियरा के भूख– कुमार जीवन सिंह / 15
मुसीबत से मुक्ति– विकास मिश्र / 16
केकरे खातिर– विनोद पाण्डेय / 16
तू सोना उपजाव– मनकामना शुक्ल 'पथिक' / 17
गीत– बिम्मी कुँवर सिंह / 17
रोटी– प्रतीक त्रिपाठी / 27
गीत– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 27
गजल– राजेश कुमार 'जैसवारा' / 27
लागल लड़िका के बजार– राम बचन यादव / 28
गजल– शिव कुमार पराग / 28
कउनो नेवता ना आइल बा– सन्नी भारद्वाज / 29
नदिया भेदवा खोलत बा– डॉ. हरेश्वर राय / 31
आजु खोजै तोहके– योगेन्द्र शर्मा 'योगी' / 35
बा भोर सकाइल ए लोगे– हरेराम त्रिपाठी 'चेतन' / 44
अबो चेत करऽ– सत्य प्रकाश शुक्ल / 46

• अनूदित साहित्य

चाणक्य नीति– दिनेश पाण्डेय / 24
शिखरन से आगे– अशोक लव / 25–26
मन के राग– डॉ. उमेश प्रसाद सिंह / 36–37
उपकोशा– दिनेश पाण्डेय / 38–41

• असि गंग के तीर

दम–बेदम– डॉ. सुमन सिंह / 45–46

• एह अंक के चित्रकार : पंकज कुमार शर्मा / 44

श्री गुरु चरण सरोज रज

विद्वान लोग कहले बा कि सत् साहित्य शीलवान बनावेला। अगर राउर भाषा शिष्ट नइखे त रउआ के कतई साहित्यकार भा शिष्ट साहित्यकार नइखे मानल जा सकत। रउआ अगर साहित्य के सेवक बानी त रउआ दंभी नइखीं हो सकत। सेवक दंभी ना होला।

पढ़ला–सुनला से सबके ई ज्ञात बा कि साहित्यो गोल–गोलबंदी से कबो अछूता नइखे रहल। हर काल–खंड में विचार आ विचारधारा में मतभेद रहल बा। हर काल–खंड में साहित्यो के नकारात्मक आ सकारात्मक पक्ष मानल गइल बा। कलम के पुजारी लोग हर काल–खंड में आपन–आपन डफली बजवले बा। आपन–आपन राग गवले बा। ओह बजवला–गवला के क्रम में अनेक साहित्यकार अपना के भाषा–साहित्य के ध्वज–वाहक कम, ध्वजा ढेर बुझले बा। एह बुझउवल में अनेक साहित्यकार लोग के दंभो उभरल बा। दर्पो बहल बा।

दंभ के दावानल केहू के चैन से नइखे रहे दिहले। संस्कृति–के–संस्कृति, जुग–के–जुग, देश–के–देश एह दंभ के दावानल में झोंका गइल बा। रावण, भस्मासुर, वृत्तासुर आदि के अनगिनत उदाहरण बा। साहित्य के सहन में बइठ के कहल जाव त दंभ के दर्प में अगर केहू अँइठेला त पक्का बा कि ऊ ईनार में के बेंग बा। साहित्य के आत्मा में 'सहित' के भाव होला। एह भाव के जे भुला गइल, ऊ सबके घावे दी। अपना कमी के छुपावे खातिर दोसरे के अँगुरी देखाई। तब ऊ भुला जाला कि अँगुरी देखवला से कोंहड़ा के बतिया मरे ला, साहित्य के जमीन पर ठाढ़ कवनो चट्टान ना ढहेला। चट्टान जब कबो ढहबो करेला त धरतियो थरथरा जाली। भूकंप आ जाला।

मन से जिअतार कलमकार कबो बान्हा ना मानेला। ओकर सुभाव त नदी के बहत पानी जस होला। रउआ जेतना चाहे अड़ंगा लगाईं, चाहे जेतना बान्हा बान्हीं, ऊ अपना तेज धार से बान्हा तुरबे करी। तुरला के सथवे ओकरा धार में करेंटो आ जाई, ओह धार के गतियो अउरी तेज हो जाई। धनपत राय बन्हइहन त एगो कथा–सम्राट प्रेमचंद के उदय होखबे करी। त अगर रउआ मन में केहू के लेके कवनो दुर्भावना बा त आपन मन साफ करीं। ओकरा साहित्य–गंगा में डुबकी लगा के मन भर नहाईं। कवनो माया में भरमला के गरज नइखे। माया के भरम से मुक्त तुलसीदास जी जइसन हर घर में पूजित साहित्यकार ले दयालु रघुनाथजी के कृपा पावे खातिर बेर–बेर प्रार्थना कइले बानी। फल लगला पर पेड़ के डढ़ियो त नेइए जाले, त हमा–सुमा में कइसन दंभ!

कोरोना के अइसन बिपतो के बाद यदि मनई में दंभ बचि गइल बा त ई विधाता के बलिहारी बा। प्रभु के प्रताप बा आ समय के साथे सचेत हो के राउर अपना के बचावे के जुगत बा। बाकिर खाली अपने फेरा में रहल त पशु के वृत्ति ह, मानुष–मन त लोक आ परलोको खातिर आपन आगा–पीछा बनावेला। रहलो पर आ गइला के बादो खातिर। परहित के तबे नू सबसे बड़का धरम बतावल गइल बा!

'भोजपुरी साहित्य सरिता' के एह अंक में कुछ नवांकुरो लोग के रचना बा। साहित्य के इतिहासो में देखल गइल बा कि कुछ लोग नवकन के किनारे टार देला, बाकिर ढेर लोग सँइहारे वाला मिलल बा। हर हाल आ काल में ओह सँइहरला के वृत्ति वाला मनस्वी लोग हर जुग में श्रद्धा के पात्र रहल बा, हर जुग में पुजाइल बा। अइसन अपना से छोट पर नेह लुटावे वाला लोग के हम दसोनोह जोड़ के बेर–बेर प्रणाम कर बानी। ओह सब के चरण–रज माथे लगावत बानी।

केशव मोहन पाण्डेय

साहित्य संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

हमार जोगिया

डिम–डिम डमरू बजावेला हमार जोगिया।।

गरवा सोहै मुन्ड माला, अंग में लपटे नाग काला।
छाला शेर के बिछावेला हमार जोगिया।
डिम–डिम डमरू बजावेला हमार जोगिया।।

नाचेऽ भूत–परेत के संग, सदा रहेला अड़बंग।
भंग–धतूरा चबांवेला हमार जोगिया।
डिम–डिम डमरू बजावेला हमार जोगिया।।

बूढ़ऽ बैला पर सवार, चन्दा सोहे ला लिलार।
धार गंगा क बहावेला हमार जोगिया।
डिम–डिम डमरू बजावेला हमार जोगिया।।

अइसन बावला न कोई, जइसन शम्भु मोरा होई।
जोई माँगै सोई लुटावेला हमार जोगिया।
डिम–डिम डमरू बजावेला हमार जोगिया।।

❑❑

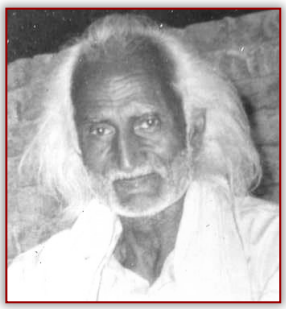

रामजियावन दास 'बावला'

जन्म : 1 जून 1922

मृत्यु : 1 मई 2012

जन्म–स्थान
भीखमपुर चकिया, चंदौली (उ. प्र.)

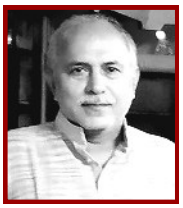

बिरह से जिरह में

डॉ. बलभद्र

''तोर मन बसे कि ना रे सँवरका
मोर मन बसेला तोरा में
चाहे मराइब चाहे कटाइब
चाहे कसाइब बोरा में।''

अपना गाँव के लइकिन से सुनलीं ई गीत। अपना गोल में गावत रही स। मानवीय उद्दंडता के चरम विस्फोट एह में देखल जा सकेला। 'स्त्री विमर्श' आज जवन चरचा में बा, ऊ हमरा जाने एह तरह के गीतन प चरचा के बिना एगो साहित्यिक अधूरापन से ना उबर पाई। एह लइकिन के पासे कवनो तरह के कलाबाजी नइखे, कवनो माइक-मीडिया नइखे। बस गीत बा आ गावे-बजावे के कुछ खास-खास अवसर बा जवन कि अब, 'अब ओराइल कि तब ओराइल' जइसन पोजीसन से गुजर रहल बा। बाकी देखल जा सकेला कि एहिजा के गीतन में निरंतर बदलत एगो मन बा, बदलाव के अपना लेखा बेचौनी बा। ई लइकी पढ़ल-लिखल बहुते कम बाड़ी स। एहिजा ना कायदा से बिजली बा, ना दुनिया भ के टीवी चौनल बा, ना अखबार ना पत्रिका बा। बाकी अपना समय में, देश-दुनिया के बीच जवन बहस बा जीवन के पक्ष में, ओह में अपना के शरीक करत आपन पक्ष अपना तरह से पेश करत बाड़ी स। गवलके के पत बे गा के।

जिनगी एगो अवसर ह, खूबसूरत अवसर। तमाम तरह के जोखिम उठा के जिए के जिद आ फैसला एह में सुनात बा। मरद साइलेंट बाड़न, उनकर बहक आ बोली सब साइलेंट बा। बोलत बाड़ी स लइकी, बोलता बाड़ी स। अपना गीत में संस्कार के देहरी पार क के बतियावत बाड़ी स। एकनी खातिर कोइल, काग, सावन, फागुन, विरह-विलाप एह दौर में आके पीछे छूट गइल बा। बात अब एह से आगे बढ़ गइल बा।

बाकी कुछ हरानी होत बा भोजपुरी के कुछ कवि आ कहानीकार लोग के पढ़ के कि ऊ लोग आज ले कोइल-काग आ हाय-हूक के ओही राग के अलापत जा रहल बा। मेहरारू ओह लोग के नजर में बस विरह में बाड़ी स आज ले, जिरह के कवनो पोजीसन में नइखी स आइल। कुछ महिलो लेखक लोग बा जे संस्कार के देहरी पार कइल नारी के अपमान मान रहल बा। दू डेग आगे आ दस डेग पाछे, इहे एह लोग के दशा बा। विचार के लोकतंत्रीकरण के बजाय ओकर संकोचीकरण में एह लोग के अहम जादे तुष्ट होला।

बात जब चलल त एगो अउर गीत के चरचा हम कइल चाहब। ऊ गीत हम गाजीपुर के बवाड़े गाँव में एगो बिआह के मोका प सुनलें रहीं। गीत के लाइन ह –

''बेटी सिपुली-मउनिया जनि खेले
दमाद अइहें ले भगिहें।''

...गावत बाड़ी स लइकी-मेहरारू, आन(दोसर) केहू के बात ना, आपन बात। आन के जिनगी के ना, आपने जिनगी के। जब गावत बाड़ी स त देखे के बात बा कि दमाद आने कि मरद के कवना रूप के सोझा करत बाड़ी स। एगो लुटेरा रूप के। लुटेरा लुटाए वाला के मन के कवनो परवाह ना करेला। एह में लुटेरा दमाद बाड़न आ लूट के ले जात बाड़न सिपुली-मउनी। सिपुली-मउनी माने ओकर खेल, खुशी, सहजता, चंचलता, बचपन आ एह सब के बीचे सहजे आकार लेत ओकर समूचा विकास आ विस्तार। आ सदा-सदा खातिर छूट जात बिया ऊ लइकी- एह सबसे अलग होके। एह गीत में बार-बार एगो 'बरिज' (वर्जना) गूँज रहल बा- 'जनि खेले।' लूट रहल बा मरद- चेता रहल बा- बरिज रहल बा मरद, लुटा रहल बाड़ी लइकी। अजबे बा ई माया। एह में बाल-बिआहो के गंध बा।

करुणा एह गीतन के ताकत ह। आ इहो अखेयान करे जोग बा कि ई करुणा थहरा-थसका ना देला, लोर झरझरा देला। गति के इहो एगो रूप ह। ई लोरवो सबसे बेसी मेहरारुअने के लगे बा। मरद लोग एह गीतन के बारे में कहेला कि गवाला त घर-आँगन सोभेला। ई दृष्टि पुरुष-दृष्टि ह। जइसे मेहरारू एह लोग खातिर शोभा के चीज हई, असहीं एह लोग के गीतवो, गवलको-बजवलको।

मुखियाइन काकी एगो गीत सुनवली। माई, बुचिया माई आ अउर एक-दू जानी रहली। गीत शुरू भइल, कुछ आगे गइल त एह लोग के आँख भींज गइल। बोली ठीक से ना निकलल। बाकी देखलीं कि मुखियाइन काकी एह प्रभाव से अछूता रहली। का वजह! त बुझाइल कि गीत गावे के जिमवारी उनका प रहे आ एह के चलते ऊ अछूता रही। छुआ जइती त अउर लोग के भींजल आँख आ भरभराइल कंठ ना लउकित। ओह गीत के कुछ लाइन-

''काँचहिं निनिया बाबा बिदइया कइलें हो
नदी-नाला मोर निनिया टूटल हो
रोई-रोई पूछेली कवन धिया हो
कई कोसे हमार अम्मा छूटली हो
कई कैसे हमार बाबा छूटलें हो।''

पहिल बात ई कि मेहरारू-समाज मरद-समाज से जादे मयगर, जादे संवेदनशील बा। जवने बाबा बेटी के काँचे नीन में बिदाई करेलें, नीन टुटला प बेटी ओही बाबा के इयाद करेले। उनका से बिछुड़ला के दुख गावेले। अपना घर-परिवार, गाँव-गली आ रिश्ता-नाता से सघन जुड़ाव के चलते उपजेला अइसन बिछोह। दोसर बात कि काँच नीन के मतलब काँच उमिर से बा, काँच अनुभव से। एगो सोझ बात लउकत बा कि भोर में, एकदम अनगुताहे बेटी के बिदाई हो जाला। भोर वाला समय नीन खातिर बहुते संवेदनशील समय ह। बहुत झोंकह नीन लागेला। आ बचपनो जीवन के बहुते नाजुक आ

आ संवेदनशील अवस्था ह। एही समय में बेटी बिदा हो जाली। बिआह के समय दिन–रात के बिधि–बिधान के कारन थकान होइये जाला आ बेटी के आँख भोर में एही के चलते नीना जाता। नीन अबे पूरा नइखे भइल, बालपन के अल्हड़पन अबे गइल ना कि बेटी बिदा। डोली ले चल देलस कहाँर। कुछ दूर गइला प बेटी के नीन टूटल। राह में नदी–नाला परल, कहाँर जब फनलें स त झटका लागल आ नीन टूटल। नदी–नाला ना परित त ना झटका लागित आ ना नीन टूटित आ ना एह गीत के जगह बनित आ ना बेटी सवाल करित। एहिजा स्त्री–जीवन के कल्पनाशीलता के दाद देवे के परी। बेटी जतने भरल भाव से सवाल करत बाड़ी दुलहा अतने बेलाग, निठुर मुँहे जबाब देत बाड़न। बेटी के सवाल साहित्य में बा, दुलहा के जबाब गणित में। एकदम कलकुलेटेड –

''अस्सी कोसे तहार अम्मा छुटली
चउरासी कोसे तहार बाबा छुटलें हो।''

सवाल आ जबाब के तर्ज में भी कुछ अंतर बा। बेटी दू साँस में पूछत बिया आ बर एके साँस में जबाब देत बा। ई देखे –बिचारे के बात बा। बेटी खातिर हर रिश्ता के एगो आपन–आपन सन्दर्भ बा, ओकरा साथे अपना–अपना तरह के जुड़ाव बा। दुलहा खातिर एह तरह के रिश्ता बस बोल देवे भर के मतलब रा खेला। उचारे भर। इहाँ बात इहो बा कि जगले प सवाल के जगह बनेला आ हालात अकसर जगावे के काम करेला। एह गीत में नीन बइठला के चलते नइखे आइल, गति में रहला के चलते आइल बा आ टूटतो बा त एगो गतिए में, तब जब एगो झटका लागत बा। आ टूटत बा त अबोध सवालन के झड़ी लाग जात बा। दुःख से बेसी ई एगो प्रतिक्रियो ह विस्थापन प।

लइकिन के मन के भीतर बहुत कुछ बा अइसन जवना के लेके कहल जा सकेला कि ऊ ऊपर–ऊपर से बेसी भीतर –भीतर होली। ओहनी के भीतर मुक्त एगो मन बसेला, मुक्ति ओहनियो के एगो आपन जरूरत ह। प्रेम एहिजा सातो सुर में लहर मारेला। सातो सुर में लहरत ऊ प्रेम ह जेकरा चलते बेटी जोगी के सूरत प ना, ओकर बंसी के धुन प मोहित हो जाले। बेटी अपना मतारी से बंसी बजावत एगो जोगी के संगे जाए के बात कहत बिया। ऊ संगीत के संगे बिया। संगीत जवन मानव–मन के मुक्ति के ओर ले जाला। मुक्ति मतलब मोक्ष ना, आजादी। अपना आत्मा के ताल–सुर सुनल–

''आग लेबे गइलीं सिरिस तर माई
जोगिया बजावे उहाँ बंसी सुनु माई
जोगिया के बंसिया सोहावन लागे माई
अस मन करे हम जोगिए संगे जाईं।''

बेटी के एहिजा मन लउकत बा। ओकर पसन। ऊ चतुरो–चल्हाँक बिया। ओकर चतुराइयो लउक जाला। ऊ जतने निर्दन्द बिया, मतारी अतने दंद में। मतारी समाज के मुँह देखत बिया, मान–मरजाद। ऊ बेटी से मतारी बन गइल बाड़ी। व्यवस्था उनका में आ ऊ व्यवस्था में रच–बस गइल बा। बेटी आ मतारी के बीचे बतकही चलत बा आ एह दूनो लोग के बीच के फरक लउक जाता। बेटी के जवन तर्क बा तवन ना खाली मतारी के बलुक सभे के चउँका देत बा।

लइकी बंसी के मधुर धुन छेड़ेवाला जोगी के पसन करेले। रहल चाहेले अपना बचपन के संगे। अपना मन के लगे। ई सब छुटेला त ओकरा दुःख होला। आपन दुःख गावे के समझ ओकर आपन समझ ह। ओकरा पासे सवाल बा, जबाबो कम नइखे। जतने ऊ बान्ह में बिया, ओतने आजाद। जतने चैन में, ओतने बेचैन। बिरह के संगे–संगे जिरह के पोजीसन में। ❑❑

❍ गिरीडीह कालेज, गिरीडीह (झारखंड)

वाशकसज्जा

संगीत सुभाष

हुलस अंगना
नूतन नेह, पसरल गेह
खनक कंगना।

गदगद गात सुहावन सिहरन
उमगल चाल अपार पुलक मन
आपन आन, एक समान
हरख नयना।

चान लुटावत जोती निरमल
निरखत नखत गगन से अविकल
मुखड़ा गोर, नित चितचोर
रटत रटना।

दीप जरा चितवे अपलक पथ
मिलन आस पिय के सुधि में रत
आहट जानि, घूंघट तानि
निरख सजना।

❍ *प्रधान सम्पादक, सिरिजन, भोजपुरी पत्रिका*

किशोर के कवित

कनक किशोर

हमरो चाहीं

कमरा ओढ़ि घीव
मत पीय,
राजा हो
हमरो चाहीं।

लूट

लूट के छूट
अब ना मिली,
हमरो हिस्सा बा
हमरो चाहीं।

जग जाहिर

छुपल नइखे
करतूत तोहार
जग जाहिर
तनी त लजा।

भाभी

भऊजी हो गइली
भाभी
ना ऊ अब चउल
ना छेड़खानी,
प्रेम के बात छोड़ी
अलगा खाय पानी।

आस्था

आस्था
अपने पर ना रहल
तोहरा पर
का करीं।

देवता

नीक होइहें देवता
त करीहें कबूल,
खोजब आम हम
भले रोपब बबूल।

राजनीति

नीति
राज के
कुर्सी खातिर,
नैतिकता के
कवन काम।

शपथ

शपथ
गीता कुरान के
खाइला झूठे,
सांच बिला गइल
सब केहू झूठे।

बाजारवाद

चौबीस कैरेट
हॉल मार्क छाप
रिश्ता आज कहँवा ?
बाजार में
भूला गइल
खून के रिश्ता,
बाजार बनल
दुनिया।

रोटी आ बेटी

बेटा के असरे
रोटी मोहाल,
घर छोड़ी बेटी
आवले पास,
रोवत कहत बिया
पेट में जनि मार
देखे द आकाश।

❑❑

❍ राँची (झारखंड)

गज़ल

नूरैन अंसारी

कहाँ केहु जियरा के पास रहता।
सब केहु अपने में बेसाँस रहता।

उठ गइल जब से देवाल अँगना में,
पुरनका पीपल बड़ा उदास रहता।

कहे के सब केहु अपने बा बाकिर,
मन में नेह–छोह के बनवास रहता।

अरे मउरायें के नइखे कौनो मुहूरत,
ख़ाली हँसे, ख़ातिर खरवास रहता।

ऊपर से आदमी हो जाता पबितर,
हृदय मे वईसे ही कनजास रहता।

नूरैन कुछु ना मिलल समुंदर के कगरी,
पा भर पानी के अभिनो तलाश रहता।

❑❑

❍ नवका सेमरा, सेमरा बाजार, गोपालगंज (बिहार)

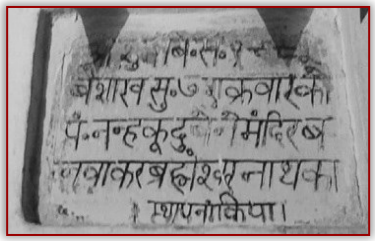

बरहुआँ के श्री ब्रह्मेश्वरनाथ मंदिर

हीरालाल द्विवेदी 'लाल'

संसार मे अइसन कमे लोग होले, जेकरा हाथे नीमन काम होला, जवना से कीर्ति बढ़ेले। ईनार, पोखरा, मंदिर, ईस्कूलन के बनवावल सभे के कल्यान खातिर होला। भगवान जेकरा हाथे ई सब करावल चाहेलन, उहे अइसन कुल्हि काम करे खाति अगराला। ओकरा जिनगी में ख्याति त मिलबे करेले, ओकर लोक आउर परलोको सँवर जाला। धन–दउलत त ढेर लोगन के लग्गे होला, बाकिर अइसन कुल्हि कामन खातिर भुलाइयो के ना सोंच पावेला।

उत्तर–प्रदेश के चंदौली जिला मे एगो चकिया तहसील बा। सुरम्य वनस्थली जहाँ प्रकृतिं मनोरम छटा बिखेर रहल बा, अइसने सुघर उपत्यका में गाँव बरहुआँ जवने क नाम ब्रह्मपुर बाटे, बसल ह। चकिया से इलिया तक पक्की सड़क बनल बा, जवन बिहार तक गइल बा, चकिया से पूरब 4 कि0मी0 दूर पर लबे रोड पर ई गाँव पड़ेला। इहाँ से रचिके दूर कर्मनासा नदी पर लतीफशाह बान्ह बनल बाटे, जवना से नहर क जाल बिछल बा। इहाँ के धरती शस्य स्यामला बाटे। कर्मनासा नदी एही क्षेत्र से बहत आगे जाले, जवने से लाख–लाख आबादी क भरण पोषण हो रहल बा, एसे एकर पौराणिक नाम कुकर्मनासा बाटे। गाँव का दखिन में गोलवा अउर देवरी पहाड़ खड़ा बा, जवन विंध्य पर्वत सृंखला के भाग हवे। इहाँ हमनी क पुरखा पुरनिया पवनी परजुनियाँ का संगे कांतिथ मिर्जापुर जहवाँ परवा गॉव बाटे उहवें से आके बसलन, एही से हमनी के परवा दूबे कहल जाला। बरहुआँ गाँव में सरयुपारीय कश्यप गोत्रीय दुबे लोग बसल बा। एही कुल में श्रीमान बद्री दूबे भइलन, उनका पुत्र श्री रामसकल दूबे क दुइगो संतान रहलें। जेठरा श्री नन्हकू दूबे, लहुरा श्री पुरुषोत्तम दूबे। जेठरा पुत्र बचपन से साधु स्वभाव वाला, पूजा पाठ में विशेष रुचि रखे वाला रहलें। आपन बिआह ना कइलें। आजु से 85 बरीस पहिला दूनों भाई लोगन के मन में एगो मंदिर बनवावे के भाव जागल। ई भाव जब जागल त दूनों भाई लो नवहा रहे। बाकि अपना कुल–परिवार के मान–सनमान खातिर हुलास से भरल रहे। मंदिर बनवावे के जग ठानल आ मन–प्रान लगा के पूरा कइलस। जवना बरीस में श्री ब्रह्मेश्वरनाथ मंदिर क निर्माण आ पंच देवन क स्थापना भइल, उ साल रहे 1928 ई। एकर तसदीक मंदिर में लागल शिलापट्ट अजुवों करि रहल बा। नवहे उमिर में दूनों भाई मिलके एगो लमहर कारज कर दीहलें। तबे से आजु ले भोरे आ साँझ खानि पूजा, भोग आरती आ साल भर में होखे वाला भगवदीय उत्सवन के मनावल उ लोग के दिनचर्या बन गइल।

मंदिर के जब बनवावे के जग फनाइल, ओह घरी के एगो घटना के जिकिर कइल जरूरी बुझाता। जब नन्हकू दुबे मने हमार बड़का बाबूजी पत्थर क परमिट करावे जाँय त अधिकारी लोग कहें कि पंडित जी खूब ढोई आपके कौनो रोक ना बाटे। कोई पकड़े त कह देईं, जवन हनुमान जी कहले रहलें–

'मोहि नाही बाँधे कर लाजा। कीन्ह चहउँ मैं प्रभु कर काजा।।'

मेहनत अइसन रंग लियाइल कि मंदिर के चारो ओरी ओसारी आगे सुन्नर चउतरा बनकर तैयार हो गइल। फेर मूर्ति मंगावल गइल, हनुमान जी क मूर्ति बड़ सा शिलाखंड में गढ़ल गइल। ओह जमाने मे बनारस से कारीगर मूर्ति उकेरे खातिर आइल रहलें। गरभ गृह में षट्कोणीय अरघा बनल जवना में शिव लिंग स्थापित भइल। ऊँच गो चउकी पर सिंहासन में शालिग्राम, श्री हनुमान जी, पार्वती, अम्बा आउर गणेशजी क मूर्ति राखल गइल। अरघा के सामने नंदी जी बइठावल गइलन। दूर–दूर से कर्मकांड के प्रकांड विद्वान लोग के बोलवा के विधिवत षोड्सोपचार आ पूजन क संकल्प दुनो भाई लिहलें, फेरु बिधि–बिधान से स्थापना सम्पन्न भइल। प्राण प्रतिष्ठा का बाद कुल गुरू महाराज रुद्राष्टक क स्तुति कइलें, आउर नित्य इहे स्तुति गावे क गुरु मंत्र दीहलन।

बंश क कीरति बढावे वाली, नीमन संस्कार देवे वाली, सुख समृद्धि, आरोग्यता देवे वाली करनी क भर–पूर परभाव हमरा जिनगी पर पड़ल। जिनगी चलावे खातिर, धन–दउलत देवे वाली पद–प्रतिष्ठा हमरा के मिलल, एकरा बादो भगवान हमका अइसन गुन दीहलें जवना से अपना सुख में रहि के दोसरे लोगनो के सुख दे रहल बानी। ई माई सरसती क महान किरपा बा। माई सुरसती के किरपा हमरा के संस्कार में मिलल बा। जेकरा चलते श्री ब्रह्मेश्वर नाथ मंदिर क स्थापना आउर बरीस के अंत में होवे वाला उत्सवन पर प्रकाश डाले वाली रचना हमरा मानस पटल में समाइल आ ऊ उभर के एक लघु पुस्तक क रूप ले लीहलस। एकरा प्रकाशित करावे क मुख्य उद्देश्य बस अतने रहे कि हमरा बाद आवे वाली पीढ़ी में एकर अनुकरण होत रहे। अगली पीढ़ी एके जाने, संस्कार में उतारे, आ आजीवन निर्वाह करत रहे, इहे हमार प्रयास बा। एही में अपनो जीवन क सफलता बाटे। **चौपाईः–**

ब्रह्मपुरी यह मंदिर सोहा। नाथ ब्रह्मेश्वर छबि मन मोहा।।
अरघा अति सुंदर पाषाना। षष्ठपहल षटकोण विधना।।
बाम भाग गिरिजा गृह सोहा। मूरति मधुर लेत मन मोहा।।
जय जय जय जगदम्ब भवानी। महिमा जासु न जाई बखानी।।
श्री गणेश तेहि निकट विराजें। मंगल मूरति सिन्धुर साजें।।
अरघा मध्य सोह शिव लिंगा। जल टपकत तब उठत तरंगा।।
डमरू और त्रिशूल सुहावा। नंदी नित शिव दर्शन पावा।।
सिंहासन अति दिव्य मनोहर। शालिग्राम प्रभु राजत ऊपर।।
तेहि समीप ठाढ़े हनुमाना। रुद्र रूप शंकर भगवाना।।

दोहाः– प्रनवउँ पवनकुमार प्रभु इष्टदेव हनुमान।
करहुँ सदा मंगल सबहि 'लालदास' के प्रान।।

बाबूजी क दृढ़ संकल्प पूरा भइल। भगवान शिव क

नाम श्री ब्रह्मेश्वरनाथ जइसन आख्या से संबोधित कइल गइल। ओहि समय संबत 1995 चलत रहल। बैसाख महीना क शुक्ल पक्ष सप्तमी दिन शुक्रवार रहल। एही शुभ मुहूर्त में स्थापना महोत्सव सम्पन्न भइल। आज संबत 2078 चल रहल बा। एकर मतलब मंदिर बनले कुल 83 बरिश बीत गइल। बाबूजी लोगन के स्वर्गवासी भइलें भी लगभग 42–43 साल हो गइल।मंदिर क ओसारी मा शिलालेख लगल बा।दो पत्थर जवना पर संस्कृत भाषा आउर हिंदी मे लिखावट बाटे।संस्कृत क श्लोक हमनी क पूर्वज रामस्वरूप दूबे जी रचले रहलें, अइसन सुने में आवेला।

आईं सभे अब हम रउरा सभे के मंदिर के बनला आ एह चित्त में बइठल बाति के सभे के सोझा परोसे क कारन बतावे जा रहल बानी। बैसाख शुक्ल सप्तमी दिन शनिवार, तदनुसार दिनांक 25 अप्रैल 2015, दोपहर क समय रहल, मन में ई भाव जागल कि श्री ब्रह्मेश्वरनाथ मंदिर स्थापना आ उत्सव क चित्रण अपना सिरजना से कइल जाय। जैसही कलम उठल आ श्री गणेशाय नमः लिखाइल, ठीक ओहि समय 11:45 बजत रहल कि भूकंप आ गइल। मन कांप उठल, तन सिहर गइल। मन में अनेक भाव उठै लागल। भगवान शिव क कृपा मानके लिखल शुरू कइली। कुछ प्रारंभिक अंश इहां उद्धृत कइल जात बा, जवना से रउवा सभे के जानकारी होई। आईं देखीं– उन्नीस सौ पंचानबे संबत माधव मास।

शुक्ल पक्ष तिथि सप्तमी,भृगुवासर दिन खास।।1।।
पार्वती शिव साथ मे श्री गणेश हनुमान।
सिंहासन पर राजते शालिग्राम भगवान।।2।।
प्राण प्रतिष्ठा पूर्ण कर,नन्हकू जोड़े हाथ।
मंदिर की स्थापना श्री ब्रह्मेश्वरनाथ।।3।।
ग्राम बरहुंआ में बसा दूबे बंश महान।
है चकिया तहसील में जिला चंदौली जान।।4।।
नन्हकू पुरुसोत्तम हुये, रामसकल सुत श्रेष्ठ।
दूबे पुरुषोत्तम अनुज नन्हकू भ्राता ज्येष्ठ।।5।।
पूर्ण हुई मनकामना दोनों के हिय हर्ष।
सदा मनाते आ रहे यह उत्सव प्रतिवर्ष।।6।।
नित्य नियम से अर्चना, सुबह शाम का भोग।
संध्या वंदन आरती करती सदा निरोग।।7।।
धन्य हुआ कुल आपका कीर्ति हुई ललाम।
पूज्य पिता के चरण को छूकर करूँ प्रणाम।।8।।
अकस्मात इच्छा हुई मन मैं उठा तरंग।
कांप उठी धरती सकळ, फड़क उठे सब अंग।।9।।
यह कैसा संकेत है मन मे प्रश्न अनेक।
अंदर से उत्तर मिला,शिव का शुभ अभिषेक।।10।।
पुलक प्रकट धरती समझ,शारद का वरदान।
लाल भाल में चल पड़ी,रचना यह अनजान।।11।।

छंदः– अनजान यह रचना सुखद, शुभ कीर्ति मंगलदायिनी।
प्रभु आशुतोष भरोस करि, पायो भगति अनपायिनी।।
शिव भजन सेवा यजन में, बचपन से मन रमता रहा।
कुल कीर्ति का यह विशद यश, यह दास कछु गायन चहा।।

सोरठाः– श्री ब्रह्मेश्वरनाथ मंदिर यह सुंदर सुखद।
करौं विशद गुन गाथ,माथ नाइ कर जोरि करि।।

तबे से आज ले मंदिर क स्थापना दिवस वार्षिकोत्सव का रूप में मनावल जात बा। जब ले बाबूजी लोग रहलें,

धूम–धाम से मनावत रहेलें, उनका बाद हमनी के मना रहल बानी स। ब्रह्मेश्वरनाथ क कृपा बाबूजी क पूण्य दूनों मिलल आ हम इंजीनियर पद पर सरकारी सेवा में लाग गइली। मंदिर क जीर्णोद्धार करवा के एगो लमहर हाल बनववली। श्री हनुमानजी क जन्मोत्सव कार्तिक महीना में दीपावली पर बड़े धूम –धाम से मनल। मानस पाठ, प्रवचन, संगीत आउर कवि सम्मेलन तीन दिन क लमहर कार्यक्रम भइल। दूर दूर से आके नामचीन कलाकार लोग भाग लिहलें। कई साल ई आयोजन खूब सुघर भइल। 'उत्सव प्रकाश' में एकर एक झलक देखी सभे –

छंद :– कार्तिक चतुर्दशी कृष्ण की,प्रतिबर्ष जब जब आवहीं।
अति हर्ष अरु उल्लास से हनुमज्जयन्ति मना वहीं।।
करि विविध भाँती सृंगार पूजा भोर आरति गावहीं।
संगीतमय मानस परायण करहिं पाठ सुनावहीं।।

दोहा– मानस पाठ अखंड करि गावहिं मंगल साज।
अहो रात्रि का जागरण करता विप्र समाज।।

चौपाई–

प्रति संबत अस होइ अनंदा। जूटहिं बहु गायक कवि वृंदा।।
गायक दिन संगीत सुनावहि। सकल ग्राम बासी सुख पावहिं।।
रात होइ जब कवि सम्मेलन।कवि रचना सुनि सुनि विहँसे जन।।
हास्य व्यंग के छंद सुनाते। गीत गजल सबके मन भाते।।
मुक्तक चार चारू कवि देता। भोजपुरी पुनि मन हर लेता।।
जन्म महोत्सव सोहर गावहि। प्रभु पद पंकज शीस नवावहि।।
जिन्ह कर रचना अधिक सराही।बार बार ते अवसर पाहीं।।
संतत बहइ काव्य के धारा।कहत सुनत होइहिं भिनुसारा।।

दोहाः– त्रय दिवसी यह कार्यक्रम होइ रहे हर साल।
'लालदास' को सुख मिले, पुरजन होत निहाल।।

शिव रात क पर्व जब आवेला त ब्रह्मेश्वरनाथ क खूब प्राकृतिक सिंगार कइल जाला। बाबा क विवाह होखेला,रामायण गवाला। 'उत्सव प्रकाश' से एगो सुघर छंद मा चित्रण देखीं–

छंद– माथे महामनि मौर राजत, बौर जौ बाली भली।
बिच बीच कुसुम धतूर के,मंदार कुसुमंन के कली।।
भस्मी विराजत अंग पर,सिर सोह गंगा निर्मली।
शिव बाम भाग विराज गौरी हिम सहित मैना लली।।
करि धूप दीप अनेक विधि,नैवेद्य विविध लगावहीं।
आरति एकादश वर्तिका सजि करत अति सुख पावहीं।।
एहि भाँति पाणिग्रहण के शुभ साज सकल जुटावहीं।
शंकर विवाह सजाई मंदिर,''लालदास'' रचावहीं।।

दोहाः– फागुन कृष्ण त्रयोदशी कहें जिसे शिव रात।
प्रति संबत उत्सव करहिं,हर्षित पुलकित गात।।

हमार अगिली पीढ़ी के इहे संस्कार मिलल बा।उहो लोग अपने कमाई से मंदिर क गर्भ गृह सुघर सङ्गमर्मर क पत्थर लगवा के खूब सुन्नर बनवा दिहलें। साथे–साथे लागि के सब त्यौहार पर गाँव जालें ,बड़का लड़िका क खूब मन लागेला। हमार उत्साह बढ़ावत रहेंलन।मन लगा के मेहनत कइके हमार लिखल रचना भी प्रकाशित करावत रहेलन। नित्य नियम से पूजा करे

खातिर एगो पुजारी नियुक्त कइल बाटे, जवन सुबह शाम पूजन–अर्चन कर रहल बाटें। कुलिये तेवहार पर टोला क बड़ छोट सबही शामिल होला, आ मिलजुल के गाई बजाई,भरपूर आनंद उठावेला।

अबकी बेर मंदिर क वार्षिक श्रृंगार करइ खातिर जब गॉव गइली त उत्सव प्रकाश से स्थापना के विषय मे कुछ रचना फेसबुक पर डाल दिहलीं, जवना के पढ़ि के हमरे परिवार के छोट भाई जवन भोजपुरी साहित्य में लब्ध प्रतिष्ठित बाटें, हाले में उनुका भिखारी ठाकुर भोजपुरी सम्मान से सम्मानित कइल गइल ह, जयशंकर बाबू बहुत खुश भइलें। ऊ हमरा के ई बिचार दिहलें कि भैया श्री ब्रह्मेश्वरनाथ मंदिर के संस्मरण प्रकाशित होखे के चाही, रउवा एकरा के विस्तार देहीं। आज जे पी द्विवेदी के, के नइखे जानत, उनके सत्प्रेरणा से हम ई संस्मरण लिखली ह ताकि अगली पीढ़ी ओके पढ़े जाने समझे आ परिवार में ई संस्कार बनल रहे। एह विषय मे हम से उनका घंटा भर फोन पर बात बिचार भइल, अपना –धरोहर के उजागर करे क बड़ ललक उनका मन मे भरल बा। हम उनके एह भावना क कदर करत बानी आ बहुत बहुत धन्यबाद देत बानी।

हमरे कुल में एक से बढ़िके एक विद्वान कर्मकांडी कथाकार संगीतकार, कवि आलोचक रहल बाड़ें, आज भी बाटें। ई माटी विद्वान, कवि कोविद कलाकारन के जननी बा। हमका विश्वास बा कि अगिलियो पीढ़ी अपना धरोहर उजागर करी, पुरखन के कीर्ति में चार चाँद लगाई। संतान उहे धन्य होले जवन अपने कुल के कीरति के आगे बढ़ावत रहे। अइसने कुछ बाबा तुलसीदास अपना 'रामचरितमानस' के उत्तर कांड में लिखले बाड़ें–

सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत।
श्री रघुबीर परायन ,जेहि कुल उपज विनीत।।
दोहा संख्याः127

गीतो में भगवान श्रीकृष्ण कहले बानी–

''स जातो येन जातेन जाति बंशः समुन्नति''

अब अंत में श्रुति फल के रूप में भगवान श्री ब्रह्मेश्वरनाथ जी से प्रार्थना कइले बानी कि अइसही हमरे परिवार क सब लोग उनका सेवा में लागिके निरंतर सुखी रहसु।

दोहा– सम्मिलित संध्या आरती,नित्य चरन चित देहिं।
चरनामृत का पान करि बाल भोग जे लेहिं।।
तिन्ह के गृह सुख संपदा ,सदा होहि शुभ कर्म।
रहित ताप संताप से,सहित सबहिं सदधर्म।।
श्री ब्रह्मेश्वरनाथ के मंदिर उत्सव गान।
'लालदास' रचना सुखद करहिं श्रवन पुट पान।।
गृह परिसर में 'लाल' के शिव मंदिर विख्यात।
नारी सुत बांधव सहित भजन करौं दिनरात।।

श्री ब्रह्मेश्वर नाथ जी क मंदिर बहुत पुरान बा। लगातार 84 बरीस ले पूजा पाठ राग भोग निरंतर होत आय रहल

बा। एहिसे इहवाँ क शंकरजी अउर हनुमान जी बहुत जागृत बाटें। लोग दूर दूर ले आके इहाँ मनौती मानेला ऊ हम बहुत बीमार पड़ गइलीं, तब छ साल क रहली, बचे क कवनो आशा ना रहि गइल रहे। तब एगो चमत्कार भइल, एक साधू बाबा दाढ़ी जटा बढ़वले भिक्षा माँगते अइलन। दादी बाहर निकलनी, बाबा पूछले का परेशानी बा काहे रोवत बाटू। जब हमार बीमारी क बात बतौली त ऊ भभूत निकाल के दिहलें, कहले एके बचउवा क माथे पर मल दा, तनिक मुँहवा में डाल दा। जब हमका भभूत लगाके दादी बाहर आइल त बाबा गायब हो गयल रहलें। बड़का बाबूजी बाहर निकल के देखन, पूछ ताछ कइले त लोग कहले कि एही मंदिर मे जात क देखायल रहस,फिर कहाँ गइलें पता न चलल। बाबूजी ओ घटना के साक्षात श्री ब्रह्मेश्वरनाथ क कृपा मान के चौखट पर माथा टेकलें। हमार तबियत धीरे धीरे ठीक होखे लागल, आउर हम स्वस्थ हो गइली।

एक बार अइसही रामायण गवात रहे, दरी के नीचे सर्प बइठल रहे, जब आरती होये लागल तब ओके मंदिर जात लोग दिखले। कुछ लोग ओकर के मारल चहलस त बाबूजी मना कई दिहले, कहल ई बाबा क बासुकी नाग बाटे इ समाय जाई। अइसही हनुमानजी के बारे में बहुत से रहस्य मय चमत्कार सुनले बानी।

बडका बाबूजी चैत क महीना रहल, खलिहान से घर अइलें, उनका सीना में रचिके दर्द भइल, मंदिर के चौखट पर हनुमान जी क दर्शन कइले, आ ब्रह्मेश्वरनाथ क जय बोलि के शरीर छोड़ दिहलें। हम सैदूपुर से डाक्टर लेके अइली तबतक कुछ आउर हो गइल रहे। ई1972 ई. क घटना ह।हम इंजीनियरिंग फाइनल में रहली। चैत नवरात्र में दुर्गा पाठ पूरा कइके, आपन पूर्ण समर्पण कइ दिहलें।

अइसन कुल बहुत घटना देखले बाटी, सुनले बाटी।कहे क मतलब इहाँ के देवतन में भारी देवत्व बाटे। गॉव क से सभरी बिरादरी क लोग इहाँ जुटेला, सबकर मनसा पुरन होखेला। नित्य शाम क आरती पूजा होला जवना में सब जुटिके चरणामृत आ परसाद लेला। एसे सब प्रसन्न आ निरोग रहेला। एसे रउवा सभे से हमार निवेदन बा कि एकबार जरूर इहाँ दर्शन क लाभ लेहीं, अपना जीवन का धन्य बनाईं।

जय श्री ब्रह्मेश्वरनाथ। जय हनुमान जी।।

❑❑

❍ बरहुआँ, सैदुपुर, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

मजबूरी

विनीता मिश्रा

कल्लूआ के उमर जब तीन साल के रहे तबे ओकरा बाबूजी के देहांत हो गइल। कल्लू के पूरा जिम्मेवारी अब ओकरा माई पर आ गइल। ओकर माई मेहनत–मजूरी क के पाले लगली, समय बीते लागल। कल्लूआ के एके गो काम रहे, खाइल–पीअल आ कसरत कइल। समय के साथे कल्लू एगो गबरू जवान के रूप में उभरल।

अब ऊ इलाका के दबंग साधू के सीधे–सीधे टक्कर देबे लागल, जूर्म के बिरोध करे लागल। साधू के दसो आदमी पर कल्लूआ अकेले भारी परे।

साधू के आपन रूतबा खतम होखे के डर सतावे लागल। ऊ अपना सबसे पुरान सागीर्द जीतन से कल्लूआ के ठेकाने लगावे खातिर कहले। जीतन बहुते सुलझल आ दूरदर्शी रहले, ऊ साधू के संगे कुछ अइसन–ओइसन करे के बदले नोकरी पर राखे के प्रस्ताव रखले। साथू पूछले, ''ऊ तैयार हो जाई ?''

जीतन कहले, ''मजबूरी सब करावे ला।''

ढेर दरमाहा देके कल्लू के नोकरी पर लगा दीहल गइल आ काम हाथी के देख–रेख के मिलल। अब कल्लूआ चौबीसों घंटा हाथी के सेवा में चिंतीत रहे लागल आ साधू के चिंता आसानी से खतम हो गइल। मतलब साँप मारल गइल आ लाठिओ ना टूटल। ❑❑

❍ कटनी, म. प्र.

नेव

तारकेश्वर राय 'तारक'

भागीरथ काका के नौकरी के आखिरी साल रहे। ऊ सोचत रहलन– ''एगो लइका फौज में लागि गइल आ बिआहो हो गइल, अब बाँचल एगो लइकी आ छोटका। इहो लोग नोकरी पर लाग जाइत त हाथ–बाँह धरा के निफिकर हो जइतीं।'' सोचते–सोचत कब घर आ गइल, पते ना चलल। घर में ढुकते देखत का बाड़न कि नवकी पतोहिया रसोई में जूठ बरतन माँजे में लागल बिया, छोटकी अपना फोन में बाझल लउकल आ ओकर माई के आवाज पड़ोस से आवत रहे।

काका फेरु सोचे लगलन, अपना बियाह के समय जब छव महिना तक ले नया पतोह के घर के काम–काज में ना लगावल जाय, छोट देवर–ननद आ घर के अउरी सँवागी लोग बोल बतिया के समय काटो अउरी नया सदस्य के घर के आपन बुझे खातिर समय दिहल जाय। समय का संगे रीति–रिवाजो बदल गइल।

घर के काम छोटकी अपना माई के साथे क लेत रहे। छोटको आपन काम अपने करत रहे। भाभी के अवते सभकर रहन खराब हो गइल। सुनात बा लोग पढ़–लिख के समझदार –सहुरदार हो गइल बा। बाह रे समझदारी!

तबही आवाज सुनाइल, ''भाभी एक गिलास पानी दीहऽ''।

''जी ले आवत बानी।''– दुलहिन के आवाज सुनाइल।

''का रे, तें बड़का लाट साहब भइल बाड़े? हाँथ टूट गइल बा कि पानियों नइखे उठत। रहे द दुलहिन।'' –काकी के बोली सुनाइल।

''आ तू रे, तू का करत बाड़ू? काल के आइल लइकी बरतन माजत बिया आ तू मजा से बइठल बाड़ू, ऊ नौकरानी हिय? कवन जरूरी चीज फोन में खोजत बाड़ीस ? लाज–हया बा कि ना? छत पर से कपड़ा आइल ? जो लेयाव।''

डाँट सुनते छोटकी छत का ओर सरक गइल।

''का दुलहिन, तू अकेलही बरतन धोवे लगलू? लियावऽ हमहूँ धोवा दीहीं।'' –कहिके पतोह के हाँथ बटावे लगली।

केवाड़ी के आड़ से भागीरथ काका सकुन के साँस लिहलन। उनकर बिश्वास पक्का हो गइल कि घर के नेव अबहीं मजगूत बा जल्दी ना टूटी।

❑❑

❍ गाजीपुर, उत्तरप्रदेश

का मरदे, का हाल बा

जियाउल हक

पहिला बार जोगेश्वर भाई के केहू मुम्बई बोलाइले रहे, ई कह के कि, ''आवऽ, बहुत बढ़िया कम्पनी बा, फ्रेशर लइकन खातिर सिखे के बहुत बढिया जगह बाटे।''

जोगेश्वर भाई किशोरावस्था से आगे निकल चुकल रहलन। अब उनका आपन जिम्मेदारी के आभार हो चुकल रहे। जेंगन हमरो के आभार हो चुकल रहे। आखिर जिम्मेदारी के आभास होई काहे ना उनका। घर के बड़ बेटा ऊ रहले, हमरे नियन। उहो माई के लोर आ बाबूजी के परेशानी आ दर–देयाद, पर–पटीदार के बर्ताव आ रिश्तादार लोगन के ताना–बाना से पूरी तरह परिचित हो गइल रहले।

ओह बेरा में उनका ना आगे नाथ ना पीछे पगहा रहे। जे जवने राहे कहे, उहे राह पकड़ लेस। बस, ऊ कइसे दू–चार पइसा मेहनत आ ईमानदारी से कमाए लागस, कि उनकर घर–परिवार सम्भल जाव आ उनको भौतिक सुख–सुविधा मिले लागे। ई एगो नशा हो गइल रहे उनका।

जोगेश्वर भाई अपना मेहनत आ ईमानदारी से दू–चार रुपया कमाए–धमाए लागल रहले। अब घर में सब ठीक–ठाक चले लागल रहे।

एकाएक पिछला साल देश में कोरोना महामारी के बढ़त प्रकोप के कारण पूरा देश में लॉकडाउन हो गइल। जोगेश्वर भाई घबरा गइले। अइसन घबराइले कि ऊ काल्ह छोड़, आजे अपना घरे पहुँच जास, एतना उनका हड़बड़ी हो गइल रहे।

आखिर ऊ हबड़ास काहे ना। दुनिया खातिर ऊ एगो प्रवासी गरीब मजदूर रहलन। अपना माई–बाबू खातिर ऊ एगो पूरा दुनिया रहलन।

ऊ समय देश के लाखन–करोड़न मजदूर सड़क पर रोवत–डहकत रहे लो। ओह लाख–करोड़ के गिनती में हमार जोगेश्वरो भाई रहलन जे रोवत–डहकत आपन घरे पहुँच गइले।

जोगेश्वर भाई से हमार ना कवनो ज्यादा दिन से परिचय रहे, ना कवनो रिश्तेदारी, ना भवदी, बस ऊ हमरा कम्पनी में एगो फ्रेशर इलेक्ट्रिशियन रहलन। बाकिर बिहार के रहल, एह से हमरा ज्यादा लगाव आ अपनापन महसूस हो गइल रहे। पहिला बेर केहूँ जवारी मिलल रहे जे हमार जात आ धर्म ना पूछ के सीधा पूछले रहे कि ''तू बिहार–यूपी से बाड़ऽ का।''

हम कहनी, ''हँ।''

''तहार टोन से लागल ह कि तू अपने तरफ के बाड़ऽ।''

जोगेश्वर भाई से पहिला परिचय अइसही भइल रहे। ई अनजान परदेस में एक–दोसरे के देखतहीं ई लागे कि हमनी के आपन माटी के महक ईहाँ मुम्बइयो में महके लागल बा। एक–दोसरे के देखतही एके शब्द मुँह में निकले, ''का मरदे, का हाल बा।''

बिहाने–बिहाने एगो घटना न्यूज में आइल कि 'मालगाड़ी के नीचे दर्जन भर प्रवासी मजदूर कट के मर गइले', त हमार जीव सनाक से हो गइल। हम तुरंत जोगेश्वर भाई के मोबाइल पर फोन लगा देहनी, बाकिर मोबाइल 'आउट ऑफ नेटवर्क' बतावत रहें। तीन दिन ले लगातार जोगेश्वर भाई के फोन लगावे के कोशिश कइनी। भीतरे–भीतर दुआ करीं कि 'ए खुदा, जोगेश्वर भाई के ठीक से उनका गाँव पहुँचवा दिहऽ। कवनो अनहोनी मत होखे दिहऽ।'

चौथा दिने जोगेश्वर भाई के फोन लाग गइल। जोगेश्वर भाई से ओह दिन बात भइल त पता चलल कि ऊ गाँव के एगो स्कूल में कोरोंटाइन बाड़न। ई खबर सुनला के बाद दिल आ दिमाग शांत भइल रहे।

❑❑

❍ छपरा (बिहार)

गीत

डी. के. सिंह

जिंदा रहे जुग–जुग हरदम इहे अभिलाषा बा
मिसरी के जइसन मीठ भोजपुरी भाषा बा।।
ठाकुर भिखारी, मिसिर महेंद्र परिभाषा बा
मिसरी के जइसन मीठ भोजपुरी भाषा बा।।

चहके ला मनवा धुन सुन के विदेशिया
पूरूबी के तान पर सहम जाली गोरिया
छोड़ दिहि छाप जग में ईहे त आशा बा
मिसरी के जइसन मीठ भोजपुरी भाषा बा।।

एकर इतिहास भइया हऊवे गौरवशाली
आपन संस्कृति सभ्यता से ई पुजाली
हद हो गइल बा लोग कइले तमाशा बा
मिसरी के जइसन मीठ भोजपुरी भाषा बा।।

❑❑

❍ कैमुर, भभुआ (बिहार)

कोरोना

अशोक मिश्र

ना एकर रूप बा कवनो
नाहीं कवनो रंग बा
नईखे एकर ठौर ठेकाना
ई बड़हन बेशरम बा।

कब,कहां गले पड़ि जाई
समझ में ना कुछू आव ता
कवनो चुक भईला पर
ई बड़ा तड़पाव ता ।

नाम एकर कोरोना बा
नामे से रोआई आव ता
नाक से फेफड़ा में जाके
ई भारी संकट बरपाव ता ।

अस्पतालन में भीड़ बा भारी
ऑक्सीजन के हाहाकार बा
बेड इहां नइखे खाली
सगरे तंत्र बेमार बा ।

हरदम मास्क लगावऽ भैया
हाथ तनी सबुनीआवऽ
भीड़–भाड़ से दूर रहऽ
आ दू गज दूरी बनावऽ।

❑❑

❍ कटनी, म. प्र.

गउवाँ के इयाद

प्रिया पाण्डेय 'रोशनी'

पिया जी हमार अँखिया लोर से भर जाता,
गउवाँ के इयाद में छलक –छलक जाता,
इयाद आवता,
पीपर क ऊ पेड़वा,
ऊ मंदिरवा,
ऊ पोखरवा,
कच्चा आम के टिकोरवा खात रहली.....
जेठ की ऊ भरल गरमिया,
कच्ची खोरियन में धउरत रहली,
सावन क ऊ झूला,
तेज बरखा में भीग–भीग के,
जात रहली मंदिर भोला बाबा के पूजा करें,
ह पिया जी,
हमार अँखिया लोर से भर जाता,
गउवाँ के इयाद में छलक–छलक जाता,

तू काहे भइला बेदरदी,
गउवाँ लउटे क नाँव नाही लेला,
जेठवा के ऊ गरमी,
जाड़ के ऊ ठिठुरन इयाद ह आवत,
एहिजा के ए सी ना भावे,
एहिजा के बंद कमरा खा जावे,
तोहके भावे परदेस रे,
हमरा के भावे गाँव रे,
पिया जी हमार अँखिया लोर से भर जाता,
गउवाँ के इयाद में छलक –छलक जाता
छलक–छलक जाता।

❑❑

❍ मखला, हूघली, पश्चिम बंगाल

हियरा के भूख

कुमार जीवन सिंह

जिअतारे देहिआ में अगिआ लगावल,
सनेही ना बुझलअ करेजा के दुख।
पह जब फूटेला उगेले किरिनिया आहो,
मिटल ना हमरा हियरा के भूख।

बेंगवा मछरिया अउर पंवरेला जोंकवा जे,
चुएला ओरी अउर बरखा के बूंद।
केकरा पिरितिया में ई देहिया पोतन भइल,
केहू पतियावे ना लेहलस ना सूध।

पानी भरल बाटे संउसे बधारी चेंवरा,
अकेले में ठाढ़ा बाटे गुलर के ठूंठ।
पेनान्हिल बकरिया फेंकरेले रातभर,
पठरूआ के मिलेना तनको भर दूध।

जिनिगिया के हाल केहू पूछल ना जिंदगीभर,
इनारे में डोल रहल उबहन गइल टूट।
रंथी पर मन पड़े घरभर के लाटाकुटन,
पछताते हम रह गइनी सब गइल छुट।

❑❑

मुसीबत से मुक्ति

विकास मिश्रा

मुसीबत से मुक्ति होई कब, इहे प्रश्न बा होठन पर।
कब असर पड़ल बा दुःख के, मक्कार और झूठन पर।।

समय के बदलल चाल बा, प्राणन के दुखदाई।
एकरा से ज्यादा सहात नइखे, दया करी रघुराई।।

ए दुनिया में रोग से ढ़ेर, भूख से लोग मर रहल बा।
घरवो अब जेल लागे, रहते अब डर लाग रहल बा।।

भगवान अब रउरे कोरोना के, प्रतिरोधक हवा चलाईं।
नष्ट होता जन–जीवन, एह धरा के लाज बचाईं।।

जे पेट भर के लेटल बा, ओकरो नींद उड़ रहल बा।
मजदूरन के का हालत होई, सब सामने दिख रहल बा।।

एक बेर फेरु रघुवर, ई चमन के लहलहाई।
रउआ बानी विशिष्ट हमनी के, अब रउआ ही देश बचाईं।।

❑❑

❍ *गोपालगंज, बिहार*

केकरे खातिर

विनोद पाण्डेय

दिन–दिन भर भागत हउवअ केकरे खातिर
रात–रात भर जागत हउवअ केकरे खातिर

बीवी–बच्चा खातिर भी ना समय बचत बा
ऑफिस में ही सारा–सारा समय कटत बा
पइसा त आवत बा लेकिन जीवन बा फीका
पइसा खर्च करअ क टाइम कहाँ मिळत बा
बहरअ रहअ चाहत हउवअ केकरे खातिर
झूठअ मन बहलावत हउवअ केकरे खातिर

करअ नौकरी के रोकत बा खूब करअ
खिंचअ रुपिया के टोकत बा खूब धरअ
लेकिन अपने देहियों क तनी करअ फिकिर
के कहले बा नया जमाना देख मरअ
बेटाइम क चाभत हउवअ केकरे खातिर
छुप के चूरन फाँकत हउवअ केकरे खातिर

दूसरे क बस देख–देख क होड़ मचल बा
काम भले नाही बा लेकिन चीज भरल बा
जीवन क आनंद न लेवे तोहके आइल
टेंशन दिनों रात कि आँख से नींद उड़ल बा
सुट्टा पी के हाँफत हउवअ केकरे खातिर
आपन देह जलावत हउवअ केकरे खातिर

तोहरे घरवालन के चाही समय तोहार
पइसा से ओनके ना हउवअ एतना प्यार
तोहरो काम भी कम पइसा में चल जाई
पइसा काम न आयी पड़लअ अगर बीमार
एतना माल जुटावत हउवअ केकरे खातिर
सुतले में भी ताकत हउवअ केकरे खातिर

ऑफिस में बस काम भरे क समय लगावअ
घरवालन के संगे भी कुछ समय बितावअ
आपन शउख भी पूरा करअब, नीक लगी
इ जीवन फिर न पइबअ, आनंद उठावअ
असली कमवा टारत हउवअ केकरे खातिर
मनवा के तू मारत हउवअ केकरे खातिर

❑❑

❍ गाजियाबाद, उत्तर–प्रदेश

तूँ सोना उपजाव

मनकामना शुक्ल 'पथिक'

खेत कियारी जोत कोड़ के बढ़िया फसल उगाव
मटर, मसूर चना आ तीसी सोना धान उपजाव
पंचायत में साँझ सबेरे बिरहा लोरकी गावऽ
खेत कियारी जोत...।

गोबर, खली, खाद पानी दा तब फईली हरियाली
घरती बनी स्वर्ग जइसन ई तब फईली खुशियाली
वृक्ष हवै धरती के शोभा सगरौ पेड़ लगावऽ
खेत कियारी जोत...।

करा परिश्रम जम के भईया अन्न दिखी खलिहाने
कोड़ा, पानी, खाद सुरक्षा संझा अउर बिहाने
खींच तानि के चरिव कोना समतल खेत बनावऽ
खेत कियारी जोत...।

मानवता में रंग बिखेर मन सबके हर्षाई
चईती अउर अगहनी दुन्नउ बोझई बोझा आयी
प्रगतिशील खुशहाल रहऽ ई धरती स्वर्ग बनावऽ
खेत कियारी जोत...।

आबादी सरदर्द हो गइल जा कलुवा के समझाव
मुरहू जइसन खाँची भर तूँ लईका जिन उपजाव
पाँच साल पर लड़ परधानी पईसा खूब लुटावऽ
खेत कियारी जोत कोड के बढ़िया फसल उगावऽ
पंचायत में साँझ सबेरे बिरहा लोरकी गावऽ

❑❑

❍ *सोनभद्र (उ.प्र.)*

गीत

बिम्मी कुँवर सिहं

आफत बनके आइल कोरोना,
अजी हम सुकवार नइहर की।

आटा सानत मोरी मुरूके कलाई,
मुरूके कलाई अजी जीउ जर जाई,
ओह पे ताना मारे सास!
कहें काम ई तिहारी,
अजी हम सुकवार नइहर की।
आफत बनके आइल कोरोना...

बरतन माजत मोरी हाथ करिआई,
हाथ करिआई सगरी देह मरूआई,
ओह पे लेबे चुटकी देवरा !
कहें काम ई तिहारी,
अजी हम सुकवार नइहर की...
आफत बनके आइल कोरोना ....

मचकल कमर तबो झाड़ू लगाई,
झाड़ू लगाई अजी पोछा लगाई,
ओह पे मटक मटक के बोले ननदिया!
कहे काम ई तिहारी,
अजी हम सुकवार नइहर की।
आफत बनके आइल कोरोना...

कपड़ा धोवत मोरी अगुरी छिल जाई,
अंगुरी छिल जाई मोरा देह घिस जाई,
ओह पे साजन जी के घुड़की!
कहे काम ई तिहारी,
अजी हम सुकवार नइहर के।
आफत बनके आइल कोरोना
अजी हम सुकवार नइहर के...

❑❑

❍ सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल

नाम ते पावहिं लोग

मार्कण्डेय शारदेय

हम एगो लइका से पूछलीं, 'ए बाबू! तहार नाम का हऽ'?

तऽ ऊ कहलस, 'ईरज'।

'एकर का माने होला'?

'हनुमान'।

दोसरा से पूछलीं तऽ ऊ कहलस, 'अदेन्य'।

ओकरो ले पूछलीं जे का अर्थ होला? तऽ ऊ बतवलस, 'प्रथम, सर्वश्रेष्ठ'।

हम केहू के अप्रचलित नाम सुनींला तऽ ओकर अर्थ टोवे लागींला। पता ना, ई दुर्गुण कब से आइल। सेयान से तऽ जल्दी ना पूछि पाईं, बाकिर बचवन से नाम के साथे अर्थो पूछिये दीहींला। पहिले से तऽ हमनी का बहुते उन्नत बानी सँऽ। पहिले देवी-देवता, ऋषि-मुनि, साधु-सन्त, महापुरुष, सती-साध्वी लोगन पऽ नाम अधिका होत रहे, बाकिर अब जबाना बदलल। अब अप्रयुक्त शब्दन के प्रभाव बढ़ल बा। हँऽ, पहिलहू कुछ लोग जीये खातिर एक से एक जियतार नाम रखत रहन। अकाटू, बकाटू, खेदन, घूरहू, कतवारू, बीगन, मरछिया, मनतूरनी, फेंकनी-जइसन नाम एकर उदाहरण बाड़े। एकरा पहिलहू मतंग (हाथी), अजमीढ (बकरा के मूत्र) शुनःशेप (कूकुर के दुम)-जइसन नामन के कमी ना रहल।

एह वैज्ञानिक युग में गुगुलदेव के महिमा अपार बा। सब कुछ उपलब्ध तऽ कराइये देताड़ें। नामो रखे में सहयोगी बाड़ें। अभिभावक उनुको कृपा से बढ़िया से बढ़िया आ बीछल-बीछल नाम रखे में आगे बाड़ें।

वास्तव में हमनी के मन 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के दुष्यन्ते लेखा होला। जब ऊ शकुन्तला के पहिले पहिल देखलें तऽ भावविभोर होके कहलें 'अनाघ्रातं पुष्पं....'। उनुका बुझाइल जे ई तऽ बिनसूँघल फूल, बिनबेधल रत्न बिया। ऊ रहबो कइली। ऊ बाजार के ना रही। बाकिर इंटरनेट तऽ बाजारे हऽ नू! एहिजा हर चीझ बाजारुवे बा। खाँटी घीव से डाल्डा तक मिलेला। अइसे में एहिजा

पता ना, गुगुल महाराजो कहँवा से एक से एक अइसन-अइसन नाम जोगाड़ देलें, गढ़ि लेलें जे 'न भूतो न भविष्यति'। हम शब्दन के धातु-प्रत्यय के जोड़ि के देखत रहि जाईंला आ विविध शब्दकोशन के पन्ना पलटत रहि जाईंला। खैर, लोगन के गलती का बा? लोग तऽ जहाँ सुलभ होई, ओहिजे से नू माल उठाई! अब बड़-बूढ़ से पूछे के चाल कमे नू बा!

तुलसी बाबा कलियुग में पूजा-पाठ, जप-जग्य, जोग-ध्यान से बढ़ि के नामे के महिमा पऽ जोर देतानी। उहाँका तऽ एहिजा तक कहि देतानी- 'राम न सकहिं नाम गुन गाई'। माने ई जे रामो आपन नाम के महिमा बखाने में समर्थ नइखन। भला बताईं तऽ ! भगवाने के ज्ञान से परे कुछ हो सकेला? हमार माथा चकराउ त चकराउ, बाकिर बाबा के कहल बेवजह तऽ होई ना! हम एकरा पदार्थोक्ति पऽ विचारे लगलीं तऽ कुछ-कुछ बुझाए लागल। हमरा सामने पहिले ई कहाउति आइल- 'मुँह में राम बगल में छूरी'। आ दोसर 'राम-राम कहना, पराया माल अपना'। एह दूनो के एक कइके देखल जाउ तऽ मतलब ईहे जे प्रत्यक्ष कुछ आ परोक्ष कुछ। हमार ज्ञानदीप के बाती तेज हो गइल। भला राम कहाँ सोचले होइहें जे उनुकर नाम ले-लेके लोग चोरी-डकैती, छीना-छोरी आ लूट-मार मचाई! एही बात पऽ गाँधी बाबो के लीहल जाउ तऽ उनुकरो कम दुरुपयोग नइखे। नाम आ फोटो दूनो के आड़ में आपन गोरखधन्धा धड़ल्ले से होता। हर दफ्तर में उनुकर फोटो, हर रुपयो में उनुकर फोटो आ हर जगे उनुकर बिचार के उलुटा काम। ऊ कहँवा सोचले होखिहें जे हमरा सपनन के भारत के ई रूप होई!

हमरा बहस नइखे करेके कि नाम के महिमा का बा! हमरा तऽ अतने बुझाला जे नाम पहचान मात्र हऽ। गुण कबो ना हो सकेला। अगर गुण होखे के रहित, नाम-प्रभाव होखे के रहित जेकर-जेकर जइसन-जइसन नाम बा, ऊ-ऊ ओइसने-ओइसन होखित। जेकर महापुरुषन पऽ नाम, ऊ महापुरुष, जेकर राजा पऽ बा, ऊ राजा आ जेकर नाम भगवान, देवी-देवता पऽ ऊ भगवान, देवी-देवत नियन होखित। बाकिर अइसन संयोग कहाँ पावल जाला! तबे तऽ कहल जाला-

'नाम नारायनजी आ करनी कुछुओ ना'! भा, 'आँखि के आन्हर नाम नैनसुख'।

अगर नाम–प्रभाव पऽ विश्वास रहित तऽ शकुनि (गीध), द्रोण (कउआ), नकुल (नेउर) जइसन नाम काहें होइत? का उनुकर माई–बाबू के नामे ना जूरत रहे भा अज्ञानी रहलें? हम ठठपालवादी हईं, एहसे ठठपाल–दर्शन उद्धृत कइल जरूरी बा–

'बिनिया करत लछिमिनिया के देखलीं हर जोतत धनपाल।
अरथी चढ़ल हम अम्मर देखलीं सबसे निमन ठठपाल'।।

शायद ठठपाल के बाबू गुगलदेव लेखा शब्दनिर्मातो रहलें। ऊहो यूनिक नाम धरे के चक्कर में शब्दकोशन के सहारा ना लेके मनःकोशे से उपजइले होइहें। ऊ 'ठन् ठन् गोपाल' के मुखसुख–सिद्धान्त पऽ ठठपाल बना देले होइहें। उनुका महाभाष्यकार पतंजलि के कथन पऽ अमल कइल बाउर बुझाइल– 'एकः शब्दः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति'; माने ई जे एके शब्द के सुन्दर प्रयोग से प्रयोक्ता स्वर्गलोकीय कामधेनु हो जाला। उनुका कामधेनु थोड़े बने के रहे! शायद कइसहूँ जीयत–खात रहन आ ओही में मस्त रहन तऽ उनुका का मतलब! अब ठठपाल के अर्थ ढूढ़त रहीं रउरा।

हँऽ, सुनले रहीं– 'तरि गयो सजन कसाई'। सजन कसाई एह से मुक्ति पा गइल जे अपना लइका के नाम नारायन रखले रहे। का तऽ जब ओकर अन्त समय आइल आ जमदूत अइले सँऽ तऽ डेराके अपना लइका के चिचिअइलस। लइका सुनलस कि ना, बाकिर अन्तिम घरी भगवान के पार्षद आके विष्णुलोक ले गइल लोग। 'अन्त रामपद आवत नाहीं' आ ओकरा मुँहे आ गइल। अइसने लोभे लोग देवी–देवतन के नाम पऽ अपना सन्तानन के नाम रखत रहे। ओह घरी खातिर ऊ ठीक रहे। फिल्मीयुग में हिरो–हिरोइनो के नाम रखाये लागल तऽ का बाउर भइल ! इन्द्र, वरुण, कुबेर, राम, कृष्ण; नाम रखल कवनो शाश्वत सिद्धान्त थोड़े हऽ, जे अगल–बगल के लोगन के नाम से टकरात जाउ!

'सोने के थाली में जेवना परोसलीं', अइसन लोकगीत में प्रयोगो देखे–सुने के मिलेला। सोना के थारी राजा लोग केने भले हो सकेले, आम आदिमी किहाँ कहाँ दर्शन होई? तबो ई गवइबे करेला। शायद ई सोच होखी जे सौ में सौ पावे के विद्यार्थी उद्योग करत रही तऽ नब्बे काहें ना आई? ओसही सोना के थरिया बखानल जाई तऽ चाँदियो तऽ होई। सोचि–सोचि लोग चाँदी काटत होई। अइसही लोग राजेन्द्र, भूपेन्द्र, महेन्द्र, राजा, राजू, लक्ष्मी, रमा, उमा, सरस्वती आदि नाम रखिके सोचत होई जे हमरा बचवा–बचियन के भीतर राजा के बास हो जाई तऽ हमार पातर दिन पलटि जाई। एकरे के नू खियाली पुलाव कहल जाला!

खैर, जे होखे; नाम ना, कामे पुजाला। एहसे नाम पऽ ना जाके कामे पऽ जायेके चाहीं। बाकिर सुसंस्कृत नाम के साथे उपयुक्त काम के संस्कारो होखे तऽ सोना में सुगन्धे नू कहाई! ❑❑

❍ सी/603, पाटलिग्राम अपार्टमेंट, बजरंगपुरी,

लिखीं लिखाईं, सीखीं सिखाईं
भोजपुरी के मान बढ़ाईं।।

भोजपुरी भाषा का मानकीकरन के बेवहारिक आधार

डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'

संसार का हर ग्यात भासा के दू खाना में राखल गइल। पहिला– एक केन्द्रीय भासा आ दोसर– बहु केन्द्रीय भासा। एक केन्द्रीय भासा के माने एक मानक रूप के भासा य जइसे–रूसी, इतालवी, जापानी वगैरह। एह एक मानक रूप वाला भासा के अंगरेजी में मोनोसेंट्रिक लैंग्वेज (Monocentric Language) कहल जाला। बहु केन्द्रीय भासा के माने एक से अधिक मानक रूप वाला भासा य जइसे– अरबी, फारसी, जर्मन, अंगरेजी वगैरह। एह बहु केन्द्रीय भासा के अंगरेजी में प्लूरिसेंट्रिक लैंग्वेज (Pluricentric Language) कहल जाला। ई अरबी, फारसी, जर्मन, अंगरेजी वगैरह बहु केन्द्रीय भासा अलग–अलग देसन के उचारन के आधार पर आपन आकार लेवेला य जइसे– जर्मनी ऑस्ट्रिया का जर्मन के आपन आपन भासा रूप, ब्रिटेन, अमेरिका ऑस्ट्रेलिया वगैरह का अंगरेजी के आपन आपन भासा रूप, पुर्तगाल आ ब्राजील के आपन आपन पुर्तगाली के आपन आपन भासा रूप आदि। अइसे हर देस के आपन भासा रूप भइला से ओह देस खातिर त ओकरा भासिक एकरूपता खातिर ओकर एगो मानक रूप तय त होइबे करेला। कई देस के एके भासा का बहु केन्द्रीय भासा के भासिक रूप के जाने खातिर समुझे से जादे रटे के पड़ेला। काहे कि एह भासा का एके सब्द के रूप दोसरा देस के उच्चारण के हिसाब से बदल जाला। अइसन स्थिति एक केन्द्रीय भासा के सङे उत्पन्न ना होखे।

कवनो भासा के बोले, लिखे आ पढ़े में एकरूपता, स्थिरता आ बोधगम्यता ले आवे के उदेस से ओकरा मानकीकरन का प्रक्रिया के जरूरत होला। बहुत बड़ भूभाग का एके भासा के कएगो अस्थानीय भासा रूप होला। ओह सब भासा रूप में वर्तमान सामान्य बेवहारिक भासा का तत्वन के बीच समन्वय करत साहित्यिक प्रयोग के आधार पर एगो व्यापक प्रतिनिधि भासा रूप उभर के सामने आवेला। फेर ओह भासा के बेवहारिक आ साहित्यिक भासा रूपन में मेल करावत ओह भासा के ध्वनि प्रकृति आ भाव प्रकृति के अनुरूप ओकर एगो मानक रूप तय कइल जाला। एक तरह से मानकीकरन के प्रक्रिया भासा के विभिन्नता में एकता के साधे के उपक्रम ह। जवना से ओह भासा में स्थिरता, एकरूपता आ बोधगम्यता आवे अउर ऊ प्रतिष्ठा के सङे प्रसार– बिस्तार पा सके। भासा वैग्यानिक फर्गुसन एकरा खातिर तीन तरह के उपक्रम बतवले बाड़न– बेवहारिक भासा के लिखल, लिखल भासा के बयाकरन मतलब ओकर सुध आ असुध प्रयोग के तय करे वाला नियम बनावल आ लिखल आ नियम बनावल भासा के शब्द कोस तइयार कइल। ऊ सब्द कोस खाली साहित्यिके भासा के आधार पर ना होके ओकरा में आइल दर्सन, बिग्यान, अध्यात्म, धर्म, सासन, प्रसासन, न्यायालय आदि जुड़ल पारिभासिक सब्दावली के आधार पर तइयार कइल जाला। एह तीनो स्तर पर भासा के एकरूप मानल प्रयोग खातिर ओह भासा के उद्गम सोत के भासा, ओकर ध्वनि प्रकृति आ भाव प्रकृति आ ओकरा विकास यात्रा के दरम्यान ओकरा पर प्रभाव डाले वाली भासा के प्रभाव में आइल कालगत बदलाव के अध्ययन जरूरी होला। काहे कि बिना एह सब पर बिचार कइले ओह भासा के सर्वमान्य अथवा बहुमान्य मानक भा बैध रूप तय कइल आसान ना होखे।

एह मानक भासा के नागर भासा, परिष्कृत भासा, टकसाली भासा आ अंगरेजी में स्टेंडर्ड लैंग्वेज (Standard Language) कहल जाला। ई स्टैंडर्ड सब्द बनल बा अंगरेजी के स्टेंड (Stand) सब्द से। मतलब ई भासा स्टेंड मतलब खड़ा हो गइल। अब ई बोले के अलावे लिखाई, छपाई आ आउर जीवन –व्यापार में आवे खातिर दउड़े के स्थिति में पहुँच चुकल बा।एह भारतीय आर्य भासा भोजपुरी के मानकीकरन खातिर एकरा उद्गम सोत के भासा, कालक्रम से एकरा पर प्रभाव डाले वाली भासा आ एकरा ध्वनि प्रकृति आ भाव प्रकृति आदि के खोज करेके पड़ी। एकरा अलावे एकरा के प्रभावित करनेवाली आउर आर्य भासा सब से एकरा सम्बन्धन के टोहे के पड़ी।

अब जहाँ तक भारतीय आर्य भासा सब के बात बा त उपलब्ध साहित्य के आधार पर संस्कृत सबसे पुरान आ एक केन्द्रीय भासा के रूप में प्रसिध आ प्रचलित बा। जवन बैदिक भाषाउ के पच्छमी उदीच्य भासा रूप के आधार पर भगवान पाणिनि के द्वारा संस्कारित होके संस्कृत नाम से थिराइल भासा रूप में बेवहार में बा। पाणिनि के पहिले आ उनका समयो में एके भासा के कएगो भासा–रूप आ आउर–आउर देसी भासा के बेवहार होत रहे। ऊ अपना अष्टाध्यायी में 'अन्यरस्याम्' कहके वैकल्पिक भासा–प्रयोगन का अस्तित्व के सूचना देले बाड़न। भासा सब का प्राकृतिक रूप के आधार पर असंस्कृत भासा के 'प्राकृत' कहल गइल। जवना के प्रयोग संस्कृत के बिद्वान साहित्यकार आम जन के भासा के रूप में बेवहार कइले बाड़न। ओकरा बाद संस्कृत भासा के साहित्य में आम जन के मुँह से बोलवावल आम भासा रूप अर्थात् प्राकृत में आउर देसी भासा सब के मेल से जवन भासा रूप सामने आइल ओकरा के भासा के बिद्वान लोग अपभ्रंश आ अवहट्ट भासा कहल। कवनो भासा का अस्थानीय भासा रूप के बोली, उपभासा अथवा अप. भासा भी कहल जाला।

भारतीय आर्य भासा सम्बन्धी अब तक के उलेख से दूगो तथ्य उभर के सामने आवऽता। पहिला कि संस्कृत काल में देसी भासा के हू–ब–हू प्राकृतिक रूप के साहित्यिक बेवहार के आधार पर ओकर नाम प्राकृत रखाइल जवन आउर लोक–प्रचलित देसी भासा सब से अलग रहे। दोसर कि बाद में ओही साहित्यिक प्राकृत भासा के सङे आउर देसी भासा सबके मेल से बनल भासा रूप के अपभ्रंश नाम दिआइल। एह से ई तथ्य

प्रमाणित होता कि अपभ्रंश से पहिले देसी भासा के अस्तित्व लोक में रहे आ ओही देसी भासा सब के सङे साहित्य में प्रयुक्त प्राकृत के मेल से अपभ्रंश पैदा भइल। एह से कवनो देसी भासा पर आ ओकरा मानकीकरन आ एकरूपता पर विचार करे खातिर ओकरा व्युत्पत्ति का स्रोत पर बिचार करे के पड़ी।

कुछ समय खातिर भोजपुरी के लेके यूरोपीय बिद्वान हार्नले, ग्रियर्सन आ उनका प्रभाव में आपन आपन विचार देवे वाला यूरोपीय भा भारतीय बिद्वान लोग के ओह विचार के अलग रख दिआब जवना में एकरा बिहारी वर्ग के बोली, मागधी, अर्धमागधी भा शौरसेनी से व्युत्पन्न भा प्रभावित बतावल बा। तब कुछ रूढ़िगत अवधारना से निकल के साफ बातावरन में बात खुल के सामने आ सकऽता। फेर आगे चलके सबसे तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर मानकीकरन के प्रक्रिया तय कइल जाई।

अइसन बिचार राखे के वजह ई बा कि एह कुल्ह अवधारना से भोजपुरी भासा का अध्ययन के क्षेत्र में कई तरह के अराजकता फइलत गइल बा। आरंभिक अध्ययन का महत्व के माथे चढ़ावत हम ग्रियर्सन का भोजपुरी बिसयक बिचार के आउर लोग जइसन आर्स बचन ना मानीं आ ना मानल हमरा अनुचित ना लागे काहे कि ओकर तार्किक आधार बा। एक त ग्रियर्सन भोजपुरी के बिहारी वर्ग के बोली आ बाद में हिन्दी से इतर स्वतंत्र भाषा मनलें। दोसरे एकरा के मागधी अपभ्रंश से व्युत्पन्न मान लेलें। एक त भोज, भोजकट, भोजनगर, भोजपुर आ भोजपुरी बिहार आ बिहारी से पुरान शब्द हवें स। दोसरे, भोजपुरी बिहार से ज्यादे उत्तर प्रदेश का जिलन में बोलल जाला। एकरा अलावे मध्यप्रदेश के कुछ जिलन सहित नेपाल के तराई क्षेत्र के बेवहारिक भासा ह। तीसरे, बिहारी नाम के कवनो भासा के अस्तित्व रहले नइखे। चउथा, एकर ध्वनि प्रकृति मागधी अपभ्रंश से मेल ना खाए। जइसे– मागधी में ज के य, न के ण, र के ल आ ष अउर स के श उच्चारण होला आ लिखइबो करेलाय जइसे– जानाति के याणाति, राजा के लाजा, परिचय के पलिचय, हंस के हंशे, पुरुष के पुलिशे, सप्त के शत आदि। उहँवे भोजपुरी में एकरा ठीक उल्टाय यजमान के जजमान, युगल के जुगल, गणेश के गनेस, चरण के चरन, केला के केरा, पिपिलिका के पिपिरी, श्याम के साम, शीत के संगीत, पुरुष के पुरुख, षष्टी के खस्टी आदि। एही से डॉ. राम विलास शर्मा भोजपुरी के मागधी से इतर न, र, स ध्वनि केंद्र के भासा बतवले बाड़न।

कुछ बिद्वान भोजपुरी के पछमी मागधी आ अर्द्ध मागधी से बिकसित बतावेलन त कुछ ओकरा के काल्पनिक भासा कहेलन। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार जैन धर्म वाला लोग पूर्वी बोली में कुछ परिवर्तन करके अर्द्ध मागधी सिरिजलें आ डॉ. भोलानाथ तिवारी अपना 'हिन्दी भाषा का इतिहास' के पन्ना–102 में लिखत बाड़ें कि भोजपुरी के एगो नाम 'पूरबी' ह। फेर डॉ. चटर्जी के अनुसार बुद्ध का उपदेश के भासा पूरबी बोली रहे बाद में पालि भासा में उनका उपदेस आ बौद्ध साहित्य के अनुवाद कइल गइल। डॉ. उदय नारायण तिवारी के कहनाम बा कि भोजपुरी पर मागधी से अधिक पछिम के शौरसेनी के प्रभाव बा। कुछ लोग के इहो कहनाम बा कि पछिम के कौरवी, बांगरू, हरियाणवी के भासा रूप पर गढ़ाइल खड़ी बोली हिन्दी से भोजपुरी भासा, समाज आ क्षेत्र के दूर दूर तक कवनो सम्बन्ध नइखे। ई कुल्ह बात लोग कुछ ध्वनि के उचारन आ ध्वनि चिन्ह के प्रयोग का थोड़–ढ़ेर प्राथमिकता के आधार पर कहले बा। एमें हर कोई हाथी के अलग–अलग अंग पकड़ के हाथी के अलग–अलग परिचय देवे के प्रयास कइले बा। एकरा पर अलग से तार्किक ढ़ंग से बात करे खातिर 'भोजपुरी' सब्द के नामकरन, भोजपुरी भासी क्षेत्र, भोजपुरी भासा के ध्वनि प्रकृति आ भाव प्रकृति पर बिचार करेके के होई।

भोजपुरी सब्द के नामकरन बिहार के पछमी किनारा आ उत्तर प्रदेश के पूरबी किनारा के बीच के स्थान बक्सर के पास के भोजपुर नगर के आधार पर भइल बा। एह बक्सर आ भोजपुर क्षेत्र के सम्बन्ध ऐतिहासिक, पौराणिक आ बैदिक भोज लोग से रहल बा। बैदिक भोज के उपरोहित विश्वामित्र वेदन के कई मंडल सबका रिचन के दरसन कइले बाड़न। पूरबी बोली कोसली भासा के प्रयोग क्षेत्र उहे रहल बा जवन भोजपुरी के बा। मई, सन् 1965 ई. के बनारस में आयोजित भोजपुरी संसद के दूसरका भोजपुरी सांस्कृतिक सम्मेलन के अध्यक्षीय भासन में बोलत बतवले रहलें कि भोजपुरी कारूसी के अलावे आउर तीन साखा में बँटल बा– 1. मल्लिका, 2. कासिका आ 3. बज्जिका। रास बिहारी पाण्डेय 'भोजपुरी भाषा का इतिहास' में 'शतपथ ब्राह्मण' आ 'काशी का इतिहास' के आधार पर भोजपुरी क्षेत्र में प्राचीन मल्ल, बज्जि, काशी, कोसल, करूस, बत्स आदि जनपद के सम्मिलित कइले बाड़न। एक तरह से ई उहे क्षेत्र ह जवना के लगभग पन्द्रह सौ बरिस तक सम्पर्क भासा पूरबी बोली कोसली रहे। जवना में बुद्ध आपन उपदेश देलें। जवन सम्राट अशोक का काल में राजकाज के भासा रहे। जवना के एगो नाम बाद में भोजपुरी प्रसिध भइल आ हिड्स डेविड के बुद्धिस्ट इंडिया के अनुसार बारहवीं सदी में ओ. करा पछमी रूप 'अवधी' नाम से प्रचलित भइल। एह तरह से कारूसी, मल्लिका, कासिका, बज्जिका, अवधी, आ उत्तरी चम्पारन अउर नेपाल क्षेत्र के थारू–मधेसी भोजपुरी के स्थानीय भासा रूप ह। एह कुल्ह भासा रूपन के ध्वनि प्रकृति आ भाव प्रकृति के समरूपता भोजपुरी के अस्थानीय रूप सिध कर रहल बा।

डॉ. ए. पी. बनर्जी शास्त्री रिग्वेद का रिचन में बैदिक भोज के अस्तित्व के रेघिआवत कहले बाड़ें कि एही भोज गन भा जन के नाम पर एह क्षेत्र के नाम भोजपुर पड़ल। पुरानन में एह क्षेत्र के एगो नाम करुस भी आइल बा जहाँ के भासा पतंजलि काल कारुसी भी कहात रहे। पं. सकल नारायण शर्मा आरा नागरी प्रचारिणी सभा के आरा पुरातत्व के पन्ना–32 में ब्राह्मण पुराण आ शाहाबाद गजेटियर के हवाले से बतवले बाड़न कि 'करुस आ शाहाबाद नाम के बीच एह क्षेत्र के भोजपुर नाम के उल्लेख होला जहाँ के भासा आ निवासी दूनों भोजपुरी कहालें। अइसहीं अनेक बिद्वान भोज, भोजपुर आ भोजपुरी जन, क्षेत्र आ भासा के सम्बन्ध बैदिक भोज गन लोग से आ बैदिक काल से एगो प्राकृतिक नदी जइसन ई भासा के अनवरत बढ़त आ थोड़ ढ़ेर अपना अड़ोस–पड़ोस का देसी भासा सब से प्रभावित होत आ रहल बा। जवना के सम्बन्ध बैदिक भासा से रहल बा आ कालक्रम से एकर नाम

कारुसी, भोजी, कोसली, भोजपुरी बदलत रहल बा। एकर क्षेत्र बहुत व्यापक रहल बा। अवध के भोजपुरी भासा रूप के अवधी कहल जाला। डॉ. जितराम पाठक अपना शोधपूर्ण आलेख 'भोजपुरी भाषा के विकास यात्रा' में भासिक समानता के आधार पर अपना कई अस्थानीय रूप आ नाम प्रसिध भोजपुरी के सम्बन्ध बैदिक भासा से जोड़त कहले बाड़ें कि बैदिक भासा भोजपुरी भासा के जननी ह। (भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, अंक–अगस्त, 1993, पन्ना–253)। अब बैदिक भासा आ अवधी से एकर मुख्य मुख्य भासिक समानता दरसावल जरूरी बा जवना में अवधारना अस्पष्ट हो सके।

भोजपुरी भासा के रागात्मक, लयात्मक, संगीतात्मक, सुराघात–बलाघात आ स्वरांतप्रिय प्रकृति ओकरा के बैदिक भासा परम्परा के साबित करेला। बिद्वान लोग के अनुसार बैदिको भासा जन भासा रहे। ओकरो में बोलचाल का भासा के सहजता रहे। उहो स्वाघात वाला भासा रहे। इहाँ स्वर के अभिप्राय उहे बा, जवन संगीत में बा। जइसे संगीत में एके स्वर उच्च, मध्यम, निम्न आदि स्वरन में बोलल जाला ओइसहीं बैदिक भासा अथवा बैदिक संस्कृत में सब्द अलग–अलग स्वर में बोलल जात रहे आ स्वर भिन्नता के चलते सब्द के अर्थ बदल जात रहे। ई भासिक बिसेसता भोजपुरिए में पावल जाला। डॉ. विश्वनाथ प्रसाद के अनुसार 'भोजपुरी का बिसेस्तन में ध्वनियन के रागात्मक तत्व उलेखनीय बा। रागात्मक परम्परा बैदिक साहित्य में सुरक्षित बा। बैदिक भासा में सुराघात आ बलाघात के दर्सन होला। सुराघाते –ध्वनि राग ह, जवना के ससक्त उपस्थिति भोजपुरी में आजुओ मौजूद बा'। (भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, अगस्त–1993, पन्ना–25)।

बैदिक भासा आ भोजपुरी दूनो में अनुनासिक ब्यंजन के प्रयोग पावल जाला य जइसे– 'ङ' के पदांत प्रयोग– प्रत्यङ्, कीदृङ्, अङ्, सङ्, सङ्, आङ्न आदि। जइसे रिग्वेद के ष यजुर्वेद में ख उचारल जाला, ओइसहीं भोजपुरिओ में होला य जइसे– वर्षा–बरखा, हर्ष–हरख, लषण–लखन, षष्ठी–खस्ठी आदि। ओइसहीं पदादि य के ज उचारन होला जइसे– यज्ञ–जग्य, यमुना–जमुना, युगल–जुगल, यजमान–जजमान आदि। वैदिक सस्वरता के चलते उ के आगम बिरल रूप में होत रहे। भोजपुरी छोड़ के आउर कवनो भारतीय आर्य भासा में उ के प्रयोग–बहुलता नइखे मिलत य जइसे– पुरोहित में के उकार 'प' के पहिले अइला से भोजपुरी में शब्द बन गइल 'उपरोहित'।

वैदिक भासा में तिङन्त क्रिया के प्रयोग होत रहे त भोजपुरी में अधिकतर तिङन्त क्रिया के प्रयोग होला। भोजपुरी में 'श' के स्थान पर 'स' के उचारन होला। भोजपुरी में भाषा के भासा बोलल लिखल जाला। ऋग्वेद में 'भाषा' खातिर कई जगह भासा शब्द के प्रयोग बा। 'अभिख्या भासा वृहदा' (ऋग्वेद–7/7/4 आ 1/23/5)। बैदिक भासा आ भोजपुरी में स्यार, सूकर (सूअर), सूर्प (सूप) कोस, वसिष्ठ आदि चलेला, जवन संस्कृत में स के श होके श्याल, शूकर, शूर्प, कोश, वशिष्ठ आदि हो जाला। दूनो भाषा में आ, आव, आवह, आगहि, के, बङे, आके, पराके, बाति, जन, जनि जानी मूषध्मूस परुत्– परु (पिछला साल), पररि– परिआरि (पिछिला के पिछिला साल), करीष–करसी, गोविष्ठ–गोबर, गोंइठा, चरू–चरूई (घट), सत्तु–सतुआ आदि अनेक सब्दन के समान प्रयोग पावल जाला। अइसहीं कुकुर, उपदेस, निस्तार, निहसि, महिष भइस, धावऽ, पाजी, कुइला कोइला, इन्द्रागार–इनार, गर्गरिका–गगरी, पिपिलिका–पिपिरी आदि सब्द समान अर्थ में प्रयुक्त होलेन स।

बैदिक भासा आ भोजपुरी दूनो स्वर प्रधान भासा ह। एह दूनो के सब्दांत ब्यंजन हिन्दी जइसन स्वरहीन उचारित ना होखे। एने लोग हिन्दी के प्रभाव में आके स्वरहीन उचारन करे लागल बा। अइसे भोजपुरी में बैदिक भासा के समान स्वरांत उचारन होला। जवना खातिर अवग्रह मतलब बिकारी चिन्ह (ऽ) के प्रयोग होला य जइसे– मानऽ मानऽ बचनिआ हमार जनिआ, रामऽ गती देहू सुमती, आवऽ, बइठऽ, उठऽ आदि। एह दूनो भासा में ध्वनि उचारन के बिसेस प्लुत प्रयोग मिलेला। स्वर के रेघावे आ ह्रस्व अउर दीर्घ के अलावे दीर्घतर उचारन एह दूनो भासा के बिसेसता ह।

बैदिक भासा आ भोजपुरी में कुछ आउर समानता के उदाहरन देखल जाव– सत्यं वदऽ–सत बदऽ, पंच बदऽ, आपन गोंइया बदऽ आदि। बैदिक भासा का बलाघात के प्रवृत्ति भोजपुरी में देखल जाव– जानऽता (जान रहल बा) में न पर बलाघात बा। रिग्वेद में 'जानऽता संगमे महि।'

सायं करत (रिग्वेद) आ काम करत (भोजपुरी), कर दारे (रिग्वेद), कर तारे (भोजपुरी–संधि बिछेद के बाद), ई हे ह मनसा (रिग्वेद), ई ह (भोजपुरी), ह भोजा (रिग्वेद), ह भोज (भोजपुरी), यद्वा चो ह वाच स उ प्राणस्य प्राणः (केनोपनिषद), ह (भोजपुरी बा के अर्थ में), 'सा नो में मतिन आ धेहि' में आ भोजपुरी के आउर के अर्थ में प्रयुक्त बा।

अइसहीं कोसली, पालि, अवधी आ भोजपुरी के एह तरह के ध्वन्यात्मक समानता बहुत बा। डॉ. राम विलास शर्मा भोजपुरी आ अवधी के एके न, र, स ध्वनि प्रधान केन्द्र के भासा मनले बाड़न। एह दूनो में ह्रस्व अ के प्रधानता बाय जइसे– मीठ, जीत, बड़, छोट, मोट, नाट आदि। ई प्रत्यय के प्रयोग दूनो में बाय जइसे– कुछु, आजु, कासु, काल्हु, जाउ, आउ, खाउ आदि। परसर्ग के, का, से में, मां, मानसिक, पर, पर, लागि आदि के प्रयोग दूनो में बा। मुख क्रिया में 'त' लगा के सहायक क्रिया दूनो भासा में लागेला। भविसत काल के क्रिया में ह आ ब दूनो रूप के प्रयोग होला। महाप्रान ह के प्रयोग दूनो में पूरहर पावल जालाय जइसे– हेकर, होकर हिनकर, हुनकर। जे आ से में ह दूनो भासा में लागेला– जेह–जेहि (जेहि पर जेहि के सत्य सनेहु, जेहि के माई पुआ पकावे तेहि के बेटवा तरसे)। दूनो कर्तृवाच्य प्रधान भासा ह। एह तरह से कुछ कालगत आ अस्थानगत भेदन के छोड़ के प्रायः भासिक एकरूपता एह कुल्ह भासा सब में बा। एह से भोजपुरी भासा के लिखे, पढ़े आ बोले में एकरूपता ले आवे खातिर जब एकर मानक रूप तय करत समय बैदिक भासा, कोसली, पालि आ अवधी का भासिक प्रकृति –प्रवृति के जरूर ध्यान में राखे के होई। ❑❑

❍ लंगट सिह कॉलेज, मुजफ्फरपुर (बिहार)

भोजपुर में गांधी के अइला के सै बरीस

शशि रंजन मिश्र

मोहनदास करमचंद गांधी के महात्मा के उपाधि तबे मिलल जब उ बिहार के धरती पर आपन गोड़ धरले। राजकुमार शुकुल से जिद से गांधी जी चम्पारण अइले। गांधी जी 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में भाग लेवे आइल रहीं। एही अधिवेशन में शुकुल जी से पहिला मुलाकात भइल। शुकुल जी के बार बार आग्रह रहे कि हमार प्रदेश में आके ओहिजा के किसानन के उद्धार करीं। गांधी जी टालमटोल करत रहलें आ शुकुल जी जिद। आखिर में गांधी जी मान गइले आ कलकत्ता अधिवेशन के बाद आवे के सकरले। गांधी जी चम्पारण में निलहा किसानन पर होत अत्याचार के देखले त बहुत दुखी भइले ले आके सत्याग्रह आ अहिंसा के जवन हथियार दक्षिण अफ्रीका में अजमवले रहेले एहिजो प्रयोग कइले। 1917 में भइल एह सत्याग्रह से ओहिजा के किसानन के निलहा नरक से मुक्ति मिलल आ कण्ठ–कण्ठ से एके आवाज गुंजल– महात्मा गांधी की जय। मोहनदास महात्मा बन गइले।

गांधी जी के एहिजे से शोषित दरिद्र असहाय जनता के उत्थान के एगो दिशा मिलल। फेर गांधी जी बिहार कई बार अइले आ बिहार के कई प्रांत में घुमले। चम्पारण सत्याग्रह के बाद महतमा गांधी बिहार के गाँव–गाँव में पुजाये लगले। एही क्रम में गांधी जी के आगमन आरा में भइल। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में आरा के विशेष उपलब्धि रहल बा।

बाबू कुँवर सिंह के एह धरती पर गांधी जी 4 सितंबर 1920 के पहिला बार अइले। पटना से आरा तक के सफर पसेंजर ट्रेन में भइल रहे। आरा पहिले शाहाबाद जिला में आवत रहे आ एहिजा के कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष विंध्यवासिनी सहाय रहीं। उनका साथे डा. कैप्टन अरुन्जय सहाय वर्मा, चौधरी करामत हुसैन, मंडीला दास, कुनमुन हलवाई उर्फ नंदा गुप्ता आदि नौजवान कांग्रेसी लोग के जिम्मा मिलल गांधी जी के कार्यक्रम के सुफल बनावे के। गांधी जी के एह पहिला जतरा में उनका साथे शौकत अली (स्वतन्त्रता सेनानी आ खिलाफत आंदोलन के नेता), मौलाना अबुल कलाम आजाद, स्वामी सत्यदेव रहले। बात जनता जागरण के भइल, स्वदेशी, खादी आ चरखा के भइल। लोग महात्मा के अपना बीच पा के धन्य–धन्य रहे। गांधी जी ओहि साँझ के पटना लवट गइले बाकी स्वदेश परेम के तितकी एहिजा के नौजवान लोग के मन में जरा गइले। शाहाबाद से हरगोविंद मिश्र, हरनंदन सिंह, सरदार हरिहर सिंह, सरदार रघुवंश नारायण सिंह, सरजू मिश्र आदि नौजवान लोग स्वदेशी के प्रचार शुरू कइलस।

लगभग साढ़े छौ बरिस बाद 28 जनवरी 1927 के गांधी जी फेर से आरा अइले। अबकी बार साथे कस्तूरबा गांधी, उनकर बेटा देवदास गांधी, लेखक– कृष्णा दास (Seven Months with Mahatma Gandhi: Being an Inside View of the Non & Cooperation Movement 1921–1922. Vols- I and II), डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आ कइगो काँग्रेसी नेता लोग आइल रहे। जवन सभा के आयोजन भइल ओहमें गांधी जी खादी के प्रचार और दलित लोग के उद्धार जइसन कार्यक्रम के बढ़ावा देवे पर जोर देले। एह कार्यक्रम के बाद गांधी जी आरा में दू जगह गइले। आरा रमना के तरी मोहल्ला में स्थित बाल हिंदी पुस्तकालय जवन आपन साहित्यिक गतिविधि से स्वतंत्रता संग्राम में अलग भूमिका निभावत रहे। स्वतंत्रता सेनानी देशबन्धु चितरंजन दास एह पुस्तकालय खातिर एक हजार रोपेयो बहुत पहिले देले रहले जवन मौजूदा समय के हिसाब से कई लाख के बराबर रहे। ओह पइसा से पुस्तकालय भवन के एगो कमरा बनल आ किताब किनाइल। गांधी जी उ नया कमरा के उद्घाटन कइले। ई पुस्तकालय आजो आपन इतिहास बता रहल बा। आरा शहर जैन संप्रदाय के गढ़ ह आ एहिजा कई गो ऐतिहासिक चिह्न उपलब्ध बा। ओहि में एगो प्रसिद्ध जगह ह आरा जेल रोड में श्रीदेव कुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान जवना के ओरिएंटल लाइब्रेरी कहल जाला। एह शोध संस्थान में पुरान पाण्डुलिपियन के बहुत बड़ा संग्रह बा। गांधी जी अपना दुसरका जतरा में एहिजो पहुँचलन आ प्राचीन भारत के ग्रंथन के दर्शन कइले।

गांधी जी तिसरा बेर आरा 25 अप्रैल 1934 के अइले। एह जतरा में राजेन्द्र बाबू, काका कालेकर, प्रभावती देवी (पत्नी, जयप्रकाश नारायण) आ कई गो आउर नेता लोग साथे आरा आइल। ओह घरी शाहबाद जिला पार्षद राधामोहन सिंह रहीं। आरा के पास उनकर गाँव बा– जमीरा। गाँधी जी उनकर आग्रह के मान रखत जमीरा पहुँचले आ ओहिजा के जनता जनार्दन के बीच आपन बात रखले। ओहि दिन आरा रमना मैदान में एगो आम सभा भइल। दीन दुखी जनता गांधी जी के दर्शन खातिर दूर दूर से आइल रहे। खादी आ स्वदेशी के चर्चा के साथे स्वदेश परेम के चरखा नधाइल। जनता पुकार उठल– महतमा गान्ही के जै। सभा के बाद गांधी जी आरा मौलाबाग में वंशरोपण राम चौधरी के गार्डेन हाउस में तनिक देर आराम कइले आ आगे बक्सर के जतरा पर निकल गइले।

भोजपुर के धरती पर गांधी जी के आगमन के सै बरिस पूरा हो चुकल। आरा शहर में गांधी जी से जुड़ल कइगो निशानी अब मिट रहल बा। कुछ पर व्यवसायिक कब्जा त कुछ समय के मार पड़ल। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भोजपुर आ आरा शहर के नाम अमिट त बा बाकि एकर रक्षा सुरक्षा के जिम्मेवारी सरकार के साथे विशेष रूप से हमनी के बा। एह शताब्दी वर्ष पर गाँधी जी के साथे स्वतंत्रता संग्राम में शामिल भोजपुर (शाहाबाद) के सब वीर लोग के नमन। ❑❑

❍ उत्तर नगर, नई दिल्ली

चाणक्य नीति

ई चाणक्य नीति में श्री दिनेश पाण्डेय जी द्वारा लिखल सरल आ रोचक ढंग से काव्यात्मक भावानुवाद प्रस्तुत कइल जाई। एकर मूल उद्देश्य अपना भाषा के लोकप्रियता बढ़ावे खातिर कइल उद्यम आ साहित्य के समृद्धि बा।

दिनेश पाण्डेय

चउदहवाँ अध्याय

धरती प तीने रतन ह,
पानी अन्न सुबानीं रे!
पत्थल टुकड़न के धरे,
रतन नाँव अग्यानी रे! 1

तरुवरि आपन पाप के,
इहई फर हरदम दे रे!
रोग गरीबी दुख असह,
ब्यसनजाल रग–रग घेरे। 2

वित्त मीत तिय फिन मिले,
फिन भेंटे जायदाद रे!
ई सब फिन–फिन पाइहें,
देहिए बा अपवाद रे! 3

बरियारो बैरी बिजित,
सनमत जब होखसि बहुते।
धार–धार बरखत घटा,
सहज निवारे तिनकन ते। 4

तेल बूँद पानी–सतह,
दान सुपातर, गुप्त खले।
ज्ञानवन्त से शास्त्रमत,
स्वयम् सहज पसरत चले। 5

जवन सुमति जागे तनिक,
धरमकथा मरघट रोगे।
ऊ मति हरदम होय जदि,
कवन मुकुतिसुख ना भोगे? 6

जवन सुमति जागे जखन,
जब मन में पछिताए रे!
ऊ मति अगते होय जदि,
के न परमपद पाए रे! 7

दान तपस्या वीरता,
ग्यान विनय नय अइसन रे!
इहाँ मिलस बहुते रतन,
तब फिन अचरज कइसन रे! 8

जे बड़ुवे मन में बसल,
कतिनो तान नगीचे बा।
नियरो रहि के दूर अति,
जे ना दिल के बीचे बा। 9

जे चाहत अनभल सदा,
मधुर–मधुर बतिया बोले।
हियहारी सुर गावते,
बधिक मिरिग ढूँढ़त डोले। 10

अति नगीचपन से नसे,
ना पावे फल दूर बसी।
बीचोबीच हबेख ले,
अगिनी गुरु राजा रुपसी। 11

अगिनी जल जड़ नार अहि,
राजबंस के नर–नारी।
एन्हनि सेईं जुगत से,
चूके जान परत भारी। 12

मानुस गुनगर ही जिअल,
जिअल धरमगुनी ही मही।
बिन गुन धरमे जे जिअल,
तिनकर जिअल बस अइसहीं। 13

जे चाहे एके करम,
मुट्ठी में संसार पले।
परनिन्दा–खेती चरत,
जीभ धेनु बिलगा पहिले। 14

बात बदे अवसरि सरिस,
असर सरिस मिठपन घोले।
समरथ सम गुसियाय रे,
उनुके जग पंडित बोले। 15

बड़ुए त एकहीं जिनिस,
तीन तीन के लउके रे!
माटी मँसगर कामिनी,
जोगी, स्वान कामचेरे। 16

धरम तत्त ओसध रहस,
घर–अपजस सहवास–कथा,
कबहुँ केकरो ना कहे,
भोग कुभोग सुनल बिरथा। 17

मौन धरी कोइलरिया,
शांत बितावे दिन–रैना।
चढ़तहीं असर बसंती,
बोलत हियहारी बैना। 18

धरम अरथ अन्न ओसधि,
पथबोधक गुरु के कहना।
नीके तरे सँगोर लीं,
जदि जग में होए रहना। 19

दुज्जन संगति त्याग मन,
साधुन संग सहमेल रे!
नेक करम दिन–रात कर,
बूझ अनित नित खेल रे! 20

कठिन सब्दन के अर्थ–

सुबानीं– सुंदर बचन। वित्त– धन।
जायदाद–भूसंपदा। सुपातर– सुपात्र, योग्य व्यक्ति।
खले– दुष्ट में। नय– शिष्टाचार, प्रोटोकॉल।
हबेख– उपभोग। अहि– साँप। सेईं– सेवन करीं,
उपभोगीं। बिलगा– दूर कर। जिनिस– वस्तु।
मँसगर– मांसल। स्वान– कुत्ता।
कामचेरे– काम के दास, लंपट।
छंद संकेत– अभिनव मृगां क रेखा।
13–14 मात्रा

शिखरन से आगे

श्री अशोक लव हिंदी साहित्य खातिर एगो सुपरिचित नाम हईं। हिंदी साहित्य के समृद्धि के कहानी बिना ऊहाँ के नाम के जिक्र के पूरा नइखे हो सकत। शैक्षणिक आ साहित्यिक कृतियन के रूप में अब ले लगभग 150 रचना–ग्रंथ प्रकाशित हो चुकल बा। ईहाँ प्रस्तुत बा ऊहाँ के सबसे अधिका चर्चित उपन्यास 'शिखरों से आगे' के भोजपुरी अनुवाद 'शिखरन से आगे' के कुछ अंश। ई धारावाहिक पाठकगण के सोझा आजु ले 'चोटी से आगे' नाँव से राखल जात रहल ह।

मूल उपन्यासकार
अशोक लव

अब आगे के कहानी...

ऊ उठि के किताबन में धइल चिट्ठियन के निकाल लेत बाड़ी। नितिन के चिट्ठी! कागज के ऊ टुकड़ा, जवन कवनो दिने उनके प्रेम के खोतवना के तिनका–तिनका उड़ा दिहले रहे। ऊ चिट्ठी पढ़े लागत बाड़ी– काँपत हाथ से लिखल ई चिट्ठी हमरा कायर मानसिकता के प्रमाण होई। तबो हम ई चिट्ठी लिख रहल बानी। हम तहरा से कबो साँच ना कहनी। एही से ई चिट्ठी लिखे के साहस बटोर पवनी हँ। हम तहरा आँखि के झिलमिलात आकाश में पँवड़त सपनन के देखले रहनी। सोचले रहनी कि साथे–साथे जीअत एकहक गो सपना साकार कइल जाई। काश! सपनन के देखबे ना करती, सोंझे हकीकत में जीये लगतीं।

ई सपना कुल हमके बड़ा सतवले बा। अमेरिका पहुँचल, ईहो सपने रहल। एहके पूरा करे में लाग गइनी। अमेरिका त आ गइनी बाकिर जिनगी पाछे तहरे साथे रहि गइल। आजु हम का बानी? चिहूकीह मत। हमार बिआह हो गइल बा। हम कइनी ना, करे के पड़ल। अमेरिका अइनी त रमाकांत जी अपनही निवास पर रहे के व्यवस्था क दिहले। ऊ हमरा पढ़ाई के खर्चा वहन कइले रहले। बदला में हम उनका होटल के काम देखे लगनी। उनका अहसानन के बदला एह रूप में उतारत रहनी।

उनकर बड़की बेटी सुनंदा हमरा ओर आकर्षित हो गइली। असल में ओहके मरदन के साथ के आदत पड़ चुकल रहल। ओकर खुलल नेवता हम कई बेर अस्वीकार कइनी। एहीजा मुक्त यौन–संबंध सामान्य बात बा। एकर नैतिकता से कवनो लाग–लपेट नइखे। हम सुनंदा के के तरे स्वीकार करतीं? हमरा ईयाद में तूँ जे रहलू, तहरा खातिर प्यार रहे, तहार चेहरा हमेशा हमरा सोंझा झलकत रहे।

सुनंदा सुंदर रहे, आकर्षक देहिं। मरद तुरंते रीझ जाएँ। फेर मरदन के खींचे के सगरो हथकंडा ओकरा आवत रहल। हमरा भीतरी हमार पारिवारिक संस्कार रहल। ई संस्कारन से हमके हमेशा बल मिलल बा। सुंदर जवान लइकी के आकर्षक देह के गुदगुदी हमके विचलित ना क पवलस।

ओह दिन रमाकांत जी कवनो काम से बाहर गइल रहलें। होटल के जिम्मेदारी हमनी दूनो जाने पर छोड़ गइल रहलें। गदबेर होते सुनंदा पीये लगली। हम उनके समझवले रहनी– पापा ईहाँ नइखन। आजु मत पीअ। ओकरा पर हमरा समझवला के कवनो असर का पड़े के रहे। अपना बापो ले के कुछ समझते ना रहल।

आछा–खासा नशा चढ़ि गइला पर ऊ कमरा में चलि गइल। ओहिजा गइला के पाँच–दस मिनट बाद घंटी बजावे लागल। कबो केहू के बोलावे, कबो केहू के। काम कुछऊ ना रहत रहे। सभे परेशान हो गइल। एक घंटा बीत गइल। ऊ होटल कपार पर उठा लिहलस।

मैनेजर जॉनसन हमरा से कहलें– "सर, रउवे बेबी को समझा सकेनी। ढेर पी लिहले बाड़ी। ऊहाँ के घरे छोड़ आईं।" हमहूँ इहे उचित समझनी।

सुनंदा के लगे जाके ओहके समझावते रहि गइनी। ऊ चुपचाप सुनत रहल। ओहके घरे चले खातिर कहनी त मुस्कुराए लागल। ऊ उठ के केंवाड़ी बंद क लिहलस। हमरा कुर्सी पर पैर धरत बोले लागल– "तूँ अपने आपके का समझे लऽ? हमरा में का कमी बा कि हमरा के अपना लगे ना फटके देलऽ? तूँ जान–बूझ के हमार उपेक्षा करेल। तूँ हमरा के नइखऽ जानत। हम जवन चहले बानी, ऊ सब पवले बानी। तूँ त हमरे टुकड़ा पर पेट पालत बाड़ऽ। हम आज चाहीं त तहार अमेरिका में रहल कठिन हो जाई। फेर वापस जइहऽ। इंडिया के सड़ल–बजबजात गलिन में धक्का खइह!"

हम कुछू कहतीं कि अचानके ऊ हमरा पर टूट पड़ल। ऊ एक–एक क के हार कपड़ा फाड़ दिहलस। भूखाइल शेरनी जइसन उ हमरा के नीचे पटक दिहलस। कमरा के सगरो सामान गिरत रहे। बहरी आवाज जात रहल। कायरन जइसन हम समर्पण क दिहनी।

अमेरिका के संस्कृति के ई रूप हमरा के भितरी ले डेरवा दिहलस।

दू महीना निकल गइल। एक रात रमाकांत जी आ उनकर पत्नी हमरा के बोलावल लोग आ कहल लोग कि सुनंदा के गर्भ ठहर गइल बा। तहके ओहसे बिआह क लेबे के चाहीं।

हम सुनंदा से मिलनी। उनसे गर्भपात करावावे खातिर मनावत रहनी। ओकरा सामने हाथ जोड़नी, रोअनी –गिड़गिड़इनी। ओकर एकेगो जवाब रहे– "तहरा हमरा से बिआह करहीं के पड़ी।"

अमेरिका में ढेर लोग से संपको ना बना पवले रहनी। कॉलेज से होटल आ जाईं। ओकरा बाद पढ़ाई करत रहीं। हमरा सामने दोसर कवनो डगरे ना रहे। एतना पइसो ना रहे कि वापस लवट आईं

अंत में उहे लोग जीतल।

पहिलका रात के सुनंदा हमरा के विवाहित जिनगी

के पहिलका उपहार दिहली– ओहके गर्भ ठहरलहीं ना रहे। हमरा से बिआह करे के षड्यंत्र रहे।

हमार दुर्भाग देखऽ! अमेरिका के चकाचौंध से प्रभावित हो के आपन धरती छोड़ि अइनी। आपन माटी छुट गइल। आपन प्रेम छुट गइल। अब शराब में धुत्त रहे वाली मेहरारू बा, एगो बेटा बा। विलास वाला सामानन से भरल–पड़ल बा घर। घर! जवना के दमघोटू छत आ देवाल के मधे एगो चलत–फिरत लाश!

घर अबहिन कहाँ बनल बा! तहरा आँखि में झिलमिलात आँगन तहरा सथवे रहि गइल बा। पाख कटा गइल बा। लवटियो नइखीं सकत। कबो नया पाँख जाम जाई त ओहदिने उड़ के आ जाएब– ओह देशे, जवन हमार आपन बा। जवना के कण–कण में अपनापन के गंध भरल बा। जहवाँ के हवा–बेयार में तहार गंध रचल–बसल बा।

जबे लवटेब, सीधा तहरे लगे आएब। तहरा कान्हा पर मुड़ी ध के खूब रोवे के चाहत बानी। दुइए पल खतिरा सही, अपना कानहा के सहारा दे दीहऽ।

का क्षमा कऽ देबू?

कृति जब–जब चिट्ठी पढ़ेली, उनुके आँख छलछला आवेला। नितिन खातिर सहानुभूति आ खीस, दूनो के भाव भर जाव। आजुओ इहे भइल। उहो काहें एतना साल से एह चिट्ठी के सम्हरले बाड़ी? आ नितिन!

ऊ त फेर चिट्ठिए ना लिखले। ना जाने कवना दशा में हो. इहें? ऊ उनके भूला गइल होइहें। कवना कारने ईयाद रखिहें? अपना चारू ओर ताना–बाना बिन के सभे ओहि में भूला जाला।

नितिन के ईयाद के साथे केतना बरीस ऊ बिता दिहली। कबो केहू ओर ध्याने ना गइल। विनोद! पता ना कब विनोद का ओर खींचात चलल चलि गइली? एकदम पत्थर जइसन व्यक्तित्व रहल ! आँखि में उपेक्षा के भाव आ व्यवहार में रूखापन! अपने में डुबल! आत्म–केंद्रित! केतना गांभीरता रहे।

केहू ना जानत रहे कि ऊ आदमी भीतर से एतना टूटल होई।

ऊ शुभी के बारे में कबो बतइबे ना कइले। शुभी उनुका जिनगी में फेर से ना अइती त शायद बतइबे ना करते। आप पीड़ा अपनहीं में समेटले रहें। उहो त नितिन के बारे में उनसे आजु ले नाहीए बतवले बाड़ी।

दूनो जने के हियरा के पीड़ा एक–दोसरा के कँपकपी के सुनले होई। ऊ लोग एही से लगे आवत चलि गइल लो। नितिन के ईयाद अलोत होत चलि गइल। उनहूँ के मन ईयाद मेटा गइल होई। तबे त चिट्ठियो ना लिखले। अब पता ना कइसे ईयाद आ गइल बा।

ऊ आजु के आइल चिट्ठी उठावत बाड़ी। खोलत बाड़ी। पढ़त बाड़ी।

प्रिय कृति!

बरीसन बाद चिट्ठी लिखत बानी। तूँ आपन गृहस्थी बसा लिहले होखबू। तहरा जइसन अर्धांगिनी पा के तहार पति धन्य हो गइल होइहें। हम अगिला हप्ता में दिल्ली आ रहल बानी। आवते फोन करेब। हमार एतने अनुरोध बा कि आ के मिलिह

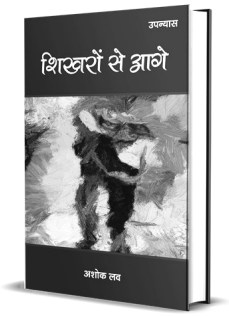

जरूर। बाकी मिलला पर।

छोटी चुकी चिट्ठी। बस!

ऊ चिट्ठी पर लिखल तिथि से हिसाब लगावत बाड़ी। उनके त एही हप्ता में आवे के चाहीं।

■

विनोद के परीक्षा में निरीक्षण के ड्यूटी करत बेरा चिं. तन–मनन करे खातिर ढेर समय मिल जाव। परीक्षार्थी लोग अपना लिखला में मग्न रहत रहे लोग। ओह लोग के बीचे घूमत बेरा कई विचार मन में आइल करे। कइगो कविता आ चित्र के भाव उनके ओही बेरा मिलल रहे।

ऊ स्वामी अखिलानंद जी के बारे में सोचत रहले। उनका से भइल चिन्हा–परिचय से उनकर जिनगी के बारे में नया सोच मिलल रहे। पहिलके भेंट के बाद उनके लागल रहे कि जिनगी में केहू मार्गदर्शक के भइल नितांत जरूरी होला।

श्रीमती नंदा कक्षा में अइली त ऊ चिहूक गइलें।

''जाईं, चाय पी आईं। आधा घंटा खातिर रिलीव करे अइनी हँ। अगिला कमरा में ताऊ जी बाड़ें, उनहूँ के रिलीव करे के बा।'' श्रीमती नंदा ताऊ जी शब्द पर जोर देत कहली।

''धीरे बोलीं महाराज! ऊ सुनले त हमरो जान खा जइहें।''

विनोद मुस्की मारत कहलें आ चलि गइलें।

श्रीमती नंदा रसायनविज्ञान के विभागाध्यक्ष रामेश्वर सिन्हा के नाँव ताऊ जी धइले रहली। ताऊ जी शब्द के उनुकर व्याख्या अद्भुत रहे। 'बछिया के ताऊ' मुहावरा से 'ताऊ' लेके ओकरा साथे 'जी' व्यंग्य रूप में लगा दिहले रहली।

ऊ पंद्रही मिनट में कैंटीन से लवट अइलें। श्रीमती नंदा से बातचीत भइले कई दिन हो गइल रहे।

''एतना जल्दी आ गइनी? लोग त आधा घंटा के बदले पैंतालीस–पैंतालीस मिनट लगा आवेला।''

''आपसे से बातचीत कइले एतना दिन हो गइल। सोचनी हँ कि आपसे दस–पंद्रह मिनट बतिआइयो लेब। आपसे बात क के दिन भर खातिर एनर्जी मिल जाला।'' ऊ हँसते कहले।

''अरे! एनर्जी त ताऊ जी के मिलेला। तहरा पर त हमार कवनो असरे ना होला। एतना बन–ठन के आवेनी, आप आजु ले कबो हमार प्रशंसा कइले बानी? ठीक बा, उमिर में आपसे बड़ बानी, बाकिर अबहिनो कुछू–ना–कुछू त बाचल–खुचल बड़ले बा। एगो हउ ताऊ जी बाड़े, हमरा के देखते उनुके करंट लाग जाला। बोलिए ना पावेलन। अब पचपन–साठ के बुढ़वे खूसट हमरा पाले पड़िहें।'' श्रीमती नंदा खिलखिलाए लगली।

दूनो जने दुआरी पर आ गइलें।

क्रमशः

❍ **अनुवादक : केशव मोहन पाण्डेय**

रोटी

प्रतीक त्रिपाठी

बाप छूटल, माई छूटल
मेहरी छूटल, बिटिया छूटल
छूटल गाँव औ खेत
रोटी खातिर सगरी छूटल
तब अइनी परदेस

कोरोना आइल नौकरी छूटल
का कहीं किस्मत बा फूटल

काम छूटल, दाम छूटल
भाड़ा वाली कोठरी छूटल
जेकर खातिर सगरी छूटल
अंतिम में उ रोटी छूटल।

❑❑

❍ गोण्डा (उत्तरप्रदेश)

गीत

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

बबुआ लोटेला अंगनवाँ
हुलसि भवनवाँ गइलें ना।

सूरत ओकर मन भावै
भाँवरि घुमि हिय हुलसावे
लखि–लखि बिहँसेला नयनवाँ
हुलसि भवनवाँ गइलें ना।

घरवाँ जरल दिया–बाती
उमगल पियवा के छाती
थिरके पुतरी में परनवाँ
हुलसि भवनवाँ गइलें ना।

मइया राखेलीं ओहार
दादी लुटावेलीं दुलार
ई बबुआ मलय पवनवाँ
हुलसि भवनवाँ गइलें ना।

बबुआ लोटेला अंगनवाँ
हुलसि भवनवाँ गइलें ना।

❍अवंतिका–2, गाजियाबाद (उ.प्र.)

राजेश कुमार जैसवारा
'राज जौनपुरी'

गजल

जलल बा हिया में अगन धीरे–धीरे
मिलल जब नयन से नयन धीरे–धीरे

जुड़ल प्रीत के डोर जबसे ह उनसे
सजावे लगल मन सपन धीरे–धीरे

नशा प्रीत के लग गइल बाटे अइसन
रहत मन ह खुद में मगन धीरे–धीरे

बहक जाला तन मन ना धीरज धराला
बुलावेलु चुपके सजन धीरे–धीरे

अधर पऽ पड़ल जब अधर बाटे तहरा
बढ़ल तब बदन के तपन धीरे–धीरे

घटा बन के जिनगी पऽ अइसन बरसलू
खिलल दिल के सउँसे चमन धीरे–धीरे

गजल 'राज' अइसन कहेला की सीधे
छुवेला हिया के कहन धीरे–धीरे

❑❑

❍ झूँसी, प्रयागराज (उ. प्र.)

लागल लड़िका के बजार

राम बचन यादव

लागल लड़िका के बजार एहि जुगवै में
कीनैं लड़की के बाप एहि जुगवै में !

तीन–चार लाख रुपइया
पुलिस–प्राइमरी के भैया
साथे एगो मोटर कार एहि जुगवै में
लागल लड़िका के बजार एहि जुगवै में!

जवन जुनियर में पढ़ावै
सात से आठ लाख फुरमावै
कार दतवा चिआर एहि जुगवै में
लागल लड़िका के बजार एहि जुगवै में!

दस लाख टीजीटी के पार
माई – बाबू मांगैं कार
देदा लड़की के डाल एहि जुगवै में
लागल लड़िका के बजार एहि जुगवै में!

गरम पीजीटी के बाजार
पनरह – बीस से भी पार
माल महंगा बा तोहार एहि जुगवै में
लागल लड़िका के बजार एहि जुगवै में!

सिविल–प्रोफेसरन के हाल
जनि पूछा हमरे लाल
माल बड़ा इ कमाल एहि जुगवै में
लागल लड़िका के बजार एहि जुगवै में!

डायन महंगाई के भाप
बिसुरैं लड़की के बाप
चेहरा लउटैं ले उदास एहि जुगवै में
लागल लड़िका के बजार एहि जुगवै में!

❑❑

❍ आदित्य नारायण राजकीय इंटर कॉलेज
चकिया, चंदौली (उ.प्र.)

गजल

शिव कुमार पराग

अजबे भइल विकास, सोच में परल हईं
मछरी चढ़ल अकास, सोच में परल हईं

पंचतारा होटल में छप्पन भोग चढ़ल
केतने करें उपास, सोच में परल हईं

मजदूरन के छँटनी धुआँधार होखी
नाहीं रहल कयास, सोच में परल हईं

जगर–मगर दुनिया के फेरा में केतने
खा तारन सल्फास, सोच में परल हईं

आगे बढ़े बदे का–का होखे लागल
बढ़ते जाय खटास, सोच में परल हईं

कमरन में बढ़ि गइल सजावट, चमक–दमक
जिनगी भइल उदास, सोच में परल हईं

का जाने केतना धन–दउलत चाहत बा
नाहीं बुझे पियास, सोच में परल हईं

आम आदमी के कतहूँ सुनवाई ना
छवले बाड़न खास, सोच में परल हईं

❑❑

❍ वाराणसी (उ.प्र.)

कउनो नेवता ना आइल बा

सन्नी भारद्वाज

साँसत में जीव देखीं, सभकर अझुराइल बा,
सटला त गइला, करोना बऊराइल बा।
छुछो पर पूछ ना, ई कइसन जमाना बा,
परोजन त दूर कउनो नेवता ना आइल बा।।

तम्बू न चाँदनी न झूमर न झूमका,
मुनिया के नाच न मनोहरा के ठुमका।
रिमझिम के टेंट न दुपाला गुलाम के,
लगन बुझाइल असो तनिको ना काम के।

दू साल बीत गइल खरेन्दा के हाथी के,
केहू के दुवार ना गजानन पूजाइल बा।
परोजन त दूर कउनो नेवता ना आइल बा।।

हाल हलुवाई के का हम सुनाई,
डेट आगे सभकर, बादे लिखाई ।
बेबी सुभाष के त बथत कपार बा,
देके एडवांस सभे कइले लचार बा।

बाबा जी रोजे भेजावे संदेशा,
अच्छा! घबरा मत दिनवा नियराइल बा।
परोजन त दूर कउनो नेवता ना आइल बा।।

खोवा आ छेना, पनीर अऊर दुध के,
परी नवंबर में दिनवा हो बुध के।
घुरा बहादुर के खबर भेजवा द,
बिग्गु, मुराहू के दिनवा बता द।

ओतने जोगाड़ चाही करबा का भाई,
अइसन ई भइल कि बुद्धि भुलाइल बा।
परोजन त दूर कउनो नेवता ना आइल बा।।

भाड़ा के गाड़ी के हालत बा रिस्की,
टेक्स बरियार जेकर नंबर बा टेक्सी,
असो के लगन में लोन ना बुझाई,
घरवें के परानी अब गड़िया चलाई।

परसों भेंटाइल रहन नीबिया के पाँडे,
कहलन कि बूझीं खोराकी नसाइल बा।
परोजन त दूर कउनो नेवता ना आइल बा।।

नथुनी के नाती ह नयका दुकान के,
बाबा लगाइब सही दाम हम समान के।
चिन्नी रिफाइन क जइसे सभे कहीं,
आजे के दाम ओह दिन कुछो रही।

मई के बात रहे गइल नवंबर,
धइलस कपार बाबा मति मराइल बा।
परोजन त दूर कउनो नेवता ना आइल बा।।

परोजनो में होले एगो परोजन,
उठावेले सभका से बेसी उ भोजन।
मिठाई आ पुरी मिजाजे में डोले,
चलावे के लूर नाही, होखे त बोले।

मुराहू त कहले कि बाबा बताइब,
भुंवरा के बाकिर पराने सुखाइल बा।
परोजन त दूर कउनो नेवता ना आइल बा।
परोजन त दूर कउनो नेवता ना आइल बा।।

❑❑

❍ कैमुर, भभुआ (बिहार)

रामधन

डॉ. रजनी रंजन

दह-दह दहकत जमीन पर दरार के निरेखत रामधनी के गोड़ के गरमी माथा पर चढ़ गइल। सुरुज काओर देख के मने-मन कहे लगले- "मने कि तू ठानिये लेले बाड़ऽ कि हमरा के गाँव में रहे ना देबऽ। तबकी बरीस त तहार लीला कुल धान के झवाँ देहलस, फरला से पहिलहीं। एहू बरीस तू इहे कइले बाड़ऽ। केतना रमेसवा अपना साथे हमरा के शहर ले जाये खातिर मनवलस बाकिर हमरा आपन गाँव छोड़ के जाये के मन ना करेला। अब घर कइसे चली? रउरे बताईं। दू साल से सुखाड़ होत बा। कवनो सहायता कतहूँ से एक टाका ना मिलल। के केकरा के देखेला? जे तहार मन घमाइये के बिहँसता तऽ तू घमा। हमहूँ तनी परदेश घूमिये आइब। तहरो मनसा पूरी आ हमरो जियरा के शहर देखे के हुलास मिट जाई। मन लागी त बाद में बाल-बच्चन के ले जाइब आ तब तू ई जमीनिया के जेतना मन करे खोरीह, फड़ीह आ जरीह।" गोड़ के बथा से उनकर सपन टूटल। ऊ घरे आके बिचार कइलन कि हमहूँ अबकी परदेश जाएब।

अगिला छठ में जब रमेसवा आइल तब रामधन आपन मन के बिचार ओकरा से कहलन आ जाये के तइयारी शुरू हो गइल। छठ के बाद रामधन रमेसवा संघे कलकत्ता चल गइलन। जाये से पहिले घर-परिवार के सब जोगाड़ कइलन। कुछ जमीन पर करजा लेके गइलन। कलकत्ता में एगो मड़इयो खातिर पाँच सौ रुपिया किराया रहे। एक सौ रुपिया रोजाना पर एगो फेक्टरी में काम मिल गइल। बाकिर खटानी खूब रहे। भोर सात बजे से रात नौ बजे ले काम होखे। फेर त मड़ई में घुसला पर कवनो काम करे के मन ना करे। बस खटिया पर पसर जास। नींदो ना आवे। मड़ई में खटिया से तनिके अधिक जगह रहे जहाँ गोड़ राख के ठाढ़ भइल जा सके। एतना बड़का घर छोड़के ऊ मड़ई में रामधन के नींद ना पड़े।

पइसा कमाये खातिर रामधन शहर त आ गइलन बाकिर उनका शहर रास ना आवे। बड़ी खुश रहलन कि शहर में हमहूँ आपन परिवार संगे रहब, बाकिर अइसन बिपत आइल कि लोग आपन आपन केवाड़ भीर के रहे खातिर बिबस हो गइले। अब त रामधन के आउर खराब स्थिति हो गइल। नौकरी छूट गइल। जुगाड़ चाह के घरे लौटे के जुगाड़ ना हो पाइल। रामधन बंद घर में अब एकदम अकेले हो गइले। खाये के ना मिलत रहे त मोबाइल रिचार्ज खातिर पइसा कहाँ से आइत। एह से घर के लोग से बातचीत बन्द हो गइल। दू दिन तऽ पानी पी के कटले पर तीसरका दिन कहले कि जब मरहीं के बा त घर में काहे?

अचानक उठले, एगो गमछा से कस के आपन मुँह बन्हलन आ दूसरका के पगड़ी बनवलन। पाकिटमनी उठा के शमशान ओरी चल देहले। पाकिटमनी में पइसा तऽ ना रहे, अपना परिवार के एगो फोटो आ फोन नंबर रहे।

एकदिन भोरहीं एगो महिला के शमशान के दरवाजा पर देखलन। ऊ महिला रसरी से एगो लाश खींचत रहे। साथ में एगो पाँच साल के आ एगो तीन साल के लइकी रहे। रामधन दउड़लन ओने। महिला के लोर रुकत ना रहे बाकिर ऊ खाली एतने कहत रहे- चूप रहऽ लोग बबी! अब आ गइनी सन। अब तहरा पापा के शिकायत ना रही कि हमार अंतिम किरिया ना भइल। तनी देर रसरी खींच के ऊ महिला भीतराते धम्म से जमीनिये प बइठ गइल आ अकेलहीं बोले लागल- केहू ना आइल जी। बड़ी निहोरा कइनी ह। राउर बाबुजी भी ना अइनी। भाई लोग कहे लागल- कोरोना हो जाई, लाशवा ओनिये छोड़ के घरे चले के। पुलिस अनाम कहिके कतहूँ डलवाइये दी। बाकिर.....रउरे बोलीं? कइसे हम रउरा के लावारिस बनावे दीं। सात जनम साथ निभावे के कसम देहले रहनी त निभावे आइल बानी। बाकिर भीतरी कइसे जाईं...? कहत पूका फाड़ के रोवे लागल। लइकन सब माई संगे रो रोके लरुआ गइल रहलन सन।

रामधन तनी रुक गइलन। फेर साहस करके कहलन, "ए बहिन! हम बानी नू। तहार भाई। साहस करऽ। उठऽ। गलत मत बुझऽ। हम एहीजा रहतानी। जेकर केहू नइखे, ओकर सहायता करीले।" -ई कहते लाश कंधा पर उठा लेहले। ले जा के लाइन लगा देहले। रसीद कटा के महिला के हाथे दे देहलन आ बता देहलन कि एक घंटा बाद समय आई। एगो बेंच रहे, ओहिजे सब माई बेटी के ले जाके बइठा देहलन।

एक घंटा पूरे से पहिलहीं फेर ऊ महिला लगे आ गइलन, "चलीं! राउर नमर आ गइल। बचवन के हाथ पकड़ के ऊ महिला चुपचाप रामधन के पीछे-पीछे चल देहलस। उहे महिला सब संस्कार निभवली बाकिर जब लुकेर हाथे लिहली तऽ बड़की बेटी जोर से चिलइलस, "माँऽ, पापा के मत जरावऽ। दरद होई!"

महिला दूनो बेटी के, एगो के कोरा में आ एगो के हाथ पकड़ के परिकरमा कइली आ बेटी के चिलइलो पर लुकेर चिता में घुसेड़ दिहली। जरत चिता देख के बड़की चिलइलस, "माँ तू पापा से प्रेम ना करेलू! तू कसाई हऊ। अब हम तहरा से कबो ना बोलब। तहरा संगहूँ ना जाएब।" - कहते हाथ झटक देहलस। रामधन तुरते ओकरा के पकड़लन आ कहलन, "ए बबी! खिसिया मत। हई देखतारु नू। जेतना लोग मरल बा ऊ बेमार रहे। ओकरा के ना जारल जाई त जे जिन्दा बाँचल बा, सब कोई मर जाई।"

"ऊहूँ हू हू....ना अइसन ना होई।" -रोवते-रोवते कहलस। फेर रामधन कहलन, "अच्छा त बतावऽ, तहार दादी-दादा, चाची-चाचा, फुआ-फूफा, केहुए एहिजा काहे ना आइल ह।"

बालमन तुरते जबाब देहलस, "चाचा कहलन कि

हमनियों के कोरोना हो जाई त हमनियो के मरिये जाएब सन। एहीसे ना अइलन।''

रामधन कहलन, ''हँऽ। ठीक। तऽ ऊ लोग अइबो ना कइल आ तु अपना माई के दोष देत बाड़ू।''

अब बेटी रामधन के धेयान से देखत रहे। रामधन समझवलन तऽ मान गइल। फेर ऊ महिला ओहिजे खूब बिलख–बिलख के लइकन के अँकवारी भर के रोवलस। घंटन रो के जब मन तनी थिर भइल त उठल आ रामधन के लगे पँहुचल। हाथ जोड़ के कहलस, ''पइसा तऽ नइखे, हई अँगुठी बा, ले लीं आ रउरो नहा–धो लेब। ऊहों के कोविड के रोगी रहनी।

रामधन कहलन, ''ई का? हम बहिन कहनी ह नू! तऽ रउरे कहीं, राउर भाई रहतन त का करतन?''

लोर पोछत महिला कहली, ''हम त अपना माई–बाबू के अकेलहीं संतान हईं। एही से बाबूजी हमार बड़ घर में बिआह कइलन कि बिपत पड़ला पर परिवारे काम आई। बाकिर कोई साथ ना देहलस। खैर! दोष केहू के ना देब। ई रोगे अइसन बा। केहू लगे ना जाई।''

रामधन कहलन, ''अब जे भइल से भइल। लइकन के सम्हारीं। घरे जाईं।''

''कइसे जाईं? सास–ससुर लोग घर में घुसे ना दींहे अबहीं। माई–बाप के घर बा बाकिर दूर बा। बंदो बा। जबसे ऊ लोग गंगालाभ कइलें, बंदे बा।''

''कहाँ बा?'' –रामधन पुछलन, ''आ भाड़ा?''

''साल्ट लेक। बड़ी दूर बा। घर में कुछ पइसा होई। ऊहाँ पँहुच के दे सकीले। ऊहों लोग घर में घुसे दी तब नू।''

रामधन कहलन, ''रुकीं! हम आवतानी।''

एतना दिन में पुलिस, समाजसेवी आ कुछ मंत्री लोग भी रामधन के चिह्न गइल रहे लोग। तनीये देर बाद रामधन पुलिस लेके अइलन। आमने–सामने बात हो गइल। पुलिस सॉल्ट लेक थाना के सब बात बता के सहायता खातिर कह देहलस। पुलिसे रामधन के साथे लगवलस आ कागज बना के देहलस। पुलिसे रामधन के साथे लगवलस आ कागज बना के दे देहलस। रामधन संगे गइलन। आगे सीट पर डराइबर आ रामधन, पीछे महिला आपन बच्चन के साथ। रस्ता में रामधन आपन कथा सुना के महिला के तनी मन हल्का कइलन। घरे पँहुच के सब ठीक ठिकाना लगा के रामधन लउटे लगलन। महिला कहली, ''रउरो त रहे के दिक्कत बा। तऽ मत जाईं। हेतना बड़ हमार घर बा। ऊपर में हमनी के रहब सन आ रउरा पीछे वाला घर में रहीं। नीचे हम किराया लगा देब।''

रामधन कहलन, ''हमार आ राउर परिचय केतना? लोग का कही?''

महिला कहली, ''रुकीं–रुकीं, ...ओह घरी लोग कहाँ रहे जवना घरी हम आपद में रहनी। मरद के कभी कवनो औरत उठा सकत बा। बाकिर हम रसरिये से सहीयकिरिया करम सब कइनी। ओह घरी के रहे हमरा संगे? जे रहे हमरा साथे ऊहे हमार आपन।''

रामधन कहलन, ''अच्छा ठीक बा। हम आएब आ रहब। बाकिर अभी केतना लोग आफत में बा। उनको हमार दरकार पड़ी। बाकिर बहिन....वादा बा, जइसहीं सब ठीक हो जाई, हम तहरे घरे रहे आएब।''

रामधन के बात सुन के महिला के मुँह पर तनी तोष झलकल। आपन मोबाइल रामधन के देके कहली, ''रिचार्ज बा। भउजी से बात क लेम। मना मत करेब। हमरा लगे दोसरो बा।''

ओकरा बाद ऊ गोर धरे लगली तऽ रामधन कहलन, ''ना–ना, बेटी के हमनी पूजीले। खुश रहीह आ लइकन के ठीक से रखीह।''

रामधन कहते अपना काम पर निकल गइलन। ऊपर देख के कहलन, ए देवा! तहरो लीला अपरम्पार बा। धन तऽ मिलिये गइल। बहिन, भगिनी आ अपनन के आवाज सुनेवाला मशीन। हँसी आ गइल। रामधन आज खूब खुश आ संतुष्ट लउकलन। परिवार के रुप में एगो ठाँह मिल गइल रहे। ❑❑

❍ घाटशिला (झारखंड)

नदिया भेदवा खोलत बिया

डॉ हरेश्वर राय

करिआ
चितउरि बोलत बिया।

कर्फू लागल बहरा बा
सांसन ऊपर पहरा बा
खाली खतरे खतरा बा

नइया
डगमग डोलत बिया।

घरवो के भीतरा डर बा
गांवन से बुरा खबर बा
बांचल ना कौनो दर बा

नदिया
भेदवा खोलत बिया।

❑❑

❍ सतना, मध्य प्रदेश

पवित्र लहर

केशव मोहन पाण्डेय

जमाना बदलताऽ, एकर लछन अब शहर से दूर गाँवो–देहात में लउकता। अब ठेंपो छाप लोग के बात–व्यवहार में जमाना के नवका रूप झलकेला। सुन्नर बाबा ढेर पढ़ले ना रहले बाकीर ऊ करीकी अक्षर के भँइस ना समुझस। पतरा–पोथी के अक्षर–खेल बुझाऽ जाव। सतनारायन भगवान के कथा ईयाद कइले रहलें। ओह में अउरी नीति–नेह आ नेम के उपकथा जोड़ के अपना पंडिताई के प्रमान परोस के कतहूँ आपन आधिपत्य जमा लेस। सगरी जवार में आपन विजय–पताका फहरा लेहले रहलें। गँवई लोग नीति के कथा से अमृतपान के मजा लेला, से सुन्नरे बाबा ओह लोग खातिर सबसे योग्य कथा–वाचक रहलें। पंडिताई से ढेर त नाऽ, बाकीर घर के गाड़ी डगरत रहल। थोर–ढेर खेतो रहल। खेत से जवन ऊपजे, ऊ सगरी उनके आँख के लकड़ी विजय के पढ़ाई के सुपूर्द हो जाय।

सुन्नर बाबा के उठल–बइठल बड़–बड़ लोगन में होखे, से ऊ पढ़ाई के हुनर आ महिमा जानत रहलें। ऊ बड़ा लगन से विजय के शहर भेज के पढ़वलन। जब विजय बी.ए. क के घरे अइले त बाबा के साथे उनके धरमपत्नी रूपो के छाती फूला गइल।

ई गाँव गंडक के कछार पर बसल बा। एह माटी के धन बालू आ बल बैल रहले सों। लोग बजारहूँ जाए खातिर खूब सपराई करेला आ 'टायर' नाध के, सगरो दिन बिता के बाजार करेला। विकास के नाँव पर एह गाँव में बिजली, अस्पताल, इस्कूल आ प्रशासन के बदले गड़हा, बेहाया, झउआ, पटेर आ डाकुअन के छोह रहल। ईहवाँ अभाव चारू ओर बतीसी देखा के खिलखिलात रहल।

सुन्नर बाबा के हियरा में अभावो भरल एह गाँव खातिर बड़ा आदर हऽ। भले खेत के माटी बलुए बा त का हऽ, ऊ माटी के महत्त्व समझेलन। ऊ समझेलन कि माटी महतारी ह आ कवनो माटी चाहें महतारी बंजर होखे के ना चाहेले। उनके ईयाद बा कि एही माटी पर उनके पुरखनो के माटी लागल बा। कि एही माटी पर कबो खेंसारियो खनगर ना होखे, जहाँ आज एहीजा के जीवट लोगन के साहस आ पंपींगसेट के छोह से गेहूँओ लहलहाला। हर साल देखे के मिलेला कि सगरी फसल के कटइलो पर रहर के गदराइल लहर मन में हिलोर मारत रहेला। काहें कि सगरी फसल के बाद रहर जवान होले।

विजय एह टोला के पहीला जवान रहले, जे बी.ए. के पढ़ाई पूरा कइले रहले। ऊ जब शहर से पढ़ के अइले त सुन्नर बाबा के लागल कि उनके बरीसन से चलत एगो लमहर तपस्या पूरा हो गइल। कबो–कबो खुशिओ मिलला पर बितल बात नजरी के सोंझा नाच–नाच के आपन ईयाद दिलावेले। ...सुन्नर बाबा के इयाद बा कि जब विजय छोट रहलन तब के तरे उनकर देख–रेख भइल। रूपा कई–कई बेरा ले चुल्हा जरावे खातिर सोंचते रहि जासु। ना कवनो बहाना मिले, ना कवनो व्यवस्था होखे। कबो–कबो खेंसारी उसीन के नून–मरीचा के साथे केहू तरे पानी के साथे गटई के नीचे सरकावल जाय। कहीं पतरा देखला पर एक–आध सेर सीधा मिले त हाँड़ी पर परई बाजे। बाबा के ओह दिन रसगुल्ला नियर मीठ लागे, जहीया कहीं से जग–परोजन के आज्ञा मिले। उनका ईयाद बा कि जब ऊ खाए जास त बड़का फुलहा लोटा ले के जास। नाक पर ले चढ़वला के बाद भर लोटा दही बोझ के चिउड़ा के मोटरियो बन्हा जाव। खेत से कबो–कबो जौ–खेंसारी ऊपज जाव त जेठ–आषाढ़ के दूपहरिया में सतुआ मिल जाव। बाकीर बेटा के पढ़ाई में कवनो कोतहाई ना होखे। दछिना–जजमानी से जवन पइसा मिले ऊ विजय के पढ़ाई में झोंका जाव। बहाना कवनो होखे, सुन्नर बाबा में परब–त्योहार आ संस्कारन से ढेर मोह रहल। तब्बो ऊ घर के खर्चा में कोतहाई क लेस बाकीर विजय के खर्चा जरूर जाव।

अब, जबकि विजय बी.ए. क के आ गइल बाड़े त चारू ओर खुसुर–फुसुर होता। शिवचन काल्ह कहत रहलन, ''का बाबा? ...अब त हियरा गदगद बा नूऽ? ...बेटा के पढ़ा के एगो लमहर जस के काम कइले बानी।''

रमुना कहत रहल, ''ए बाबा! ...हमरा बाबुजी से कह ना दीं कि ऊ हमरो के पढ़ावस।''

बाबा के एह तरे के ढेर प्रशंसा, खुशी आ अमरख के सतमेझरा बात सुने के मिले। उनके त गोड़ से मुड़ी ले हुलास हिलोर मारत रहे। ऊ बड़ा बारीकी से बुझत रहलन कि आज के जुग में पढ़ला–लिखला के माने खाली नोकरी मिलल ना हऽ, बाकीर पढ़ाई अपने में एगो अनमोल रतन ह। ऊ मोका मिलला पर सबके पढ़ाई के गुन समुझावें। एह ज्ञान के बाँटत बेरा ऊ ना कवनो ऊँच–नीच के बान्हा मानस आ ना कवनो जाति–धरम के डँरेड़। पता ना कहवाँ से उनका हियरा में ई पइस गइल रहल कि पढ़ल मनई सगरो धन बटोर सकत बा।

विजय एतना पढ़ला के बादों अपना बाबुजी के खेती–बाड़ी के काम में उनकर हाथ बटावे लगलन। उनके जजमानी ना भावेला बाकीर अपना बाबुजी के ना मना करेलन। ऊ स्वतंत्र विचार में भरोसा रखेलन। उनके खातिर स्वतंत्रता के मतलब बाउर के विरोध आ नीक से नेह ह। उनके परब–त्योहार आ संस्कारन से ढेर लगाव ना ह बाकीर अवसर अइला पर होखे वाला विधि–विधान से मनवो ना हटा पावेलन। सुरसती के साथे व्यवहारो के बुझे वाला नजर उनके आँख में बाऽ। ...एह टोला के अन्हरिया में अँजोर के एकलौता किरिन समझ के जगह–जगह से देखनहरू लोग आवे लागल। अबहिन लगन देव उठले ना कि देखनहरू से दुआर कोड़ाए लागल।

लइका सुन्दर, जवान आ गुनी बा, से रूपा आ सुन्नर बाबा के मन में धीरे-धीरे भय पइसे लागल कि जवानी के बउराइल डेग कहीं बिछिल ना जाव। ...अब बिछलइला के पहीलहीं बेड़ी लगावे के विचार बन गइल। ... विजय के बिआह सुधा से तय हो गइल। सुधो इंटर ले पढ़ले, गुनी आ सुन्दर रहली। विजय अप. नहीं देखलन आ बिआह के दिन पड़ गइल।

विधि-पर-विधि होखे लागल। विजय नाक सिकोड़वला के बादो विधिन में कवनो बिघिन ना डरलन। तिलक से बिआह ले के विधि उनकरो मन मोह लिहलस। ...चाहें रघुवर के बहाने तिलक आइल होखे, चाहे कोसिला मन के बहाने सगुन उठल। चाहे मटकोर के बेरा एक अँजुरी भर पानी में समुन्दर टकटोराइल होखे, चाहे लोढ़ा के मुँह पर नचा-नचा के परीछावन कइल हो खे। द्वारपूजा, सेनुरदान, कोहबर ...ई विधियन के विजय बड़ा गहनता से पढ़गितिया आ वैज्ञानिक के तर्क से देखस। ई विधियन से विजय के अपने विराट संस्कृति के सामने माथा नेवा देबे के पड़ल। अपने जीवन-संगीनी के विदाई के रूप देख के त ऊ मन के ढेर गहराई ले आहत हो गइलन।

ऊहाँ पंडित जी से विदाई के जतरा देखावल गइल त किरीन फूटला के पहीलहीं के जतरा रहल। ओने पूरूब के दुआरी से सूर्य देवता दुनिया में डेग बढ़ावत आवत रहलन, एने सुधा अपने असली जिनगी के जीए खातिर लइकनी से औरत के दुनिया में जाए वाला डेग बढ़ावत रहली। सहीए हऽ कि पति के पहिलके छूअन से लइकनी औरत बन जाले। सुधा अब एगो औरत हो गइल रहली।

विजय के ससुराल से घर ले के छव-सात घंटा के रास्ता रहल, से बीच में कई जगह सुस्ता के चाय-पानी भइल। सुधा के भाई विनय कई बेर उनसे कुछ खाये-पीये के पूछलन बाकीर भूख-पिआस लगला के बादो 'केहू चटोर ना कहे', से लाजे एको शबद ना कहली। ...औरतन के सबसे अनमोल गहना लाज हऽ, बाकीर पता ना अपना कवना-कवना करम-कुकरम के औरत लाज समझेली सों, ई दैब त समझिए ना पइहें त हमा-सुमा जइसन मरद कइसे समझ सकेला।

सुन्नर बाबा के दुआर पर दूलहिन के सवारी बारे बजे जुमि गइल। अब उतारे के पतरा देखल गइल। दू घंटा बाद बढ़ियाँ साइत रहल। हितई से आ टोला भर के आइल लइकनी झमेला लगवले रहली सों। सुहागिन लोग सुधा के माँग बहोरल लोग।... दू घंटा बाद दउरी में डेग डालत, विजय के पाछे-पाछे सुधा सती माई के अथाने पहुँचली। ऊहाँ कोहबर के विधि भइला के बाद हथबोरउआ के तैयारी होखे लागल। हथबोरउआ, ई अइसन विधि हऽ, जवना के बाद ससुरारी घर में पहिला पग रखे वाली पतोह पहिला अनाज खाले। एह विधि के बाद जिनगी भर खातिर एह घर के अन्नो से खून के रिश्ता जुड़ जाला।

जिनगी भर पतरा में जीए वाला सुन्नर बाबा के घरे कवनो विधि बिना साइत के ना होला। साइत देखे खातिर पतरा उघराइल त हथबोरउआ के साइत साँझ के रहल। दही-चीनी तैयार कइल डेहरी पर रखा गइल। ...ओने भूख-पिआस से सुधा के हाल बिगड़त रहल। मुँह सूख के चोकटाइल आम हो गइल रहे। ...दूलहिन अइला के उछाह में केहू उनकर बिगड़त हालत ना देखल। ...विजय दुआरे जा के निखहरे चौकी पर छितरा गइलन। ना तरे के फिकिर रहल, ना गोड़वारी-मुड़वारी के आ ना ठाँव-ठेकान के। सभे हित-नात आन्हीं में उधिआइल गेहूँ के बोझा नियर एने-ओने छितराइल रहलें। घर के मेहरारू खाना बनावे में टर्र रहली सों। ईयाद पड़ल त रूपा अपना पतोह के कुल के, मेहरारू के आ पत्नी के मान-मरजाद समझावे गइली। सुधा के बिगड़त दशा देख के पूछली, "का हो सुधा, ...तबीयत ठीक नइखे काऽ?"

कई बेर पूछला के बाद सुधा के मुँह से धीरे से निकलल, "पिआस लागल बा।"

ई सुन के रूपा के दुख त जरूर भइल, बाकीर हथबोरउआ के पहिले पतोह ससुरा में एक्को बून पानी ले जीभ पर ना धऽ सकेले। कहली, "तनी अउरी धीरज धरऽ। दू घंटा बाद हथबोरउआ के साइत बा।"

"अबहिन दू घंटा?"

सुधा हिम्मत हार गइल रहली। अपने सास के ई वचन सुनतहीं गीर पड़ली। रूपा करेजा काढ़ के चिलइली। सभे आपन काम-धंधा छोड़ के धावल। दुआरे से मर्दानो लोग के बोलावल गइल। मुड़ी आ मुँह पर पानी छिड़काइल। सुधा के होश में आइल देख के रूपा दउड़ के सुन्नर बाबा से पूछली, "एक गिलास पानी पिआऽ दिहल जावऽ?"

साइत के दीवाना सुन्नर बाबा आपन कसैलिया आँख बहरी कऽ के कहलन, "साइत के पहिले कुछू ना।"

विधि के ई बंदिश विजय के बोले पर मजबूर क दिहलस। कहलन, "केहू मरियो जाय तऽ का हऽ, ...साइतिए देख के अगियो दिआई।"

बेटा के व्यंग्य बाबा के करेजा बेध दिहलस। आपन रोआब ना फिका पड़ जाव, से डपटलन, "तू चुप रहऽ। जब विधि-विधान नइखऽ जानत, त मुँह मत खजुआवऽ।"

"हम लात मार तानी तहरा ई विधि-विधान के बाबुजी, जवन जान लेहला पर उतारू बाऽ।"

एतना कहि के एक कचोरा पानी ले केऽ विजय चललन तले उनकर माई डेहरी पर धइल नदिया के दही में हाथ डुबा के चटा देहली। सुन्नर बाबा आग बरल आँख से रूपा के देखलन त आपन निर्णय सुनवली, "कवनो विधि जान लेबे के ना कहेला जी, आ हम कवनो विधियो तूरे के ना कहेब।"

सुन्नर बाबा के मुँहे बवा गइल। उनका बुझाइल कि ई उनकर अनपढ़ रूपा देवी नइखी बोलत। ई बानी कवनो अउरी देवी के हऽ। रूपा के बात बाबा के कठोरका करेजा छू लिहलस। करेजा के कवनो दबल कोना से प्रेम के पवित्तर लहर फूटल, जवना में बाबा के रोआँ-रोआँ ले धोआ गइल। ओह लहर में डूब के तन प्रसन्न आ मन निर्मल हो गइल। ❑❑

❍ तमकुही रोड, सेवरही, कुशनगर (उ.प्र.)
वर्तमान में नई दिल्ली

ओटीटी पर काहें भोजपुरी के नामो निशान नइखे?

मनोज भावुक

जब कोरोना के चलते सगरो दुनिया लॉकडाउन में रहल ह त लोग मनोरंजन के कई गो साधन उपराजल। लोग अपना परिवार के बीच ढेर समय बितावल ह, इंडोर गेम खेलल ह, खल-खल के पकवान बना के खाइल ह, घर के हर एक कोना से परिचित भइल ह, पुरान दोस्त-इयार के ईयाद कइल ह, योग-ध्यान कइल ह। एकरा अलावा मनोरंजन के एगो साधन जवन शुरुए से मानव जाति के प्रिय रहल बा, एह क्वॉरन्टाइन काल में ओकरो उपयोगिता बड़ा महसूस भइल ह।

आदिकाल में लोग नृत्य, भाव भंगिमा के साथ नाटक -नौटंकी करे, गीत गावे...सभ्यता विकसित भइल, त स्टेज बने लागल, प्रोसेनियम थिएटर के दौर आइल, रंगीन पर्दा, सजल धजल चरित्र, चकमक लाइट के युग आइल। जब विज्ञान अउर तरक्की कइलस त कहानी चित्र में ढल के सिनेमा बन गइल आ लोग पर्दा पर फिलिम देखे लागल। तनिका अउर विकास भइल त घरे-घरे टीवी आ गइल आ मनोरंजन अब घरहीं में होखे लागल। टेक्नॉलजी हमेशा अपना के माँजत रहेले, रूप बदलत रहेले। टीवी आउर छोट भइल आ मोबाईल में समा गइल। अब मनोरंजन हाथ में आ गइल बा, सभ के पाकिट में आ गइल बा आ एह लॉकडाउन में लोग मोबाइले पर सबसे ज्यादा फिल्म, सीरियल, सीरीज, कॉमेडी वीडियो देखल बा।

जइसे चारों ओर निराशा, बेमारी आ मौत रहल ह, ओइसे अगर मनोरंजन के साधन ना रहित त इंसान पगला जाइत। दूरदर्शन के बड़ा धन्यवाद देबे के चाहीं कि रामायण अउरी महाभारत के पुनः प्रसारण कर के सभके अंदर दुबारा आशा आ जिजीविषा पैदा कर देलस। सिनेमा हॉल बंद रहल ह, त अइसन समय ओकर विकल्प के रूप में ओटीटी प्लेटफॉर्म आइल ह। ओटीटी के मतलब ही होला, ओवर द टॉप माने ओवर द इंटरनेट। यानि वेब के ऊपर अइसन सेवा जवन ऑन डिमांड कंटेन्ट देबे। एकरा के आसान भाषा में कहल जाव त, रउआ फिल्म देखे जाईं त उहे फिल्म देख सकब जवन सिनेमा हॉल में लागल होई. टीवी पर कवनो सीरियल भा फिल्म देखब त उहे देखब जवन चैनल चला रहल होई। जबकि ओटीटी एकर एकदम उलट बा। रउआ ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अपना मन से जवन देखे के चाहीं देख सकेलीं, उहो अपना सुविधा के हिसाब से, कतहुँ से, कबो। रउआ व्यक्तिगत च्वाइस के हिसाब से कंटेन्ट मिलेला। जेंगा मन करे ओंगा देखीं, अकेले, दुकेले भा भीड़ के साथे। ना रउआ कवनो चैनल के टाइम टेबल फॉलो करे के बा, ना सिनेमा हाल के शो टाइम के वेट करे के बा।

ओटीटी के शुरुआती दौर में विमियो, यूट्यूब, नेटफलिक्स आइल। बाद में जब इंटरनेट के उपभोक्ता बढलें त अउर भी कई गो नया स्ट्रीमिंग वेबसाइट अस्तित्व में आइल बाकिर भारत में ऑनलाइन स्ट्रीमिंग आ ओह पर भारतीय भाषा के कंटेन्ट धड़ल्ले से पड़ल तब चालू भइल ह जब भारत में सस्ता डेटा के कारण इंटरनेट क्रांति आइल ह आ एकरा पीछे औरी केहू के ना रिलायंस जिओ के हाथ बा. जब 2016 में रिलायंस सभकरा खातिर फोरजी इंटरनेट डाटा निःशुल्क कइलस, त ओकरा बाद ऑनलाइन स्ट्रीमिंग साइट आ एंटरटैनमेंट सामग्री के बाढ़ आ गइल।

विदेशी कंपनी कुल के देख के देसी कंपनी भी डिजिटल में भविष्य तलाशे लागल आ मनोरंजन जगत के अधिकांश चैनल आपन डिजिटल प्लेटफॉर्म लॉन्च कइलस आ साथ में लॉन्च भइल वेब-सीरीज बनावे के कान्सेप्ट. हालांकि निश्चित एपिसोड वाला सीरियल बनावे के सिलसिला बहुत पुरान बा। दूरदर्शन के शुरुआतीए दिन से निर्धारित एपिसोड के सीरीज बनत रहे लेकिन बाद में हम लोग, खिचड़ी, शक्तिमान, चंद्रकांता जइसन सीरियल के अपार सफलता के बाद कई-कई साल चले वाला सीरियल बने लागल।

भारत पूरा विश्व भर में मनोरंजन के सबसे बड़ बाजार ह, इहाँ फिल्म, सीरियल, नाटक के बहुत क्रेज बा, जेकरा के भुनावे में सभ भाषा के इंडस्ट्री लागल बा। देश-विदेश के ओटीटी कंपनी लागल बाड़ी सन। सभे लागल बा आ बढ़िया कंटेन्ट बन रहल बा, बोल्ड सीन वाला मसाला भी परोसाता लेकिन भोजपुरी के अइसन दुर्भाग्य बा कि ऊ अपना नयका युग के सिनेमा लेखां ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी पिछड़ गइल बा।

अगर रउआ सस्ता डेटा के क्रांति अइला के बाद वाला चार साल में देखीं त सँउसे चँवर में एगो ढेला लेखाँ निरहुआ आ आम्रपाली दुबे अभिनीत एगो सीरीज 'हीरो वर्दी वाला' लउकता। हालाँकि उहो सीरीज आल्ट बालाजी के ओटीटी प्लेटफॉर्म पर आइल जवन मूलतः हिन्दी कंटेन्ट अपलोड करेला आ ओकर दर्शक हिन्दी पट्टी वाला ढेर बाड़ें। ऊ सीरीज फ्लॉप रहल आ भोजपुरी फिल्मन वाला ढर्रा पर बनल रहे. एही से केहू के खास प्रभावित ना कर पवलस।

हालाँकि यूट्यूब आ कुछ एक सॉफ्ट पॉर्न परोसे वाला ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कुछ भोजपुरी सीरीज बाड़ी सन लेकिन

ओकनी के नाम ले लिखल पाप जइसन बुझाता, त ओकरा बारे में का लिखल जाव...जाए दीं, छोड़ीं। होईचोई एगो बंगाली भाषा के ओटीटी प्लेटफॉर्म ह, जे पर अच्छा बुरा हर तरह के बंगाली फिल्म सीरीज रिलीज होला। ओकर एगो अइसने कामुकता परोसे वाला सीरीज के भोजपुरी में डब कर के 'भौजी के दीवाने' नाम से एमएक्स प्लेयर पर अपलोड कइल गइल बा, एकर जिक्र एह से भइल ह काहे कि ओह प्लेटफॉर्म पर एक से एक विचारोत्तेजक सीरीज आ बंगाली फिल्म बाड़ी सन लेकिन भोजपुरी में ई कचड़े काहे डब भइल ह। एकरा माने कंटेन्ट बनावे वाला निर्माता, चैनल, ओटीटी, प्रायोजक, कलाकार सभे पहिलहीं से सोच के बइठल बा कि भोजपुरी भाषी त खाली कामुके सीन देखेला, ऊ खाली ठरके मिटावे के मनोरंजन बुझेला।

सिनेमाहॉल वाला सिनेमा के हाल त ई बा कि मेहरारू आ लइका–फइका देखल छोड़िये देलन सन। पढ़ल–लिखल आ संभ्रांत लोग भी नाहिये जाला। कम से कम ओटीटी पर सबका पसंद के अउर स्वाभिमान आ सम्मान के सिनेमा बने काहे कि एह प्लेटफोर्म पर लइका, बूढ़, जवान, मरद–मेहरारू सभकर पहुँच बा। पहिलहीं अइसन मत घिनवा द लोग कि इहो प्लेटफारमवा नशा जाव. बाकी जे बा, से बड़ले बा...अब ई मत कहिहे लोग कि सिनेमा व्यवसाय खातिर ह, समाज सुधारे खातिर ना। त व्यवसाय में कहाँ लिखल बा कि कामुके फिल्म बनावे?!

❑❑

(लेखक भोजपुरी सिनेमा के इतिहासकार हवें)

❍ नोएडा, उ.प्र.

आजु खोजै तोहके

योगेंद्र शर्मा 'योगी'

सिसकत बाटै माटी
खाटी भोजपुरी परिपाटी
आजु खोजै तोहके।

चिरई चुरमुन चहक भुलाइनैं
झरना गीत भुलायल बा
मुरलियवा डुगडूइया पहड़ी
बनवा कै परिपाटी
आजु खोजै तोहके। खाटी...।

चन्दौली कै धरती बिलखै
चकिया कै मुसकान गइल
भीषमपुर बिरान जनाला
तुलसी कै परिपाटी
आजु खोजै तोहके। खाटी...।

चन्द्रप्रभा के पानी बेकल
कोल्हुआ भी भरुआयल बा
छछनत हियरा तड़पत जियरा
मनवा कै परिपाटी
आजु खोजै तोहके। खाटी .....।

जब से मुँहवा फेर के गइला
सबही त रिसियाइल बा
अरती अऊर अजान कोहाइल
पुरखन कै परिपाटी
आजु खोजै तोहके। खाटी...।

दुअरा सुन उजार परल बा
'योगी' प्रेम नदारत हव
कहाँ बचल अब कोई बावला
के सींची परिपाटी
आजु खोजै तोहके।

खाटी भोजपुरी परिपाटी
आजु खोजै तोहके।।

❑❑

❍ चंदौली (उ. प्र.)

मन के राग

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
(संपादक, भोजपुरी साहित्य सरिता)

कवनो देश के जातीय भावना के पहिचान उहाँ के लोक संस्कृति होले। लोक जीवने जातीय जिनगी के मूल स्रोत होला। एह स्रोत से निकले वाली धारा समय के बदलाव के अपना भीतर जोगावत आ समुआवत चलत रहेले। ई प्रान धारा चलला का बादो नीमन रहेले। बदलाव का बादो ओकर पहिचान ना बदलेला। लोकगीत लोक संस्कृति के जियतार सुर के संगम होखेला। लोक के विशेषता अपना संपूर्णता का संगे पारंपरिक लोकगीतन के, जेकरे रचयितन के पता नइखे, मन के राग में मिल के सुन्नर कंठन से मधुर सुर में सुनात रहेला।

अनघा भाव के थाती से भरल–पूरल हमनी के जिनगी के सबसे पुख्ता पहिचान एह गीतन का सोझा अपना के बचावे क बीपत घहराइल बा। मने लोकगीतन के गवें–गवें बिलाए के समय नियरा गइल बा। भा कहल जाव कि लोकगीत गवें–गवें बिला रहल बानी। एकरा पाछे कई गो कारन बा। सेतिहा फिल्मी सोच, छेहर भाव अउरी अश्लील गीत–गवनई हमनी के सांस्कृतिक धरोहर, एह लोकगीतन के बहुते बाउर ढंग से प्रभावित कइले बा। एकर असर नवही पीढ़ी आ अदमिन से बेसी मेहरारून पर भइल बा। ई ढेर चिन्ता के बाति बा। काहें से कि मेहरारून के अपना संस्कृति से गहिर लगाव होला। बियाह, बरत, पूजा के बेरा गावे वाली गीतन में अब पारंपरिक गीतन के जगहा फिल्मी तर्ज के गीत–गवनई शुरू हो गइल बा। जवन हियरा के बेधेला।

एह बाति के सोझा राखत बेरा नवके क बिरोध आ पुरनके क तरफदारी नइखे होत। नवका के सोवागत करे खाति हम तइयार बानी बाकि ओकरा झोंका हमनी क दीयरी बुतावे खाति अड़ियाइल होखे त अइसना में हमार का गलती बा। अइसना में सोवागत करीं त कइसे करीं? नवकी दियरी के नवकी जोत से? नवकी जोत खाति दियरी में नया तेल आ नया बाती चाही। अगर नीमन आ भरल–पूरल चीजु लेके नवकी जोत आ रहल बा त ओकर सोवागत बा आ ना त बरिजे खाति हम विवश बानी। इहाँ त ई हाल बा कि नवकी जोत पुरनका तेल सोखि के आ बाती के जरा के हमके भरमावे ला तइयार बा। तेल ना होखी त बाती जरिये नू जाई। भइया! हम दसो नोह जोरि के कहत बानी कि अइसन बिलवावन चमक आ जोत हमरा ना चाही।

उठस सुर, लय आउर ताल आ अश्लील गवनई हिया के भइबे ना करी। जब हिया के नीमने ना लागी त सब बेकार। आचार्य शुक्ल कविता के भाव के सबसे ऊँच पिढ़ई पर बइठवले। एहके छोड़ि हम मुरदाह से अपना के कइसे जोड़ीं।

हमनी के पारंपरिक गीतन में लोक–भाव के लमहर थाती भरल बा, उहे जिनगी के खजाना ह। एह दुनिया के मजगर धरोहर ह। जवन जिनगी के धड़कन के आहट देत सभे से कटल आ बेगर कहले सभे कुछ बोल जाला।

आईं सभे! एह रस भरल समुन्दर के एक चुरुवा जल पी के गर तर कइल जाव। देखीं, का भेंटाला! कुछ हुलास, कुछ थिरकन भा कँपकपी भा कुछ उठ्ठस भा दुख–तकलीफ भा कुछो अउरी...! थोर ढेर तकलीफो होखे, त माफ करेम–

दुख सहि के सुख पवला के बिसवास के संगे।

एगो कहानी कहे जातानी, जवन कहलो बा आ नाहियों कहल बा। हम जानतानी कि कल्पना सिरजना खाति जरूरी होला। बिना कल्पना के सिरजना होइये ना सकेला। अगर रउवा मानी त हम कहेम कि कल्पना कवनो बाउर चीजु नइखे। ऊ बिना आधार के ना हो सकेले। यथार्थ के चाह कल्पना के बिरोधी ना बलुक सहजोगी होला। बिना कल्पना के मनई के जिनगी संभव नइखे। चलीं, एकरा के छोड़ीं, फेर कबों समुझल जाई, त अब हम कहनी कहे जा रहल बानी।

भइया! एगो गाँव में एगो बोधन बाबा रहत रहलें। बोधन बाबा के एगो दुलरूई बेटी रहे, जवना के नाँव पान कुँवर रहे। पान कुँवर बहुते सुघर–साघर आ शीलवती बेटी रहलीं। उनुके सुघरई के जे देखे उ देखते रह जाय आ उनुके सुघरई के बखान करत बेर जरिकों न अघाय। पान कुँवर अपने बाबा के बहुते दुलरुई रहलीं। उनुका सुघरई पर उनुका बाबा बखान करत कहें– 'पनवा के नाई पातरि सोपरिया अस ढुरहुर
हरदी अइसन पीयरि हो।'

अब तनिका पान के बारे मों सोचीं–कतना रसगर, मनहर आ पारदर्शी होला। अइसने उनुका शरीर के बनावट रहे। कवि के संतोष ना भइल त आगु लिखलें सोपारी लेखा चिक्कन आउर रंग हरदी लेखा पीयर, टहक। ई कवनों कवि के कल्पना हो सकेले बाकि उनुका सुघरई रहल अइसने।

पान कुँवर गवें–गवें बड़ होखे लगली। ओइसही उनुकर सुघरई अउरी निखरे लागल। एक त सुघ्घर ओपर से जवानी के देहरी प डेग धरत बेटी के देखि कवनों बाप के नीन उड़ी जाले।

बोधन बाबा पान कुँवर खाति बर जोहे लगलें। भाग–दउड़ के बियाह तय क दिहले। दिन नियरात–नियरात लगे आ गइल। बियाह के विधि–बिधान हरदी आ माड़ो के संगे होला। मने मड़वा के संगही कनिया के अपनही घर में पिया के घरे जाये के अभ्यास करावल जाला। जब पान कुँवर के घरे मड़वा छवाये लागल, ओह घरी पान कुँवर के मन के भाव कवि उनुका बाबा का सोझा रखले बाड़ें। ओह घरी मेहरारू लोग गावेलीं–

'झाँझर मड़उवा जिन छवइहा मोरे बाबा,
कि लाग जइहें सुरुजू कइ जोत।'

ई गीत उहाँ छवात माड़ो से बेसी पान कुँवर के जिनगी

के चिंता के बखान करि रहल बा। पान कुँवर सगरी कनिया लोगन के प्रतिनिधि का रूप में उहाँ बाड़ी। पान कुँवर अपने बाबा से आश्वासन चाहत बाड़ी कि उनुके दुलरूई बिटिया के ससुरे में तनिको सा दुख–तकलीफ न होखे। बाबा उनुके मन के भाव बूझ जात बाड़ें आ अपने बिटिया के आस धरावत कहतारें–

'कहतू ते ये बेटी तमूवाँ तनवती, सुरुजू के करतीं अलोप।'

ए बेटी! अइसन जनि कहे। तू कहबू त हम अइसन तम्मू तनवा देम जवना से सुरूज ढ़का जइहें। मने अइसन मजगुत घर तहरा हम देम जवने के नियरे कवनो दुख–तकलीफ चहुँपबे ना करी। वैज्ञानिक लो के बुद्धि एकरा दंभ आ विद्वान लो एकरा झूठिया क आस बोली आ बस के बहरा के बाति बताई। बाकि अइसन बाति नइखे, अपना औकात से ढेर आगे बढ़ि के केकरो ला सुरक्षा के आस बन्हावल मुरुखई ना बलुक गहिराह परेम के बाति होले। अइसना में कवनो बाप अपने बेटी खाति का–का ना सोच सकेला। चाहे जइसे होखे, अपना बेटी के आस बन्हइबे करी। अइसन ना कइला पर उनुकर कुल्हि तपस्या वृथा नू हो जाई।

अइसने आस बन्हावे वाले सुख के परिखे में ना जाने कतने बरिस से घूमी रहल बाड़ें। अपना बिटिया के जोग दुलहा खोजे खाति कहवाँ–कहवाँ के धूर नाही छनलें। उ जात रहलें आ लउट के खलिहा चलि आवत रहलें। हर बेर अइसने होत रहे, थकला का बाद उनुका लागे कि उनुकर बेटी कुँवारे रहि जाई।

'पूरुब में खोजली बेटी पछिम में खोजली
खोजि अइली देस संसार।
तोहरे सरीखे बेटी वर नाही पवली,
अब बेटी रहि जइहें कुँवार।''

इहवाँ सरीखे सबद विचार करे जोग बा। वर त हर गाँव में बाड़ें, गाँव के घर–घर में बाड़ें। बाकि पान कुँवर के जोग वर कहीं नइखे मिल पावत। कतों घर बा त वर नइखे आ कतों वर बा त घर नइखे। बाबा के मन के भावते नइखे, त कइसे तइयार हो खें। सुन्नर घर आ वर बाड़ें, इनको कमी नइखे। बाकि उहाँ चहुँपे खाति बाबा के समरथ नइखे। थाकल बाप के लागता कि उनुकर बेटी कुँवारे रहि जाई। ई गीत अजुवो के लइकिन के बाबूजी लो के मजबूरी आ उनुका लो के मन के टीस के एकदम नीमन से उकेर रहल बा।

बेटियो भारत के रहनिहार बिया। संस्कार से भरल–पूरल आ आत्मा के आवाज सुने वाली। ऊ अपने बाबूजी के पीर बूझ गइल। ऊ आपन जिनगी दाँव पर लगा सकेले। ऊ अपना के मेटा के दोसरा के खुस राखे वाली भावना से अपने करेजा पर पाथर राखि के बाबा के दुख हर लेवेले। अपना बुद्धि से अपने बाबा के राह असान बना देवेले। अपने बाबा के सोझा आपन विचार राख देवेले– ''साँवर वर देखि जिनि भरमा बाबा,
साँवर सिरी भगवान।''

ए बाबा ! तूँ साँवर वर देखि के ओकरा के हमरा जोग नइखे, अइसन सोचि के भरम में मति पड़ऽ। साँवर होखल कवनों बाउर बाति नइखे, साँवर त भगवान श्री कृष्णों रहलें। अब बताईं, आपन बलिदान देके, अपना के दुख चहुँपा के दोसरा के सुख चहुँपावे वाली भावना आउर कतों भेंटाई?

त केनहूँ बाति बन गइल। आगु क हाल ढेर अझुराइल बा– जब बेटी ससुरा जाये लागेले, त माई बाबूजी के करेजा फाटे लागेला। ग्लानि, क्षोभ, करुना मतिन भाव से मन भरि जाला। कंठ रुन्हा जाला। इहाँ खुसी आउर दुख दूनों बा। बाकि अप. ना आँखि के पुतरी से बिछोह नाही सहाला आ माई–बाबूजी लो बउराह लेखा हो जाला आ फेर ओरहनों देला लो– '
खोनवन–खोनवन बेटी दुधवा पिअउली
दहिया खिअउली साढ़ीवाल।
कोरवाँ से कबों नाही भुइयाँ उतरली
रखली मे अँखिया के छाँव।
एकहु नुकुति नाही मनलू मोरि बेटी
लगलू सुन्नर वर साथ।''

देखीं नू, कतना बड़ अझुरहट बा। 'अर्थो हि कन्या परकीयमेव' सभे जानेला। तबो हिया पर बुद्धि के सासन ना चल पावेला। बेटी वर का संगे खुस होलीं। बाकि माई–बाबूजी खुसी का संगे गहिराह दुख के समुंदर में डूबत–उतिरात रहेला। अइसना में केकरो बुद्धि मरा जाले।

कालीदास के एह दुख के अनेसा रहल। काश! कालीदास ई दुख भोगले रहतें त सभे बाबूजी लोगन के पीर के बानी मिल गइल होइत। बाकि पान कुँवर के ई कहनी हर कुँवरि के कहनी बा। आउर बोधन बाबा सभे के बाबा के प्रति. निधि बाड़न। भाव के अइसन गहिराह पसराव केहू के संवेदना के जगा देवेले। एसे बढ़ि के अउर भाव का हो सकेला?

ई जवन कहनी हम कहनी ह, ई त एगो छोटहन परतोख भर ह। रउरा सभे के समरथ भाषा में गहिराह संवेदना से जुड़ल कतने कहनी गाँव के चप्पा चप्पा पर भेंटा जाई। प्रेम उन्माद के,विरह के अगिन के, बसंत के हुलास के, रिमझिम बारीस में ठाट से मेंहदी से सिंगार के, अतने ना जाड़ में किकुरत बुढ़िया ईया के, जेठ के तातल गरमी में झँउसात बूढ़ बाप के, कुँआर बहिन के सपनात शील के, बाझिन के बेकहल दरद के, हत्या आउर आत्महत्या का बीच झूलत, जीयत–मुअत किरसित असहाय के। मने जिनगी के हर हाल के, हर पल के बतकही के। इहाँ न रउवा ई कुल्हि सुने के साहस जुटा सकेनी, ना हमरा अतना कुल्हि सुनावे समरथ बा। हम त रउवा सभे के एहर के एगो रहता भर देखवनी ह। हमारा बिसवास बाटे की रउवा उहाँ जरूर जाएम। उहाँ रउरा के पूरा ना त आधा–तीहा जीयत जागत लो जरूर मिलिहें।

''एह जम्म ठिग्गाह गयउजिहि सिर खग्ग न भग्गु
तिख्खा तुरिय न तोरिया गोरी गले न लग्गु।।''

हम देखले बानी एह उपजाऊ भूई से जामल एह लोकगीतन के मिठास लब्ध प्रतिष्ठ कवि लो के आ रसिक लो के अपना ओर जबरी खींच ले आवेले। सुन्नर मेहरारू आ लइकिन के कंठ से निकरे वाली सुर लहरी से लागता उ लो के हिया के राग क राधिका उपरिया जालीं। एही से जयदेव कहले बाड़ें– रति सुखसारे गतमभिसारे मदन मनोहर वेशम।
न कुरु नितम्बिनी गमन बिलम्बिनी मनुसरते ह्रदयेशम'
धीर समीरे यमुना तीरे बसति बने बनमाली
गोपी पीन पयोधर मर्दन चंचल कर युगशाली। ❑❑

रचना– मानस राग (निबंध), मूल लेखक– डॉ. उमेश प्रसाद सिंह
भोजपुरी भावानुवाद – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

उपकोशा

दिनेश पाण्डेय

गुणाढ्य के 'बृहत्कथा' पैशाची भाषा के रचना रहे। सोमदेव भट्ट रचल 'कथा–सरित्सागर' ओकरे इच्छित आ संस्कृत उल्थन ह, जवना के प्रथम 'लंबक' में उपकोशा के कथा आइल बा। उपकोशा के कथा एकवाही दांम्पत्य प्रेम, स्त्री के स्वाभिमान, आत्मनिर्भरता आ मतिचातुरी के बानगी ह। एह कथा के ताना–बाना के मूल आधार उहे बा। एह बारे में सोमदेव के कथन सटीक बा– यथामूलं तथैवैतन्न मनागप्यतिक्रमः।

ग्रंथविस्तरसंक्षेपमात्रं भाषा च भिद्यते।।

(बृहत्कथा में जवन बा ई ओकरे निचोड़ ह। मूल से अंतर नइखे। हँ, बात थोरे में कहल गइल बा आ भाषा भिन्न बा।)

आराधन
कोरा बइठल पार्वती के कनखी में बा,
कामदेव लिपटाइल जइसे,
हे शिव के सुभकंठ
बिभव द।

साँझि बेर में निरित निरत
बूढ़ी जोन्हिन के,
सबल सूँढ़ से दरकिनार कर
सिरज रहल जे नवकी तारा,
मंगलमय गननाथ अभय द।

सुभग–दीप के बाती जइसन
सिरिजन कर उजियार
उजागर कर देजग के,
हे सुरसती बिनय करि रावरि
बृहत्कथा के सत्व बिटोरीं।

किन्नर, गंधर्व आ बिद्याधर के बसावट वाला परबतराज हिमाले बिख्यात ह। एकर उत्तरी चोटी कैलाश, हजार जोजन के भुँईंखंड समेटले पसरल बा। कैलाश के अमल–धौर माथा मंदराचल प कूट करेला कि क्षीर–समुन्दर के मथानी भइला का बादो उनकरसुरमई रंग ना गइल, हम बेगर जतन कइले फटिकअस ऊजर बानीं। एही कैलाश प शिव के निवास ह। शिव के पियरछहूँ जटाजूट प होखहीं से चनरमा साँझिखा उदयाचल के खइरबरनी रंग जइसन सोभेला।

कवनो दिन, कवनो काले पार्वती शिव से कहानी सुनावे के बिनय कइली। उनकर माथ शिव के गोदी में रहे। लागता कि प्रेमी लोगन का मधे कथक्कड़ी बहुते पुरान शगल ह। होखहूँ के चाहीं, कहानी लमहर बखत गुजारे के माध्यम त हइए ह, संगे–संगे भाव उद्दीपन में सहजोगी होखे से अनुकूल असरकारक ह। पार्वती के कहनाम ई कि कथा कवनो होखे बाकी 'रम्यां' आ 'नूतनताम्' जरूर होखे। पार्वती के कहानी सुने के बान के चरचा खूब रहे। सी'पियारी के कहानी सुने के इहे लत कवन–कवन गुल नइखे खिलवले ईशिवजी नीके जानत रहनी एसे कहनीं, "गउरा, दुनिया में गत, आगत आ अनागत के कवन अइसन बात बा जे तू नइखू जानत?"

हो सकेला कि शिवजी पार्वती जी के, उनका सर्वज्ञाता होखे के मनोवैज्ञानिक खुराक दे के कहानी सुने से बिमुख कइल चाहत होखीं। इहो हो सकेला कि ऊ बहुते प्रतिभाशाली होखस आ अधिकतर बिरितांत से उनकर परिचे होखे। तिरियाहठ त मानवती के मूल सुभाव ह, अब एकरा पाछू पिया से अनुराग होखे, धाक जमावे के भाव होखे भा बात मनवावे के जिद। ऊ हकर पेरे लगली। शिवजी उनुका नाराज कइसे क सकत रहन? त ऊ शुरू भ गइलें। कथा ऊपर से सहज रहे बाकी तकरा में सारी दुनिया के उतपति, थिति आ लय के बीज–तंतु छिपल रहे। तेकर उत्तराध पार्वती के पुरबिल कथा रहे जवना में ऊ दक्षपुत्री सती रहली। पिता के यज्ञ के मोका प नेंवता ना दिहले आ ते से भइल अपमान का ओजह से ऊ देह–दाह क लिहली। ना जाने काहे पार्वती के एह कथा में तनिको रुचि ना जागल। कथा के पात्रन से आतम–भाव अलहदा चीज ह बाकी जहवाँ अदिमी खुदे एक कथा–पात्र होखे त ओकर सुख–दुख अनुभव के धरातल एके ना होखे। साखी –भाव आ भोक्ता–भाव में जमीन–आसमान के फरक ह। आपन पीर–प्रसंग के, के इयाद कइल चाहेला? इहो हो सकेला कि शिवजी कथा के जवन ताना–बाना बुनत रहलें ओ में गहन तात्त्विकता होखे से तेकर असरकारिता छीजल होखे। कथा के सारा परोजन त ओकर बस्तु के भीतर सरिसों में तेल अस एकसार होला जवन बारीकी से हेरलो प ना हेराय। ऊब के पार्वती जी शिवजी प कूट कस दिहली, "तू ठग हउवऽ, पकिया ठग। इहे मनहर कथा हऽ? एह बात के हम ना जानीं का कि तू एक ओरि गंगा के राखेलऽ त दोसर दने संध्या के बन्दगी करत रहेलऽ?" कहे के मतलब ई कि लोगन के भरमावे के कला में शिवजी के शानी केहू नइखे।

एह ताना प तिलमिलइले शिवजी अइसन 'दिव्य' कथा के ताना–बाना बुने लगलन जवन 'रम्य'होखे, 'अनसुनल' होखे। कौनो खलल ना होखे एसे निपट एकान्त बदे पार्वती जी के आदेश से नन्दी दुआर बन क दिहलें। ए बेर शिवजी के सोचावट में थोरिके बदलाव लागत रहे। देव चिरसुखी हवें मानुस सदा दुखी, एसे दुनहुन के चरित्तर अपन सरेखपन में मनोहारी ना होखे। कुछ अइसन कथा के ढाँचा सिरिजल जाव जवना में दुन्नो के मेरफेंट होखे। एह लक्ष्य के पावे बदे विद्याधरन के चरित माफिक रहे।

ऐन इहे ऊ बखत रहे जब परम किरपापात्र बिदूषक पुष्पदंत शिव से मिले आइल रहन बाकी दुआरी के अगवासा नन्दी से बाधित भ गइलें।'अकारन हमराअस नगीची अदिमी के मनाही!' एह बात से उपजल कौतुहल के अधिकइले पुष्पदंत आपन जोगबल से भीतर चहुँप गइले आ शिवजी के मुँहें सात विद्याधरन के सारा 'वृतांत' सुन लिहले। 'वृतांत' अतिना रोचक रहे कि उनुका बर्दास ना भइल। ऊ आपन धनिया आ पार्वती के सलेहर जया से कथा साझा करे से खुद के रोक ना पवले। मेहरारून के पेट में कवनों बात कबो पचल भला? जया के मुँह से ससर के ऊ वृतांत पार्वती का लगे जा चहुँपल। आखिर वृतांत के गुन सुभाव इहे त ह, गोल–गोल घुमल, पसरल, एकदम से एक घेरा का शक्ल में, हेह मुँह से होह मुँहे। कब बकता सुननिहार बन जइहें, पतो ना चली, एक मुँह सहस्सर कान, सहस्सर मुँह अनगिनत कान, घेरा ऊपर घेरा।

पार्वती के सहसा भरोसा ना भइल बाकी बात सामने रहे। ऊ शिवजी प अगियाबैताल भ गइल रही, "तू कुच्छो अजगुत, अनसुनल ना कहलऽ। एह कथा के त जया अगते से जानत रही।"

शिवजी ठहरनीं अगमजानी, ध्यानबिधि से हकीकत उजागर भ गइल। तमतमाइल पार्वती पुष्पदंत के बोलवली। अपराधबोध के मारल पुष्पदंत आ उनकर गुश्ताखी बदे छिमा के पैरवी करत माल्यवान, दुनहुन के मानुस जोनि में जाएके सराप भेंटल। बाद में दयावश सराप निवारन के उपाय ई भइल कि कुबेर के सरापल सुप्रतीक जवन बिन्हाँरन में काणभूति पिचास होके रहत बाड़े, उनका से भेंट होखी त सब इयाद आ जाई फिर पुष्पदंत इहे कथा उनका के सुनइहें आ माल्यवान तेकरा के फैलइहें त सराप के अंत हो जाई। ई सराप के रीतियोअजीब बा। कथक्कड़ी के दुनिया में एह रीति के प्रयोग अतिना भइल, अतिना भइल कि का कहल जाव? एह रीति के फैलाव भूत से लेके बर्तमान ले भइल आ अगहूँ होखी एह बात के थाती, चाहे केहू सनद लिखा ले।

लागता कि शिवजी कथा के खोजिया रहनीं। उनकर कहे के शैली में अइसन कुछ बिसेखी रहे कि सुननिहार के मुँह बवा जाय। ओकरा जरिको अहसास ना हो पावे कि बकता कब सुननिहार जवरे खुदहूँ कथा के पात्र भ गइल। कथा में कनछी–प –कनछी फूटल जाय आ तेकर तंतु आपुस में अतिना अझुराइल होखे कि ना त तेकर ओर के पता चले ना छोर के, ना एहू बात के कि के कब कहल, के कब सुनल? एह बात प मगजपच्ची होखे बाकी बर्हमांड के पिंडाकृति अस तेकर आदि–अंत के कवनो सबूत ना मिले।

बहुत दिन बीतल। कहियो गउरा शंकर जी से दूनो गण के कुशल–छेम का बारे में जिज्ञासा कइली। शिवजी का लगे सब सूचना के सँगोर रहे। भेद खुलल कि पुष्पदंत कौशांबी में वररुचि आ माल्यवान कवनों बिख्यात नगर में गुणाढ्य के रूप में जनमले। अब देखल जाव इहे गुणाढ्य सारा कथा प्रपंच के फैलावेवाला हवें। जवन कथवा कथल गइल ह ऊ त अगतहीं से मौजूद रहे। तेकरे एगो बड़ कथक्कड़ शिवजी रहलीं। ऊहों का कहईं से सुनल. हीं होखब। मतलब ई जे ई लोकमन के बात ह, हुँहईं से उपजल आ हुँहईं पसरल।

मानुस–देह में पुष्पदंत बररुचि आ कात्यायन के नाँव से बिख्यात भइले। बररुचि बहुते प्रतिभावान रहन। गहन अध्ययन से सभ विद्या में पारंगत होके ऊ मगध के शासक नन्द के मंत्रीपद तक पहुँचले। एक बेरि खिन्नमन होके ऊ विन्ध्यवासिनी देवी के दरसन करे चल गइलें। ओही राति ऊ एक सपन देखले कि विन्ध्यवासिनी माई उनका के काणभूति से मिले के आज्ञा देत बाड़ी। तेकरा बाद वररुचि बिन्हाँरन चलि गइले।

बिन्हाँरन पानी के कमी वाला रूखर बिरिछन से पूरल सघन बन रहे जहाँ बाघ आ बानर के घना बसेरा रहे। ओही बन में एक बहुत ऊँच आ छतनार बरगद के बिरिछ रहे तहवें सैकड़ों पिचासन से घिरल साल के लमहर गाछ अइसन डीलडौल वाला काणभूति से भेंट भइल। लोकाचार आ परिचे–पाती के बाद दुनहुन में बतकही होखे लागल। फेरु त बात के सिलसिला चल निकलल। बिदजन के बीच संबंध के इहे रीत ह, ना कहे से मन भरे, ना सुने से, ना कहले ओराय, ना सुनले अरुचि होखे। लागे जइसे दूनो जन का मधे कवनो जनमांतर के संबंध बा। ज्ञान–बिज्ञान, धर्म–दर्शन, शिक्षा, इतिहास, बात के दायरा में सभ रहन। कतने ना कथा–प्रसंग, सारा पुरबिल रहस परत–दर–परत खुलत चल गइल। एही बतकही के दरमियान ई कथा उपजल जवन एकवाही दांपत्य प्रेम के नायाब नमूना रहे। ई कथा वररुचि के आपबीती रहे।

आपन मित्र व्याडि आ इन्द्रदत्त का जवरे पाटलिपुत्र में रहत लरिकपन बीत गइल, अध्ययन पूरा हो चुकल रहे। संवत्सर के शुरुआती परिवा रहे। रितु में बदलाव के काल रहे आ सगरे इन्द्रोत्सव के धूम रहे। हमनीं इन्द्रोत्सव के सोभा देखे नगर में निकलनीं जा। उत्सव थल में एक किशोरी का ओरि हमार ध्यान बरबस जाय। उनकर देह के बाँकपन अइसन रहे जइसन कामदेवता के धनुही। इन्द्रदत्त बतवलें कि ई उपवर्ष के बेटी उपकोशा हई। लागल जइसे उपकोशा आपन सलेहरिन से हमरा बारे में उत्सुक बाड़ी। उनकर ललक परगट रहे। उहाँ से जात खनी उनकर भाव. मुद्रा कुछ अइसन रहे जवन हमरा बदे अजाना रहे बाकी पता ना ओमें का रहे जवन मन के तिरले जाय। ऊ चलि गइली बाकी ऊ छन कहीं गहिरे गड़ गइल, सभकुछ एक थिर चितरेखन का तरे। उपकोशा के चेहरा अइसन रहे जइसन पुनवासी के गोल चनरमा, मनभावन आ अलौकिक, आँख नील कुईं अस, बाँह कमलडंडी अस नाजुक आ सुडौल, पुष्ट असतन, मन में तेज खिंचाव उपजा जाय। उपकोशा के शंख अस गरदन आ मूँगा अस ललछहूँ ओठ के लुनाई के असर अइसन रहे कि ओह रात नीके नीन ना आइल। बितली राते आँखो झँपल त अजगुत सपनलोक। सफेद, माखनी बस्त्रधारिनी देवी सुरसती, जवन हमरा भीतर हरपल मौजूद रही, खुद आके कान में कह गइली, "वररुचि, उपकोशा तहार पुरबिल सहगामिनी हई। तहरा से उनकर अटूट अनुराग बा आ तहरा के पति रूप में बरन करे के उनकर दिढ़ निहिचौ बा। चिंता जनि करऽ।"

फजिरे आँखि खुलल त मन में बिसवास उपिलात रहे। कब पाँव उपकोशा के घर का ओरि बढ़ि गइल ई कहाँ बुझाइल? उनकर घर का लगे एगो आम के सघन फेंड़ रहे, हम जा के ओहिजे बइठ रहनीं। कुछ बखत बितले उनकर एगो सखी इशारा–इशारा में जे कुछ कह गइली तेकर मतलब ई रहे कि आग दुतरफा सुलुगल रहे।उपकोशा के हालत के अनुमान से हमार मन संतप्त भ गइल।

उपकोशा के मनोभाव जान के हमरा अजहद खुशी रहे बाकी उनकर बिथा के अनुभव से मन में कलेस उपजल। हम उनकर सखी से कहनीं– "गुरुजन के सहमति आ दान के बेगर हम उनका के स्वेच्छा से स्वीकार कइसे क सकिले? समाज में लांछित होके रहला के बजाय मू गइल नीमन। एसे उपकोशा के माई–बाबूजी एह बात के समुझ लीहींजा त नीक। तू सचमुच में हमनीं के शुभ चाहत बाड़ू त अगुआ होके दुनहुन के रच्छा करऽ।"

सखी मयगर रहली। हमनीं के स्थिति से वाकिफ, ऊ सारा वृतांत उपकोशा के भाई–बाबूजी के जेहन में ले अइली। बुजुर्गजन आपन संतति के बेहतरी के कामना से हरदम भरल रहेले। जदि सब कुछ संगत होखे त कवनो मिथ्याभिमान में ऊ आपन संतान के इच्छा के कुचलल काहे चहिहें। उपकोशा के कुटुंब के स्तर प विचार–विमर्श के दौर चलल आ सारी युति अनुकूल बूझ के ऊ लोग हामी भरल। बिआह के मुहूरत तय भइल। व्याडि जाके कौशांबी से हमार माई–बाबूजी के लिवा लइले आ शुभ तिथि में हमनीं के बिआह संपन्न भइल। हमनीं पाटलिपुत्र में सुख से रहे लगलीं।

उपाध्याय वर्ष के कुनबा में पाणिनी नाँव के एगो जड़ बुद्धि शिष्य रहे। गुरुघर में रह के सेवाकरम करत पाणिनी के खिन्न देख के एकदिन गुरुआनी उनका के अध्ययन आ तप खातिर हिमाले जाए के आज्ञा दीहली। ऊ चलि गइल। उहाँ ऊ कठोर तप आ शिवजी के किरपा से सभ बिद्या में मुख 'नयका व्याकरण' के ज्ञान अरजित क लिहलसि। हिमाले से लवटल त पाणिनी के रंगे–ढंग दोसर रहे। ऊ एक दिन हमरा के शास्त्रार्थ खातिर ललकरलसि। शास्त्रार्थ शुरू भइल। आठवाँ दिन रहे आ अबले पाणिनी हार के कगार प चहुँप गइल रहे। ऐन ओही बखत आकाश से भयंकर मेघ–गरजन अस सुनाइल, लागल जैसे शिव नाराजगी में घन–हुंकार करत होखस। हमरा थथमा लाग गइल। एही आवाज में हमार पढ़ल 'ऐन्द्र व्याकरण' गुम भ गइल। हमनीं मूरुख बन के रहि गइनीं। पाणिनी के जीत के इजहार भ चुकल रहे।

मन छोट भ गइल रहे। अगते खीझ भइल फिर बिखाद आ अंत में बैराग। हम उपकोशा के जानकारी में, घर चलावे भ खर्च हिरण्यगुप्त के देके शिवजी के तपसया के संकल्प से हिमाले का ओरि चल गइनीं।

हमरा गइला का बाद उपकोशा बदे सारी दुनिया झाँय–झाँय भ गइल रहे। केकरा बदे सुख के सरजाम, केकरा बदे सिंगार–पटार? खानपान, राग–रंग सभ अकारथ। देह सुटुक के पातर भ गइल, रंग पीलिया के मरीज अस पियरछहूँ जइसे कि परिबा के खीनकाय चनरमा। कवनों काम में जीउ ना लागे बाकी जिनिगी के गाड़ी चलत रहे एकरो उपाय जरूरी रहे। ऊ हमार तप के सफलता आ कल्यान–कामना से नित गंगा नेहास आ ईस्सर मनावस। एही बिधि अधिकतर दिन खेप जाय, बाद बाकी सास–ससुर के सेवा आ घरकाज में समय गुजरे। चुपके–चुपके रोवे बदे सारी राति आपन रहे। भोरे उठस त अक्सर दुपट्टा के कोर भींजल रहे।

अकसरुआ स्त्री लंपटन के कुदीठ से कब ले बँचली? कुछ अइसने भइल उपकोशा का संगे। बसंत के समय रहे। आम में बौर आ गइल रहे आ कोइलर के कूक सगरी सुनाय। प्रकृति का संगे जीया–जंतु, पाँखी–परेवा सभ प उमंग असवार। बिकार रहित उमंग अदिमी के उन्नत बनावेला जबकि एकर हीन रूप बेकती आ समाज के गरत में गिरावे के औजार तइयार क देला। ओह दिन तिपहरी में उपकोशा गंगा नेहाए जात रहली कि उनुका कुछ अनकुस बुझाइल। कहल जाला कि स्त्री में पीठ पीछे के कुटिल दीठि के महसूस करे के गुन ह। जब ऊ नीके टोह लिहली त बुझाइल कि उनका प राजपुरोहित, नगरपाल आ युवराज के मंत्री तीनों जन के नजर बा। निसंदेह ई मलिन नजर रहीसँ। एकबेरि त भय से उनकर प्रान काँप गइल बाकी ऊ कवनों साधारण औरत ना रहली जे अइसन हालात में बिबेक खो देस। उपकोशा सिर झुकवले घाट का ओरि चल गइली, ऊपर से एकदम सहज जइसे उनुका कुछो ज्ञात ना होखे। नेहाए में जानबूझ के देरो कइली कि बलाय टले। साँझ ढले लागल रहे। निरापद होखे के अनुमान से ऊ डेगरगरे बढ़ल जात रही कि अचके कुमारसचिव राह रोक के ठाड़ भ गइल आ उनका के बलात् रोक लिहलस। निरलजता आ उदंडता से भाव ओकर चेहरा प साफ रहे। ओकर बेहयाई भरल प्रस्ताव प उपकोशा भिर कवनो चारा ना रहे बाकी उनकर बुद्धि तुरत काम क गइल, ऊ अपना के संयत राखत सहज जवाब दीहली– "भले मानुस, तू जवन चाहत बाड़ ऊ अपना जगह ठीक बा। साँच कहीं त हमरो इहे इच्छा बा बाकी हम कुलीन हईं, पति परदेश में बाड़ें। अइसन काहे कइल जाव कि केहू देख ले आ बदनामी होखे। ए से ना तोहार कलेयान होखी ना हमार। त अइसन करऽ कि बसंतोत्सव मेंजब लोग ब्यस्त रहिहें ओही घरी राति के पहिला पहर में हमरा घरे आवऽ।" उपकोशा ओकर पकड़ से छिटक के दूर जा चुकल रही।

कुछ दूरी के अंतराल प राजपुरोहित से ओही परिस्थिति में सामना भइल त उनका राति के तीसरकी पहर मुलाकात के समय मुकर्रर भइल। पुरोहित से छूट के उपकोशा नगर–कोतवाल के फाँस में फँस गइली, फिर उहे बात, समय रात के दुसरकी पहर।

बिधिवश उपकोशा ओकरो चंगुल से बँच गइली। उनकर देह गुस्सा से थर्रथर काँपत रहे। घरे चहुँप के ऊ सेविका लोगन के बोलवली आ आपस में सलाह मशविरा क के आगे के जोजना आ सभके करतब तय भइल। उपकोशा के चेहरा छोभ से लाल रहे, "पति के प्रवास में रहला प लोलुप लंपटन के आँख प चढ़ला के बजाय कुलवंती के मू गइल ठीक।" एतना कहत–कहत उनकर गला भरभरा गइल रहे। ऊ बेरि–बेरि हमार इयाद करस। ओह

राति ऊ निराहारे रहि गइली।

सबेरे उठ के ऊ पूजन आ बाम्हन भोजन के निमित्त कुछ धन लावे आपन दासी के हिरण्यगुप्त बनिया का पास भेजली। ऊ बनिया आइल आ एकांता पाके उपकोशा से बोलल, "तू हमार सेवा करऽ त तहार पति के रखल धन हम तहरा के दे देबि।" उपकोशा के पाँय के नीचे के जमीन घसक गइल। ई सुनके आ समुझ के कि पति के रखल धन के केहू साखी नइखे ऊ क्रोध आ दुख से अधीर भ गइली। ऊ ओह बनिया के बसंतोत्सव के राति के चउथा पहर में आवे के नेंवत दीहली।

एही बीच उपकोशा तेल मिला के हाँडी में रखल ढेर सारा अलकतरा मँगवली आ ओह में कस्तुरी वगैरह सुगंधी मिलवा देली फिर ओही अलकतरा में बोथल कपड़ा के चारिगो कमर पट्टी तैयार करवली। एने एगो बड़हन आ भारी सनूक बनवावल गइल जवना में कुंडी आ सींकड़ लागल रहे। सारी तैयारी हो चुकल रहे।

ऐन बसंतोत्सव के राति के पहिला पहर में कुमारसचिव बनठन के हाजिर भ गइले। उपकोशा के कहनाम हम बिना नहइले–धोअइले तहार परस ना करब। एसे पहिले जा के नहा लऽ। ऊ बेवकूफ मजे से नेहाए प राजी भ गइले। उनका के दासी अन्हार न्हानघर में ले जाके मालिस के बहाने लंगाझारी लिहलीसँ आ गहना–कपड़ा उतार के डाँड़ में लपेटे के उहे अलकतरा में बोथल बिहटी दे दीहलीसँ। घन अन्हार में ओह पापी के समूचे देह में तेल मिलल करिखा पोताइल। एने उनकर आवभगत होत रहे कि दुसरे पहर राति में पुरोहित महाराज के पदार्पण भ गइल। दासी बतइलीसँ कि बररुचि के मित्र राजपुरो. हित आ गइल बाड़े तू हाली छिप जा। घबराहट में कुमारसचिव के ओह कठही सनूक में घुसा के कुंड़ी लगा दीहल गइल। तेकरा बाद उपाय के इहे सिलसिला जारी रहल, राजपुरोहित आ नगर कोतवालो सनूक में ढुका दीहल गइले। अंत में हिरण्यगुप्त के आगवनि भइल रहे,ओह बखत तीनों सज्जन सनूक के घोर अंधरौरव में नरकवास के अभेयास करत परस्पर अंग परस होइला के बावजूद दमी सधले घुड़ुकल रहलन।

उपकोशा दीया बरली आ हिरण्यगुप्त के ओही न्हानघर में ले जा के कहली, "देखऽ हिरण्यगुप्त, हमार पति के दीहल धन सीधेमन लवटा दऽ।"

निपट एकान्त रहे आ बनियाराम लोलुप आवेश में काँपत रहलें। ऊ थरथरात बाकी साफ मद्धिम आवाज में आपन कामना के जादे सोपट करे के खयाल से चेहरा प कुटिल मुसुकी लावत कहि गइले, "हम कहले रहीं नु, तहार पति के धन, जवन हमरा भिर बा, ऊ त जरूरे लवटाइब बाकी... ।"

उपकोशा सनूक का ओरि देखली आ हाथ जोरि के कहि गइली, "हे देवता लोगिन, रउआ सभे हिरण्यगुप्त के बचन सुननी?"एतना कहत–कहत दीया बुत गइल रहे भा बुता दीहल गइल। सेविका लोग आ गइलआ ओही रीति से हिरण्यगुप्त के पंचकरम चिकित्सा शुरू भ गइल। मर्दन में बड़ी देर भइल, अतिना कि पूरुब में पौ फाटे लागल। दासी लोग बोलल कि रात बीत गइल एसे अब तू जा। आनाकानी प उनुका के गरहत्था (गलहस्त) दे के बहरिया दीहल गइल।

मनभावन नजारा रहे। भर देहे अलकतरा लभेरले आ फाटल करियठ कौपीन पेन्हले बनिया राम के हेह दिव्य बाना प गली के कुक्कुर लट्टू रहनसँ। का कहे के बा कि केने–केने नोंचाइल? बड़ी मोसकिल से घरे चहुँपले।

एने उपकोशा परिवाद लेके राजा नन्द के पास चल गइली। बनिया बोलावल गइले। ऊ एह बात से कि वररुचि के दीहल कवनों धन उनका पास बा, साफे मुकर गइले। उपकोशा कहली, "महाराज, एह बात के साखी हमार गृहदेवता बाड़ें जिनका के हमार पति सनूक में बन क गइल बाड़े। हिरण्यगुप्त देवतन के आगू धन देवे के सकरले बाड़े।"

राजा के आज्ञा से सनूक मंगावल गइल। उपकोशा कहली, "हे देवता लोगन, साँच कहिहऽ, ई बनिया का सकरले रहन? बतावऽ आ घरे जा, ना त हम सनूक में आग लगा देब आ भरल दरबार में एकरा के खोल के तोहन लो के मुँहदेखौनी होई।"

देवता लोग दनादन हामी भरे लागल। पस्त होके बनिया बात सकरले।

राजा के बड़ा अचरज भइल। उनकर आज्ञा से सनूक खोलाइल त उनकर तीनों नालायक अधिकारी सनूक से निकल के भर देहे अलकतरा लभेरले भरल दरबार में धींगड़ अस ठाड़ भ गइले।

मामला से पर्दा हट चुकल रहे। सारा वृतांत जान के राजा लंपट अधिकारियन के धनहरन आ देशनिकाला के दंड दे दीहले। उपकोशा के चरित आ बुद्धिमता से प्रभावित राजा उनका के बहिन के रूप में ईजति दीहले आ ढेर सारा धन दे के बिदा कइले।

एह घटना के चरचा सगरे रहे। परिवारजन के माथ ऊँच भइल, नगरवासिन में अचरज का संगे लंपटन के दुरगत प तोस के भाव रहे। उपकोशा एकवाही प्रेम के जीवंत मूरत में ढल चुकल रही।

काणभूति के आँख थिर रहे आ मुँह तनिका खुलल।

❑❑

❍ पटना, बिहार

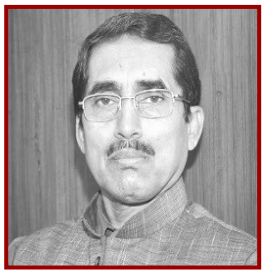

मई में माई चल गइल

डॉ. सुनील कुमार पाठक

'डभकेला मन के सपन,
माई पसवे लोर।
आस सेराइल जा रहल
दुख के ओर न छोर।।'(सुकुपा)

'मातृदिवस' के छव दिन पहिलहीं एह साल 3 मई 2021 के माई विदा ले लिहलस। जब से एह दिवस विशेष के प्रचलन भारतो में खूब बढ़ गइल, माई के फोटो हम फेसबुक पर डालल शुरु कर दिहनीं। एह मौका पर हम माई से जब कहीं कि 'फलनवा तोरा के परनाम लि खले बाड़ें' तब ऊ कहे कि 'तूहूं हमरा ओरी से आसीरबाद लिख दऽ। सब बाबू आ बबुनी लोग हँसी-खुसी से रहो, सभे फलल-फुलाइल रहो।'

अबकी माई नइखे, छव दिन पहिलहीं भगवान जी ओकर टिकस काटि के भेज दिहले। जाये के एकदिन पहिलहीं 'वीडियो कॉल' पर बात कइले रहे। एह कठिन दौर में खूब बच के रहेके ताकीद कइले रहे। फगुआ में गाँवे गइल रहे तऽ घूमि के पटना लवट आवे के कह के गइल रहे। भगवान के ओकर लवटल मंजूर ना रहे। हमनीं के सावधान करके अपने चलि गइल। राते भर में सब खेला हो गइल। बेमार त ऊ चार-पांच साल पहिलहीं से रहे बाकिर बीच-बीच में सम्हरत-उठत सगरी परब-त्योहार में सामिल, परनातियो के गोद में खेलावत ऊ विदा लिहलस। मल. ाल एतने रह गइल कि एह कोरोना-काल में जब पेट के रोग ओकर उपटल त मनमाफिक इलाज के सुविधा ओकरा ना मिल सकल। 'भगवान अपना पर कबो ना नू लीले, कुछ ना कुछ कारन मनई पर मढ़िये दीले।'-ई माइये से सुनले रहनीं हमनीं, ई बात ओकरे संगे चरितार्थ हो गइल।

माई नइखे। माई बहुत पढ़लो-लिखल ना रहे। बाकिर लइकाईं में टो-टाके लिखल गीत के ओकर कांपी हमनीं देखले रहनीं। बहुत बालपने में आपन बिआह के बात बतावे। इहो सुनावे कि जनमते कइसे ऊ अपना बपसी के छाया से वंचित हो गइल। ओकर सरजुग बाबा ओकरा के गोदी में खेलावत पोसलें रहनीं।

छोट कद-काठी के माई एतना मेहनती कि सबेरहीं बाबूजी के आफिस जाये खातिर नास्ता आ दुपहरिया के टिफिन सब बना देव। कवनों बिआह-शादी भा जग-जुप घर में नधाव त 40-50आदमी के तऽ ऊ अकेले बना के खिआ देत रहे। 'दाल-भात आ एगो तरकारी बना दिहनीं हँ बबुआ टाइम पर खाके निकलबऽ लोगिन त काम सँसरी। हलुआई के हाथ के दिन में खात रहिह लोगिन।' -अइसन फुरती आज दुरलभ बा।

बाबूजी पर कबो-कबो खिसिआव तऽ कहे- 'हमरा के तनीं झकझोरीं मत, जिनिगी भर तानिये के चलल ठीक ना हऽ। लइकनो के बात समझे के चाहीं।' कवनो गलतियो पर अपना लइकन के तरफदारी ओकर सुभावे बन गइल रहे। बाकिर अस्थिरहा बताइयो देव कि बबुआ सबके मिलाके चले के चाहीं।

'विद्या धन सबसे बड़ धन हऽ' -ई मंत्र हमनीं माइये से सिखनीं। सभकर सुनेके चाहीं आ सभके मिलाके चले के चाहीं-ई ओकर अइसन सलाह रहे जवना से आदिमी कवनों संकट से उबर जाला।

माई लकीर के फकीर कबो ना रहे। समय के साथे सबकुछ बदलेला, आदिमियो का बदले खातिर तइयार रहे के चाहीं। ई ओकर सबसे बड़ सीख रहे।

माई धार्मिक रहे बाकिर धर्मभीरु अचिको ना। पतोह लोग के पहिलके 'तीज' में समझा देले रहे कि सब बरत–तेवहार नीके देह–जाँगर के चीज। देह में रोग लेले जबरदस्ती ब्रत भूखीं भा भूख के बेराम पड़ जाईं तऽ केतना मंहगा पड़ी। कवनो भगवान ना कहीले कि मरि–मरि के हमार भगती करिहऽ लोगिन। माई कहे कि 'हरितालिका ब्रत' के कथा में जवन कहल बा कि ब्रती अगर आपन उपास भंग करके पानी पी ली तऽ ऊ जोंक हो जाई आ दूध पी ली तऽ साँपिन –ई सब बतबनउवल हऽ। नीमन करम करी केहू त काहे साँपिन हो जाई? आ होइये जाई ते आदिमिये बन के जिनिगी भर पाथल कवनों जरूरी बा का? ऊ देवी–देवता सबके मानत रहे, पूजा–पाठ सब करे बाकिर कहे कि जिनिगी के हर चीज तऽ अपना खुसिये खातिर नू आदमी करेला, फेर देह गलाके देह के सांसत में डालके घर भर के पेरल कवन बढ़िया चीज हऽ? जिनिगी जीये के ओकर आपन ढंग रहे, आपन तरीका आ तर्क रहे। तन्तर–मंतर–जंतर में ओकर तनिको विस्वास ना रहे। ओकरे गुरुमंत्र रहे कि ना बाबूजी ना हमनीं कवनों भाई के अँगुरी में आज ले गरह–नछत्तर के कवनों अँगुठी ना पड़ल। ऊ कहे कि ए बाबू आतमबल सबसे जरुरी चीज हऽ। रतन भा पत्थर पेन्हला से तऽ मन में शुरुए में आउरो भय समा जाला। माई खातिर पूजा–पाठ साफ–सूथरा रहे के, एक दोसरा से प्रेम करेके, सहयोग करे के, बढ़िया बचन बोले आ सुने के एगो व्यक्तिगत निष्ठा से जुड़ल भीतरी ज्ञानपरक आ भावात्मक अइसन एगो प्रयास रहे जवना में सभकर कल्यान के कामना समाइल रहेला।

माई रहित तऽ आज फेर कहितीं– 'आज मदर्स डे हऽ रे माई।' माई धीरे से हँस दीत आ कहित– 'त जा मिठ. ाई ले आके खा लऽ आ लइकनो के खिआ दऽ।' मिठाई हमरा से मंगाके लइकन के खियावे वाली इया एह साल नइखी रह गइल। हफ्ता भर पहिलहीं भगवान जी उनके अप. ना सरन में बोला लेले बाड़ें, एह से लड़िकन के मुँह अबकी लटकले रह गइल बा।

माई बहुत गुनी आ कलाकारो ना रहे बाकिर काम लायेक सगरी विद्या ओकरा लगे रहे। सिलाई मशीन पर कपड़ा के सिआई तऽ ऊ ना जाने बाकिर फाटल साड़ी के लेवा–लुगरी सी के खटिया नंगा ना रहे देत रहे। सब बिधि–बेवहार आ परब–तेवहार के गीत ओकरा इयाद रहे। ऊ चाहत रहे कि संझा–पराती आ बिआह–तिलक के सगरी पुरनका गीत पतोह लोग ओकरा से सीख के रट जाव लोग भा लिख के रख लेव लोग। बाकिर ऊ सगरी ज्ञान ओकरा साथहीं विदा ले लिहलन सँ।

माई जाँत चला लेव, ओखर में नवका ध ाान के चिउरा कूट लेव, अदौरी–तिलौरी पार लेव, किसिम–किसिम के अचार घइला के घइला डाल लेव, दउरी–मोना बीन लेव, तीन दिन में फूल सूइटर बीन के उतार देव, गाँजी के गाँजी कपड़ा फींच के सुखा देव– ई सब काम ऊ पूरा मनगर ढंग से करे।

गैस के चूल्हा जब गाँवे आइयो गइल तबो ऊ लकड़िये आ सरसौटिये पर खाना बनावे। कहे कि गैस ले आसान हमरा मटिया के चूल्हवे बुझात बा। चूल्हा फूँकि–फूँकि खूब धुआँ पियलस आ आँखि आ फेफड़ा गँवा बइठल। कार्डियक हार्टअरेस्ट से पटना में रहला के चलते ऊ बाचियो गइल तऽ बाद में जाँच में ई बात सामने आइल कि ई सी.ओ.पी.डी. के गम्हीराह मरीज हो गइल बिया। चौका–चूहानी से ऊ तब ले हाथ ना जोड़लस जाले ले एकदम अलचार ना हो गइल।

नान्ह कद आ हलुका देह के माई के फरहरी देखि के हित–पाहुन लोग चिहा जाव।

माई आज नइखे बाकिर मिहनत, साहस, संयम, सहयोग आ धीरज के जवन ऊ पाठ पढ़वलस, सादगी, उदार सोच आ परिवार के मान–मरजाद के खेयाल करिके जीवन जीये के जवन ऊ तरीका बतवलस, ऊहे आज कामे आ रहल बा। जे आइल बा ऊ तऽ चलिये नू जाई एक न एक दिन, बाकिर ओकर जीवन जब एगो नजीर बन जाव मनई के आपन जिनिगी सजावे–सुधारे खातिर, तऽ अइसने इंसान बराबर खातिर पूजनीय हो जाला नयकी पीढ़ी खातिर। माई आज वंदनीय हो गइल बिया।

माई ! तू जग के पालनहार के लगे पहुँच गइल बाड़ू। हमनियो के पालत–पोसत रहिहऽ। गलती बतावत सही राह पर चले के प्रेरना देत रहिहऽ। दोसर हमनीं का कहीं? आज 'मातृदिवस' पर तहार पुण्यस्मरण करत आपन सरधा–सुमन हमनीं अर्पित कर रहल बानीं। ❑❑

❍ आफिसर्स फ्लैट, पुनाईचक, पटना, बिहार

बा भोर सकाइल ए लोगे !

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

पल–पल के मउअत देखि–देखि
बा नयन लोराइल ए लोगे !
अनगिन दीयनि सांसनि–लौ के–
उमिरि सिराइल ए लोगे !

जाने कतना तल–तह के फासिल,
बा रूप कोरोना धइ आइल।
चल शहर–शहर के तंग सड़कसे,
गाँव–गलिन में घुसि आइल।
दिन के समेटि सूरूज दुबुके।।
आ भोर सकाइल ए लोगे!

कतना घर खूँटी पऽ टाँगल,
कुरुता–पतलून तँवाइल बा।
मन्दिर–मस्जिद बा सून्न, कि–
कवनो काल–मदारी आइल बा।
दिन में अंकुरल डीभी खाए,
तम – भँइसा आइल ए लोगे!

हर गाँव–नगर चुपुके–छिप के,
बा डाक–टिकट जारी–तारी।
गंगा के रेती में दबि–सरि,
महंके चिरान्ह धोती–सारी।
हरियर वन में अब तेज धार।
आरी चलि आइल ए लोगे!

ना सुनल कहानी निक लागे,
बच्चनि के सूते के पहिले।
कवनो सूई बा चुभा रहलि,
रग–रग में पंखुरी के महिले।

अबहीं तऽ बाती साबुत बा।
तेलो ना ओराइल ए लोगे!!
अनगिन दीयन के सांसन के–
लौ उमिरि सिराइल ए लोगे!

❑❑

❍ स्वाध्याय, राँची (झारखंड)

एह अंक के चित्रकार

पंकज कुमार शर्मा

वाराणसी, उत्तर–प्रदेश के युवा चित्रकार पंकज कुमार शर्मा जी एह अंक के आवरण चित्र बनवले बानी। पंकज जी महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय से सन् 2010 में बी.एफ.ए. तथा 2012 में एम.एफ.ए. कइले बानी। पंकज जी देश के अनेक शहरन में आयोजित राष्ट्रीय आ अंतर्राष्ट्रीय चित्र प्रदर्शनियन में भाग ले चुकल बानी आ अनेक कला–कैंपो में भाग लिहले बानी।

पंकज कुमार शर्मा के ढेर संस्था काओर से दर्जनन पुरस्कार आ सम्मान मिलल बा। एह बेरा ईहाँ के केंद्रीय विद्यालय संगठन में टी.जी.टी. कला शिक्षक के रूप में कार्यरत बानी।

दम–बेदम

डॉ. सुमन सिंह

''का जमाना आ गयल बंगड़ भाय! देखत हउवा। जवने गुरु जी लोगन क पाँव पूजात रहल ह अब पीठ पूजात ह उहो खटिया–मचिया से बान्ह के।''

पिंकू झगडू मास्टर ओरी कनखी ताक के बंगड़ के मटकी मरलन।

बंगड़ आजकल गुमसुम उदास रहे लगल हउवन। एक त कोरोना में कुछ बहुते करीबी लोग अकाल सिधार गइलन अउर दूसरे उनके पाछे बचल उनकर परानी. जन बेपरान हो गइल रहलन। जवन घर–गली हँसी–ठहाका, गारी–फक्कड़ से गुलजार रहे ऊ सुन–सपाट हो गइल रहे। केहू के जीए क आस धरावे, धीरज धरावे आ ढाँढस बन्हावे जाएँ त लगे कि कुल बुद्धिये हेराय गइल ह। बंगड़ के ऐसे पहिले कब्बो एतना गुमसुम ना ग्रसले रहल बाकिर अब जनाय कि बनारस क कुल घाट–महल्ला अपने–अपने बिछुरल अदिमी–जन खातिर उनही के भित्तर बइठ के रोवत –कलपत ह। बंगड़ भरसक कोसिस करें कि पहिलही नियन कवनों बंगड़–बान छोड़के अड़ी क असगुन मार भगावें बाकिर हो न पावे। उनके अब केहू क हँसी–मजाक सह ना जाए।

झगडू मास्टर चुप लगवले चाह सुड़कत रहलन। बंगड़ उनके बगल में जाके बइठ गइलन।

''का बात ह भइया? कवनों दिक्कत परेसानी ह त बतावा... ।''

बंगड़ के अँकवार में झगडू काँपत रहलन। आँखिन में आँस भरल रहे बाकिर जबान पर जइसे ताला जड़ देवल गइल रहे। बिना कुछ बोलले, बिना बंगड़ ओरी तकले झगडू अड़ी से उठ भगलन। उनके दउड़त जात देख पिंकू लिहाड़ी लेवे लगलन–

''देखत हउवा न भइया। कइसे भगवान जी इनकर कुल अकड़ दुइ महिन्ना में तुर के धइ दिहलन।''

पिंकू अबहीं इकुल कहके ठहाका मरहीं वाला रहलन कि बंगड़ उनके पीठ पर जमके कई गो मुक्का धय दिह. लन– ''ससुर के नाती, तुम चुप नहीं रह सकते दो मिनट... आँय। केहू के घरे में गोड़ तूर के बीपत बइठ गया है और तुम हो कि बरबर किए जा रहे हो। झगडू भैया क्या बिगारे हैं बे तुम्हारा कि उनसे बत्तीस हुए बैठे हो...आँय।''

घूँसा क मार खा के पिंकू दर्द से बेहाल रहलन। बंगड़ के खड़ी में बोलत देख के उनके अंदाज हो गइल रहे कि क्रोध अब फफात ह लेकिन भगहूँ क कवनों उपाय ना देखात रहे, एसे उहवें बइठल आपन पीठ सुहरावत भुनभुआए लगलन–

''बंगड़ भइया देखा, गलत अदिमी के गोल में जात हउवा...कह देत हईं। झगडू मास्टर कब से तोहार हीत बन गइलन हो ? अबहीं त तोहार इनके सात पुस्तन से साँप–नेउर वाला बैर रहल। अब का भयल...बड़ा आयल हउवा संग धरे। ओह दिन संगीआँव कहाँ रहे जब इनकर मास्टर बाबू तोहके बेहया से मार–मार के लाल कय देत रहलन... अइसे उनके मारे के चाहत रहे गुरु होके ?...बतावा हमके। भल्ले तोहरो बंगड़ई रहत रहे...त का ? एम्मे तोहार का दोस कि केतनो मेहनत करा बाकिर एग्जामिनरवा ससुर नम्बरवे ना दें। ओह मरकहवा मास्टर क का जात रहे एक्के कलास में तोहरे बार–बार पुनपरबेस से? ओके फीस भरे के रहे? एक त तू खुदे किताब–कापी क दुस्मन अउर एक उ बड़का कसाई। भइया ! हमके त आज ले समझ ना आइल कि के केसे बीस रहल। फिर ई झगडू मास्टर बन गइलन। तोहसे उमिर में बारह बरीस छोट बाकिर दुइयो कउड़ी क तोहर इज्जत ना कइलन। अड़ी–अड़ी तोहके बदनाम करे में एड़ीचोटी क जोर लगाय दिहलन...अउर आज उनके चलते तू हमके...अपने दिन–रात के संगी के मारत हउवा।''

पिंकू रोवे–रोवे हो गइल रहलन बाकिर बंगड़ मनावन ना कइलन। कुछ देर से साह जी इन्हन लोगन क झगड़ा –झंझट देखत रहलन। चाह छानत दार्शनिक अंदाज में कहलन–

''देखा पिंकू बचवा ! कुल्ह करम क भोगदण्ड ईंहवे मिले के ह। जइसन जे करी ओकरे आगे आई बाकिर हमके त झगडू मास्टर आ उनके बाबू जी मे कवनों दोस ना लउके ला। केतनो मरकहा कह ला लोग बाकिर मय मोहल्ला क लइका इनहने लोग के कारण तनी सहूरदार आ पढ़वइया हो गइलन। झगडू क बाबू त सरकारी नोकरी में रहलन बाकिर बेचारु झगडू पराईभेट मास्टरी क के, ट्यूशन क के लइका–बच्चा जियावत रहलन। दू साल में कोरोना के कारण स्कूल –ट्यूशन बंद। बाबू के पेंसन से दस लोगन क परिवार जियत रहल ह। सुनत हईं उहो बेमार चलत हउवन। एलाज में भारी खरचा बइठत ह...एहिकुल चिंता में चौबीसो घंटा बूड़ल रहत होइहन झगडू...।''

साह जी अबहीं एह करुण कथा में कुछ अउरी जोड़े जात रहलन कि पिंकू के ना रह गइल। कहलन–

''झूठ मत बोला साहू। झगडू मास्टर चौबीस घंटा चिंता में डूबल रहतन त गाँजा–हीरोइन के नेसा में उनकर कुटाई होत? काल्ही क केहू उनके बेमरउव्वत खँचले ह। एही से केहू के मुँह ना देखावत हउवन।''

''अरे चुप रहा बचवा। जब कुछ जाने ला ना त केहू पर अच्छरंगो ना लगावे के चाही। बहिन के बियाह में केहू से उधारी ले ले रहलन बेचारु। मूलधन क के कहे अबहीं ले ब्याजो ना भर पइलन। साल भर से सूदखोरवा उनके पाछे पड़ल ह आ काल्ह त उ निर्लज्ज इनके...पूछा मत भइया। कहहुँ लायक ना ह।''

अड़ी पर अवते बंशी चच्चा झगडू मास्टर के दुख क रहस्य उजागर क दिहलन। पिंकू लजाइल मुँह लुकवावे लगल रहलन आ बंगड़ के लगत रहल कि सौ मन क बोझ उनके छाती पर केहू ध देले ह जवने के नीचे दम–बेदम होत ह।

❑❑

❍ वाराणसी, उत्तर–प्रदेश

अबो चेत करऽ

सत्य प्रकाश शुक्ल

नाहीं रोग के जोग भइल तबहू
जब माथ चुअल तै पलानी छवाइल।
जब पाँवे में काँट गड़ल रहिया,
तब बेंचि बखार के जूता किनाइल।।

केहू टोकल ना बढ़ि के कबो उनुके
मारे जीव निरीह कसाई कहाला।
ना बुझाइल कबो जग रीति इहे,
इहें शादी होला इहें पिण्डा पराला।।

कबो राति होखे फेरु दिन होला,
कबो घाम होखे कबो आन्ही आवे।
जिन रोज ही शेर मुआवत फिरे,
कहियो कुकुरा उनही के मुआवे।।

अब कोरोना की रोना के चोना करै।
खइलै कटहर मुंगड़ी कहाँ जाई।
जब राह बोआई बबूर कँटवा,
तब सेव अनार केरा कहाँ पाई।।

अबो चेत करऽ ना अनेत करऽ
कुछु बाँचल खेत ना ढेर चराइल।
ना तऽ 'बाबा' चरी जहिया भरी के।
रोवबऽ पर रोवे के आँखि ना आई।। ❑❑

❍ भठही शुकुल, फाजिलनगर, कुशीनगर (उ.प्र.)

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक

'हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज'

द्वारा वर्ष 2020 के लिए पुरस्कृत

भिखारी ठाकुर भोजपुरी सम्मान

एक लाख रुपये

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

सर्वभाषा ट्रस्ट की ओर से हार्दिक बधाई

www.sarvbhashatrust.com sbhashatrust@gmail.com +91-8178695606

S.R Group

Shri Ram Associates

बुकिंग मात्र 11000 में

पक्की रजि० दाखिल स्टारिज के साथ

K.P Dwivedi (बनारस वाले)

+91-9871614007, 9871668559

FREEHOLD PLOTS 4.9 लाख से शुरू

2 BHK VILLA 16.99 लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS

VILLAS | FARM HOUSE

बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS Network Services

Service AMC

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

से प्रकाशित भोजपुरी के श्रेष्ठ किताब

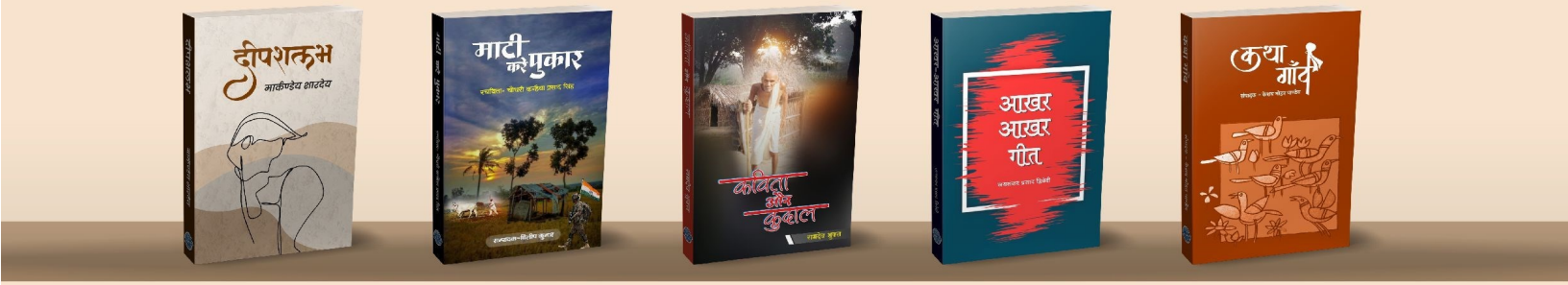

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 600	चार बरिस : 2100	आजीवन : 5100

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299

IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कS के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।